

isha

चाहो!
सब कुछ चाहो

सद्गुरु





isha

चाहो!
सब कुछ चाहो

सद्गुरु



एक योगी, दिव्यदर्शी और युगद्रष्टा



जो विभिन्न धर्मों और पिछली पीढ़ियों की शिक्षा व उपदेशों को अपनी शिक्षा के रूप में दोबारा प्रस्तुत करने के आदी नहीं हैं, वे किसी भी विषय की तह में जाकर उस अनुभव को आत्मसात् करने के बाद ही उसे दूसरों के साथ बाँटने में विश्वास करते हैं।

आध्यात्मिक प्रक्रिया कोई फिलॉसफी नहीं है। यह जीवन को पूर्ण रूप से जीने की एक विधि है। इस तथ्य को समझाने के लिए विश्व के अनेक देशों में जिन्होंने अपनी उपस्थिति और विचारों को दर्ज किया है; विश्व का प्रत्येक मानव असीम आनंद का अनुभव करे, स्वयं को आनंद-स्वरूप पाए, इसी उद्देश्य से कोयंबटूर स्थित वेल्लयंगिरि की तलहटी पर ईशा योग केंद्र की स्थापना की है; अखिल विश्व के लाखों-करोड़ों लोगों द्वारा स्नेहपूर्वक समादृत सद्गुरु—

सद्गुरु जग्गी वासुदेव।

निवेदन

जी वन में कुछ घटनाएँ अप्रत्याशित रूप से घट जाती हैं। 19 जून, 2008 के दिन मुझे तमिलनाडु के कोयंबटूर के समीप दक्षिण कैलास के नाम से विख्यात वेल्लयंगिरि की तलहटी पर बसे सुरङ्गय आश्रम—ईशा योग केंद्र—के दर्शन का रोमांचक अनुभव मिला। उसी का जिक्र कर रहा हूँ। वह एक ऐसा अनुभव था, जैसे जिंदगी की भूल-भुलैया में भटक रहे किसी राहगीर को अचानक बाहर निकलने का रास्ता मिल गया हो।

असल में कोयंबटूर गया था हाल ही में तबादले पर जाकर वहाँ बसी अपनी बेटी उमा सोमस्कंदन से मिलने, लेकिन एकाएक प्रोग्राम बन गया लगभग 30 कि.मी. की दूरी पर स्थित वेल्लयंगिरि की यात्रा का। काफी समय से दिल्ली में स्थायी रूप से रहने की वजह से न तो आश्रम के बारे में कोई जानकारी थी, न मैंने सद्गुरु जग्गी वासुदेवजी का नाम सुना था। इसलिए गाड़ी में जाते वक्त मैंने लेश मात्र भी कल्पना नहीं की थी कि इस यात्रा के फलस्वरूप मेरे जीवन में एक नया मोड़ आने वाला है। मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि ईशा योग केंद्र का वह तोरण-द्वार आंतरिक आनंद नगरी का प्रवेश-द्वार होगा।

आश्रम के परिसर में विभिन्न देशों के जिज्ञासु यात्री मिले। जाति, धर्म, देश और भाषा-भेदों से रहित वह जन-मंडली एक लघु विश्व की प्रतीति दे रही थी तो निर्झरों और स्रोतों के स्वच्छ जल से बना तीर्थकुंड मानसरोवर का प्रतीक था। तीर्थकुंड में स्नान के बाद सभी साधक सच्चे अर्थ में एक तीर्थयात्री बन जाते हैं और परिक्रमा करते हुए ध्यानलिंग मंदिर के प्रवेश-द्वार पर बने सर्वधर्म समभाव स्तंभ के दर्शन करते हुए सत, रज और तम की प्रतीक तीन सीढ़ियाँ चढ़कर अंदर प्रवेश करते हैं। प्रवेश करते ही बाईं ओर योग के आदि प्रवर्तक महर्षि पतंजलि की ग्यारह फीट के आकार में आधा सर्प एवं आधा मानवाकार भव्य प्रतिमा; सामने वृक्षाकार में वनश्री विलस रही हैं। आगे भिखारियों पर सिद्ध योगियों की भव्य मूर्तियाँ खुदी हुई हैं।

सत्तर फीट के व्यास और तैंतीस फीट की ऊँचाई में गुहाकार में निर्मित गर्भगृह के अंदर ध्यानलिंग स्थापित है, जो पौने चौदह फीट की लंबाई में भव्य दिखता है। लिंग-शरीर पर सात चक्रों के प्रतीक ताँबे के सात वलय सुशोभित हैं और लिंग के अंदर पारे से पूरित एक ताम्र नली है। एक के ऊपर एक यों सात सर्प वलयों से बना है लिंग का गौरी पीठ। कहते हैं, ये सातों सर्प वलय सात चक्रों की ऊर्जा से परिपूरित हैं और उनके स्पंदनों को विकीर्ण करते हैं।

ध्यानलिंग मंदिर इस अर्थ में विश्व का अनोखा व निराला मंदिर है कि यहाँ पूजा-अर्चना या भोग-आरती का कोई विधान नहीं है, न इनकी आवश्यकता है। सद्गुरु ने ध्यान-लिंग की स्थापना इस उद्देश्य से की है कि यह ऊर्जा केंद्र युग-युगों तक मानव के अज्ञान-अंधकार को दूर करके आत्म-साक्षात्कार और आत्मोद्धार करनेवाले गुरु के रूप में काम करे। ध्यानलिंग के चारों ओर 28 ध्यान-गुहाएँ बनी हैं। इनके अंदर चटाइयाँ बिछी हैं, जिन पर बैठकर कुछ मिनट तक आँखें बंद कर ध्यान करनेवाले साधकों को अभूतपूर्व शांति और आनंद मिलता है।

ध्यान के बाद बाहर आए तो अंतर्मन में सुखमय शीतल शांति व्याप्त थी। बाहर आते ही मंद-मंद वर्षा की हलकी-हलकी फुहार मानो अंबर से मंगल अक्षत बरस रहे हों। तन-मन शीतल होने से ऐसी अनुभूति हुई, जैसे जीवन धन्य बन गया हो।

दिल्ली लौटने के दो-ढाई महीने बाद ईशा योग केंद्र में पत्र-माध्यमों के साथ संपर्क का कार्य देखनेवाले श्री बालचंद्रन से संदेश मिला कि वे दिल्ली आ रहे हैं और किसी खास प्रयोजन से मुझसे मिलना चाहते हैं। एक संध्या के समय करोलबाग में स्थित 'वड़क्कु वासल' पत्रिका कार्यालय में मैं उनसे मिलने गया। बालचंद्रनजी के

साथ स्वामी उल्लास और भाई कुमार गोविंद भी थे। तीनों ने यह इच्छा व्यक्त की कि यदि मैं सद्गुरु के प्रवचनों तथा साधकों के साथ उनके संवादों को हिंदी में प्रस्तुत करूँ तो अच्छा रहेगा। मेरे लिए इससे ज्यादा आनंद की बात क्या हो सकती थी! यह मेरा अहोभाग्य है कि ईशा योग केंद्र ने मुझे इस कार्य के लिए योग्य समझा।

इसके बाद दिसंबर 2008 में नई दिल्ली के मॉडर्न स्कूल में ईशा योग केंद्र द्वारा आयोजित तीन दिवसीय योग कक्षा में सद्गुरु के साक्षात् दर्शनों का तथा उनके प्रवचन सुनने का सौभाग्य मिला। साधकों ने उन तीन दिनों में सद्गुरु के कई रूपों से साक्षात्कार किया—आत्मीय मित्र, पहुँचे हुए योगी और आदर्श मार्गदर्शक। वहाँ पर स्नेह और अनुग्रह की जो गंगा प्रवाहित हुई, साधकों ने उसमें भरपूर स्नान किया। इस सत्संग के फलस्वरूप हमारे अंदर अद्भुत रसवाद घटित हुआ। मन के अनेक बंद कपाट खुल गए। सह-मानवों के साथ मैत्री और उन पर विश्वास पनप उठा। शांति और आनंद हमारे मित्र बन गए। जीवन का नया अर्थ स्फुरित हुआ। सद्गुरु की वाणी से हमारे अंदर यह बोधोदय हुआ कि हम इस जगत् में केवल रहने के लिए नहीं आए हैं, बल्कि जीवन को सार्थक रूप से जीने के लिए आए हैं।

अपने प्रत्येक काम को इच्छापूर्वक और पूरी लगन के साथ करना सीखने के बाद जीवन से दुःख-दर्द विदा होने लगे। इससे पहले जो काम भारी और जटिल लगते थे, वे एकदम सरलतापूर्वक संपन्न होने लगे।

सद्गुरु के ये शब्द हमारे कानों में अब भी गूँज रहे हैं—“चाहो! सबकुछ चाहो। बड़ी-से-बड़ी इच्छाएँ पालिए। इच्छाओं को, अपने सपनों को साकार करने के लिए यह जरूरी है कि आपका मन दृढ़ता के साथ इसमें सहयोग करे। यदि आप चाहते हैं कि आपका शरीर और मन इच्छानुसार कार्य करें तो आपको उन्हें अपने वश में कर लेना चाहिए। इस तरह तन और मन को अपने वश में लाने की विद्या ही योग कहलाती है।”

विश्व के अनेक देशों के लाखों लोगों ने प्रेम और विश्वासपूर्वक इन्हें अपने सद्गुरु के रूप में स्वीकार किया है तो इसका कारण यही है कि सद्गुरु किसी भी विशिष्ट धर्म और संस्कृति से अपने को संबद्ध नहीं मानते। हर मानव में छिपी मानवता की महानता में इन्हें अपार विश्वास है। सद्गुरु की वाणी और ईशा योग में जो अद्भुत शक्ति है, उसके फलस्वरूप देश-विदेश के कारागारों में बंद घोर अपराधियों के हृदय भी मोम की तरह पिघल जाते हैं।

तमिल के अत्यंत लोकप्रिय साप्ताहिक ‘आनंद विकटन’ में एक वर्ष-पर्यंत धारावाहिक रूप से निकलकर फिर पुस्तकाकार प्रकाशित सद्गुरु के वचनामृत अब आपके हाथों में हैं—‘चाहो! सबकुछ चाहो’। ये हैं जीवन की बाधाओं को जीतकर, वांछित मनोरथ प्राप्त करते हुए संपूर्ण जीवन जीने की राह बतानेवाले अनमोल वचन, जीवन में कायाकल्प लानेवाले अमोघ वचन।

—एच. बालसुब्रह्मण्यम

मेरी अनंत इच्छाओं का कारवां

हैं सबकुछ पाने की इच्छा
अहा! यह सरस जीवन, मचलती विकल लहरें,
है किलोल की इच्छा।
हृदय छोर छूतीं उमड़ती अगणित तरंगों
हैं कठोर परिश्रम की इच्छा
गर्दिशों की पतवार, करूँ सात समंदर पार,

इच्छा

झिलमिल झील किनारे सौम्य शांत छाया में सुस्ताने की
निस्सीम गगन में छिटकते चाँद-सितारों को छूने की
नैसर्गिक सौंदर्य व निःस्वार्थ प्रेम में खो जाने की
बस, इतनी ही? नहीं, नहीं, मेरी इच्छाएँ और भी हैं।

इच्छा

शास्त्र-ग्रंथ, संगीत-नृत्य, ज्ञान-मनोविज्ञान जानने की
स्वर्णिम अतीत व सांस्कृतिक विरासत को पहचानने की।
बस, इतनी ही? नहीं, नहीं, मेरी इच्छाएँ और भी हैं।

इस सीमित मनुज आकार में रमे निराकार, है यह मेरी ज्वलित इच्छा
जप-तप, योग-साधना का सतत अभ्यास, जन्म-जन्मांतर करूँ प्रतीक्षा।

मेरी अनंत इच्छाओं का यह कारवां,

ललित स्वप्नों की बारात सजाए चला जा रहा है ...

यह कहाँ जा रहा है?

एक खोजी की वेदना

I

इच्छाओं की बुनियाद

इच्छाओं को त्यागना मूर्खता है!

हि मालय की तलहटी !

लंबा सफर तय करके वह नौजवान बस से उतरा। उसके पास थीं कपड़ों की दो गठरियाँ। पहाड़ पर चढ़ना था। बस अड्डे के पास खड़े खच्चरों में से एक को उसने किराए पर तय कर लिया।

“कहाँ चलना है, साहब?” खच्चरवाले ने पूछा।

“किसी जाने-माने साधु महाराज के आश्रम ले चलो।”

“ठीक, कितने दिन ठहरने का इरादा है?”

“कितने दिन? भैया रे, अब मेरी जिंदगी यहीं कटने वाली है। बीवी-बच्चे, माता-पिता, अच्छा-खासा कारोबार—सबकुछ छोड़-छाड़कर आ गया हूँ, समझे? ये देखो, मैंने यह जो सोने की चेन पहन रखी है गले में, इसे भी उतारकर तुम्हें देने वाला हूँ, हाँ।”

खच्चरवाला अचरज से मुँह बाएँ खड़ा रह गया।

“इतनी छोटी उम्र में यह वैराग्य! ... कैसे संभव हुआ आपसे?”

नौजवान का मस्तक गर्व से उन्नत हो गया।

“हमारे यहाँ एक महापुरुष पधारे थे। उनकी बात मेरे दिल को छू गई। कह रहे थे, इच्छा ही दुःखों का कारण है। इसीलिए मैं सारी इच्छाओं को तिलांजलि देकर घर से निकल पड़ा हूँ।”

“माना कि आपने सबकुछ छोड़-छाड़ दिया है, लेकिन इन गठरियों में कौन सी चीज भरकर लाए हैं?”

“सुना कि इस जगह पर काफी ठंड पड़ती है। कोई चीज लानी हो तो आसपास दुकानें भी नहीं हैं। सो, इन गठरियों में कुछ ऊनी कपड़े ले आया हूँ ठंड से बचने के लिए।”

कंबल तक छोड़ने में असमर्थ होने के बावजूद जिंदगी छोड़कर आने का दावा करनेवाले इस नौजवान की तरह कई लोग यही दंभ भरते हुए घूम रहे हैं कि हमने इच्छाओं को त्याग दिया है।

इच्छा के अभाव में जगत् का अस्तित्व नहीं है। इच्छा के अभाव में यह शरीर नहीं रहेगा, प्राण नहीं रहेंगे।

जगत् ने आपको कभी यह सीख नहीं दी है कि इच्छा मत पालो।

अगर कोई आपको समझाए, ‘इच्छाओं को तजने पर सबकुछ सध जाएगा।’ इससे बड़ी बेवकूफी से भरी दलील और कोई नहीं हो सकती।

आपका मन संन्यास का ढोंग भरेगा—“भई, मैंने तो सबकुछ त्याग करने का फैसला कर लिया है।” मन बड़ा चालाक होता है। झूठी-सच्ची कुछ भी कहकर आपको ठगने की कला में माहिर है। लेकिन शरीर?

जरा अपनी नाक व मुँह बंद कर लें, हवा को रंच मात्र भी अंदर न जाने दें और तमाशा देखते रहिए थोड़ी देर तक।

एक मिनट या दो मिनट तक आपका शरीर सन्न कर लेगा, फिर जीने की इच्छा इतनी प्रबल हो उठेगी कि वह आपके हाथ को मुँह से बरबस हटा देगी। जितना घाटा हुआ, उन सबकी भरपाई करते हुए जोर-जोर से ऑक्सीजन को अंदर खींचती जाएगी।

इच्छाओं का त्याग करने की मन की दलील शरीर के लिए मान्य नहीं होगी, क्योंकि उसे झूठ बोलकर ठगने की कला नहीं आती।

कुल शरीर की क्यों कहें, शरीर के अंदर जो अनगिनत कोशिकाएँ हैं, उनमें से प्रत्येक कोशिका का प्रकार्य इच्छा के बल पर चल रहा है। मेहमान की भाँति भले ही एक रोगाणु अंदर घुस जाए, फिर देखें तमाशा। सभी कोशिकाएँ दलबंदी करते हुए उस पर हमला बोल देंगी, उसे निकालने के बाद ही दम लेंगी।

क्यों? किसलिए?

इसलिए कि ब्रह्मांड ने उसे जीने की इच्छा दे रखी है।

और गहराई से सोचें तो इच्छाओं को तजने की इच्छा भी मूल रूप में एक इच्छा ही तो है।

आपके गाँव में कोई बाबाजी जरूर आए होंगे। उन्होंने यह भी कहा होगा, ‘तुमने धन की लालसा की, यही तुम्हारे दुःख का कारण है, बेटे! तुम्हारा लगाव भगवान् पर हो।’

मान लीजिए कि आपके पास दस करोड़ रुपए हैं। भगवान् पर भरोसा करते हुए अगर आप यह सारा धन गरीबों में बाँट देंगे तो क्या उससे दुनिया में शांति छा जाएगी?

कल सुबह इस देश में गरीबों की संख्या में आपको मिलाकर एक और का इजाफा हो जाएगा, बस।

हाथ में पैसा होने पर वह किस-किस काम आता है, इतना तो आप जानते ही हैं। लेकिन भगवान् से क्या कुछ संभव है और क्या नहीं, इसका अंदाजा या अनुभव आपको नहीं है।

यह नसीहत भी बार-बार दी जाती है—सुख भोगने की इच्छा न करो, स्वर्ग पाने की इच्छा करो; अधिकार चलाने की चाह न करो, शांति की इच्छा करो।

एक बार शंकरन पिल्लै जोर के पीठ-दर्द से पीड़ित हुए। डॉक्टर ने एक्स-रे को उठाकर रेशनी में देखा, “देखिए न, एक्स-रे में आपकी रीढ़ की हड्डी कितनी घिस गई है! ऑपरेशन करना होगा।”

“कितना खर्चा होगा, डॉक्टर साहब?”

“मेरी फीस पच्चीस हजार रुपए। फिर अस्पताल में छह हफ्ते आराम करना होगा।”

शंकरन पिल्लै भौचक्के रह गए। इतनी बड़ी रकम कहाँ से मिलेगी?

योग किसलिए?

जब से पैदा हुए, आपने बार-बार कपड़े बदले, घर बदले, खाना-पीना बदला; लेकिन जिसे आप नहीं बदल सकते और जो अंत समय तक आपके साथ आएगा, वह है आपका शरीर। इसकी देख-रेख सावधानी से करनी होगी, तभी यह आपके सपनों को साकार करने में सहयोग देगा।

इसके बाद नंबर आता है आपके मन का। यह आपकी आज्ञा का पालन किए बगैर स्वेच्छा से अंत-श्रुत खयालों में डूबा रहता है। आपके सपने तभी साकार होंगे, जब मन भी वृद्धता के साथ सहयोग देगा।

यदि आप चाहते हैं कि आपका मन और शरीर आपके इच्छानुसार काम करे तो आपको उन्हें अपने वश में कर लेना होगा। उन्हें वश में लाने के लिए ही ‘योग’ की आवश्यकता है।

“अभी आया, डॉक्टर साहब।” कहते हुए शंकरन पिल्लै हाथ में एक्स-रे चित्र के साथ एक्स-रे वाले के पास भागे।

उससे पूछा, “भाई साहब, क्या आप इस एक्स-रे में अच्छा सा सुधार करके दे सकते हैं, जिससे कि डॉक्टर को पच्चीस रुपए फीस देकर घंटे भर में इलाज से निजात पा लूँ? प्लीज!”

यों एक्स-रे को वांछित रूप से बदलनेवाले बाबाजी लोग ही आपको सलाह देते हैं, ‘इच्छा को एक जगह से दूसरी जगह लगा लो।’

एक और बाबाजी आएँगे। वे आपको अनुमति देंगे, “ठीक है, ठीक है। इच्छाओं को पूर्ण रूप से छोड़ने की आवश्यकता नहीं है, बेटे, थोड़ी सी ... इच्छा भर रख लो, कोई बात नहीं।”

आप भी यह सोचकर खुश हो जाएँगे कि ‘यदि मैं चाहूँ तो और भी इच्छाएँ पाल सकता हूँ। लेकिन मेरे लिए इतनी ही पर्याप्त है।’ अगर आप यही सोचकर इच्छा को कम कर लेंगे तो इसी से आपको तृप्ति मिलेगी, संतोष अनुभव होगा।

लेकिन अगर आप यों सोचेंगे, ‘मुझे वह सब कहाँ मिलने वाला है! इतना ही मिल जाए तो बहुत है।’ इस तरह की दलील देते हुए अपनी इच्छाओं के पंख काट लेंगे तो वह कायरता होगी।

आपके मन में यही संताप होगा, ‘मेरा पड़ोसी जो है, हद दर्जे का लालची है। लेकिन उसे सबकुछ मिल जाता है। मैं तो बहुत थोड़े की इच्छा करता हूँ, मगर वह भी तो मुझे नहीं मिल रहा है।’

इसीलिए मैं कहता हूँ, इच्छा कीजिए, बड़ी-बड़ी इच्छाएँ पालिए। इसका साहस किए बिना अगर आप अपनी इच्छाओं को समेट लेंगे तो अपने जीवन में आप कौन सा बड़ा तीर मारने वाले हैं!

आइए, अपने जीवन-स्तर को—जीवन की दिशा को ही—तय करनेवाली इच्छाओं के बारे में और गहराई से जान लें।



क्या आप खुशी को गिरवी रखना चाहेंगे?

जरा गौर कीजिए, देखिए कि आपके इर्द-गिर्द क्या कुछ हो रहा है। आपके प्रति वात्सल्य के कारण धरती माँ गुरुत्वाकर्षण रूपी स्नेहपाश से आपको अपनी ओर खींचे हुए है।

सूरज से एक निश्चित फासले पर पृथ्वी ने अपना भ्रमण-पथ बना लिया है। इसी पथ पर चलते हुए वह सूरज की परिक्रमा कर रही है। पृथ्वी कहीं इस पथ से फिसल न जाए, ऐसी सावधानी के साथ केंद्र में रहनेवाला सूरज भी बड़े प्रेम से पृथ्वी को अपनी ओर खींचे हुए है।

अगर किसी दिन ग्रहों के प्रति सूरज का लगाव खत्म हो जाए तो क्या होगा? जरा सोचकर देखिए।

समझें? ... हाँ, लगाव न हो तो इस ब्रह्मांड का भी अस्तित्व नहीं रहेगा।

तब, आप ही क्यों अपनी इच्छाओं को सीमित कर रहे हैं? उन्हें क्यों छोटा कर रहे हैं? आपकी कल्पना जिन सरहदों को छूती है, आपकी इच्छा भी वहाँ तक फैलकर बड़ी-से-बड़ी बनी रहे। सितारों को लक्ष्य बनाएँगे, तभी आपका तीर कम-से-कम छत तक पहुँचेगा—‘ओह, इतनी बड़ी इच्छा अनुचित है’, यों सोचकर अगर आप कमान को झुकाते जाएँगे तो तीर केवल आपके पाँव की उँगलियों को नोचकर नीचे गिरेगा।

ध्यान दीजिए, मैं यह नहीं कहता कि आप लालच करें। यही कहता हूँ कि आपकी इच्छा बड़ी-से-बड़ी रहे।

दोनों के बीच में जो अंतर है, उसे समझने का प्रयास कीजिए।

एक बार शंकरन पिल्लै रेलयात्रा कर रहे थे। गाड़ी जिस किसी भी स्टेशन पर रुकती, शंकरन पिल्लै गाड़ी से उतर जाते और प्लेटफॉर्म पर खड़े रहते। जब गाड़ी चल पड़ती, फिर से सवार हो जाते।

छोटे स्टेशन और बड़े स्टेशन का फर्क किए बिना गाड़ी जहाँ दो-दो मिनट भी रुकती, उन स्टेशनों पर भी उतरकर चढ़ते। सामनेवाली सीट पर बैठे यात्री का कौतूहल बढ़ता गया। आखिर वह पूछ ही बैठा—

“श्रीमानजी, आप बड़े थके-माँदे लग रहे हैं। क्या आपका कोई साथी खो गया है, या आपको कोई किताब खरीदनी या पानी की बोतल लेनी है? किसलिए आप यों हर स्टेशन पर उतरने और चढ़ने का कष्ट उठाते हैं?”

शंकरन पिल्लै ने जोर से सिर हिलाया और बोले, “ऐसी कोई बात नहीं है। हाल में मेरी बाई पास सर्जरी हुई है। डॉक्टर ने हिदायत दी है कि लंबी दूरी की यात्रा नहीं करनी है। इसलिए मैं इस यात्रा को छोटी-छोटी यात्राओं के रूप में बदल रहा हूँ।”

अगर आप यह सोचकर कि स्वयं सद्गुरु ने कह दिया है कि सभी चीजों के लिए इच्छा करो, केवल उन शब्दों को लेकर इच्छा करने लग जाएँ तो बात कुछ ऐसी ही होगी जैसे कि शंकरन पिल्लै ने डॉक्टर की हिदायत का मतलब समझा था।

तो सवाल उठता है—इच्छा कौन सी है और लालच किसे कहते हैं?

जो चीज किसी के लिए इच्छा लगती है, वही किसी दूसरे के लिए लालच लगती है।

मोटर बाइक रखनेवाले अगर गाड़ी खरीदना चाहेंगे तो आप उसे ‘इच्छा’ कहेंगे। प्लेटफॉर्म पर लेटा आदमी वही इच्छा करे तो आप उसे लालच कहेंगे, है न?

जब तक आपके अंदर तुलना करके देखने की आदत बनी रहेगी, यह भ्रम भी खत्म नहीं होगा।

ध्यान दीजिए, आपकी इच्छा दरअसल कहाँ अपनी जड़ें जमाए हुए हैं?

नानी जब भी कहानी सुनाती हैं, आपने गौर किया होगा—कोई राजकुमार अपने सभी प्रतिद्वंद्वियों से घमासान युद्ध में उन्हें जीतकर, सात समंदर और सात पहाड़ लाँघकर और भी न जाने क्या-क्या करतब करके, उस खूबसूरत राजकुमारी को जेल से छुड़ाकर ले आता है। फिर वे दोनों खुशी-खुशी बहुत दिनों तक जीते हैं। नानी की हर कहानी का अंत यही होता है।

खुशी से जीने लगे तो समझिए, काम बन गया। फिर कोई संघर्ष नहीं। लेकिन खुशी किसमें है?

अखबार पलटने पर हत्या, डाका, राहजनी, बलात्कार की खबरें ही यों नजर आ रही हैं?

“देश में कई अच्छे काम भी होते ही रहते हैं। उन पर ध्यान देकर उनका प्रचार-प्रसार करने के लिए कोई भी तैयार नहीं है। अद्भुत ढंग से समाज की सेवा करनेवाले हाशिए पर धकेल दिए जाते हैं और बस में जेब काटने वाला फौरन सुखी में आ जाता है। यही इस समाज की विडंबना है।

इतिहास की किताबें भी जिस हद तक लड़ाइयों के बारे में, हिटलरों के बारे में बयान करती हैं, उस हद तक भगवान् बुद्ध और वर्धमान महावीर के बारे में नहीं कहतीं। जो लोग भला देने योग्य हैं, समाज केवल उन्हीं लोगों को याद करता रहता है। जो लोग स्मरणीय होते हैं, उन पर किसी का ध्यान नहीं जाता। जब हम अपनी इस गलत धारणा में परिवर्तन लाएँगे, तभी समाज उन्नत होगा।”

आपने सोचा था, शादी हो जाए तो खुशी मिलेगी। फिर खयाल आया, बच्चे होने पर ही जीवन पूर्ण होगा, खुशी उसी में है। बच्चे भी पैदा हुए। अब फूट-फूटकर रो रहे हैं, ‘इन्हीं बच्चों की वजह से मन की शांति खत्म हो गई है।’

आपने सोचा, एक करोड़ रुपए मिल जाएँ तो खुशी मिलेगी। जब से वह रकम मिल गई, आप इसी डर के मारे जान हथेली पर लिये घूम रहे हैं—हाय, किस क्षण यह कुरसी छिन जाएगी। न जाने कब दरवाजे पर पुलिस दस्तक देगी। न जाने कब कौन सा दुश्मन चाकू भोंक दे।

एक बार शंकरन पिल्लै भी इसी तरह फँस गए थे।

‘फौज में भरती होने पर बहुत सारी रियायतें मिलती हैं’, यह सुनकर शंकरन पिल्लै सैनिक सेवा में लग गए। गलती से उन्हें दो नंबर कम वाले जूते दिए गए। जूतों के अंदर पाँव घुसेड़ते वक्त रोज उनकी उँगलियाँ एक-दूसरे पर सवार हो जातीं। दिन भर जूतों को खोलने का मौका ही नहीं मिलता। उनके पाँव बुरी तरह दुखते। दर्द बरदाश्त से बाहर हो जाता तो शंकरन पिल्लै दुनिया भर को कोसते फिरते।

यह बदहाली देखकर साथी जवान ने एक दिन उनसे पूछा, “अगर तुम इस बात को अधिकारियों के ध्यान में लाओ तो तुम्हें सही नाप के जूते दे देंगे? मेरे दोस्त, काहे को यों रोज-रोज तकलीफ झेलते हो?”

शंकरन पिल्लै के मुँह से कड़े शब्दों में यह जवाब निकला, “तुम भी देख रहे हो न, सुबह उठते ही कवायद करनी होती है, फिर कितने सारे मुश्किल के कामों का ताँता ... हड्डियाँ टूट जाती हैं। क्या इन कामों में किसी से भी खुशी मिलती है? रात को इन जूतों को खोलने पर पता है, किस तरह का आनंद मिल जाता है? फौज में भरती होने के फलस्वरूप मिल रही इस अकेली खुशी को भी गँवाने के लिए कहते हो!”

अपनी छाती पर हाथ रखकर बोलिए, शंकरन पिल्लै की तरह अपनी खुशी को ही गिरवी रखने के बाद आपके मन में भी ऐसी ही तड़प महसूस हो रही है न—‘हाय, इन जूतों से कब निजात मिलेगी?’

‘खुशी से जीना है’, यही लालसा तो आपकी सभी इच्छाओं के मूल में छिपी हुई है?

आप जो माँगते हैं, वह तो मिल जाता है। लेकिन उसे किसलिए माँगा ... वह, केवल वही खुशी नहीं मिलती।

ऐसा क्यों? गलती कहाँ है?



प्रकृति से सीखिए

किसी चौराहे पर कुछ मिनट खड़े होकर वहाँ से गुजरनेवाले लोगों पर गौर कीजिए। ध्यान से देखिए, कितने लोगों के चेहरों पर खुशी नाच रही है। सौ जने निकल गए तो उनमें से केवल चार-पाँच चेहरों पर आपने हँसी देखी होगी। वे लोग नौजवान भी हैं। क्या कारण है, बाकी लोग उदासी में मुँह लटकाए खोए-खोए नजर आए? ऐसा क्यों?

किसलिए बाहर जाकर देखना है? खुद अपने को आईने में देखिए न! क्या आपके चेहरे पर खुशी और प्रसन्नता है? या जबरदस्ती हँसी लानी पड़ती है?

पाँच साल की उम्र में आप बगीचे में तितली के पीछे भाग रहे थे, याद आ रहा है? तितली को छूते हुए उसके रंग आपके हाथ पर झिलमिलाते हुए चिपक गए। उस समय आपको यही अनुभव हो रहा था कि दुनिया में इससे बढ़कर और कोई आनंद है ही नहीं। आपके अंदर से खुशी उमग-उमगकर फूट रही थी, है न?

पाँच साल में आपका कद कितना था? अब आपकी लंबाई कितनी है? आपकी खुशी भी उसी अनुपात में बढ़नी चाहिए थी न?

मासूमियत से भरी उस अबोध वय में आपने खुशी के सिवा और किसी भाव को नहीं जाना था। उसके बाद क्या हुआ? आप पलकर बड़े हुए। खुशी से रहने के लिए कई चीजों को ढूँढ़-ढूँढ़कर इकट्ठा किया। ऊँची पढ़ाई, कंप्यूटर, अपना मकान, मोटर बाइक, गाड़ी, क्रेडिट कार्ड, टेलीविजन, डी.वी.डी., ए.सी., मोबाइल फोन वगैरह-वगैरह। अपनी-अपनी कोशिशों के मुताबिक जाने कितनी सुविधाएँ आप लोगों ने एकत्रित कर लीं? सारे जहाँ को जीतने का दम भरनेवाले शहंशाहों को भी इतनी सारी सुविधाएँ मयस्सर नहीं थीं, पता है आपको?

लेकिन क्या हुआ? खुशियाँ पाने के लिए जिंदगी में इतना सबकुछ ढूँढ़ने के बावजूद आपने सिर्फ खुशी को गँवा दिया। कहाँ गई आपकी खुशियाँ?

पुरुष द्वारा नारी पर हुक्म चलाने के रिवाज को हम क्यों मान्यता देते हैं?

“पुरुष के लिए—कई तरह से—शारीरिक तौर पर, अपनी भावनाओं को बाँटने को, दिल की बातों का आदान-प्रदान करने को—एक नारी का साथ अनिवार्य होता है। वरना उसके अंदर की हैवानियत से नारी जाति का खात्मा कभी का हो गया।

दरअसल पुरुष की व्यक्तिगत रूप से नारी से कोई घृणा नहीं है। लेकिन उसके धर्म और पूर्वजों ने उसे जो सीख दी है, उन्हीं सिद्धांतों के अनुसार नारी के प्रति उसका व्यवहार है।

जब तक पुरुष का नारी को देखने का नजरिया नहीं बदलता, नारी को देह के रूप में देखना छोड़कर उसे एक मानुष प्राणी के रूप में देखने की प्रज्ञा जब तक रहेगी, यह बुराई जारी रहेगी।

यदि नारी पुरुष की जरूरतों से परे जाकर विकास पाएगी, तभी उसे पूरी स्वतंत्रता मिलेगी।”

एक बार मटका भर शराब पीकर शंकरन पिल्लै बस स्टॉप पर खड़े थे। जो बस आई, खचाखच भरी हुई थी। किसी तरह धक्का-मुक्का कर शंकरन पिल्लै बस में चढ़ गए। दसैक लोगों के पाँव रौंदते हुए और चार-पाँच को कुहनी से धकेलते हुए अंदर सरकते गए।

किसी बुढ़िया की पास वाली सीट पर बैठा हुआ एक आदमी खड़ा हो गया। शंकरन पिल्लै लोगों को कुहनी से हटाते हुए उस सीट की ओर लपक पड़े।

लोगों ने उन्हें यही सोचकर रास्ता दिया होगा, शराबी से लफड़ा काहे मोल लें! शंकरन पिल्लै शान से आगे बढ़े और उस सीट पर धड़ाम से बैठे। इसी वेग के साथ बुढ़िया पर गिर पड़े। बुढ़िया की गोद पर रखी फलों की टोकरी लुढ़की और फल चारों ओर बिखर पड़े। गुस्से में आकर बुढ़िया ने पिल्लै को कोसा, “अरे, तू सीधे नरक में जाएगा।”

शंकरन पिल्लै सकपकाकर उठे और चिल्लाने लगे, “रोको भाई, गाड़ी रोको। मुझे गांधी नगर जाना है। मैं गलत बस में चढ़ गया।”

आप में से कई लोगों को शंकरन पिल्लै की तरह होश नहीं रहता कि कहाँ जाना है और किस बस में सवार होना है। आप भी इसी तरह बसों में चढ़ते-उतरते धक्के खाते रहते हैं।

इच्छित वस्तु न मिलने पर यदि आप मुँह लटकाए फिरे, वह भी मूर्खता ही है। लेकिन वांछित वस्तु मिलने के बाद भी खुशी भोगने का गुर जाने बिना किसलिए भटक रहे हैं?

प्रकृति से आपको सीखने के लिए कई सारी बातें हैं।

नारियल के पेड़ को ही लीजिए। आपके बाग में ऊँचा खड़ा यह नारियल का पेड़ गुच्छे-पर-गुच्छे जायकेदार नारियल देता रहता है। दूसरे पेड़ों को काटने पर भी नारियल का पेड़ काटने का आपका मन नहीं करेगा। पानी सींचकर उसकी परवरिश करते हैं। क्या वह आपसे पानी की प्रतीक्षा करते हुए नारियल के गुच्छों को ढोता है?

उसकी जो भी प्रकृति है, सौ फीसदी उसी के मुताबिक काम होता है। उसे जो पानी मिलना होता है, कहीं-न-कहीं से मिल ही जाता है।

प्रकृति—उसके अनुरूप कार्य—फिर उसका फल—यही कुदरत की नियति है। लेकिन आप?

आप सचिन की तरह क्रिकेट खेलना चाहते हैं, ऐश्वर्या राय की खूबसूरती चाहते हैं, बिल गेट्स की तरह धन-कुबेर बन जाने की इच्छा करते हैं, इस तरह का एक बँगला, उस तरह की कार, उनके जैसी सुखमय जिंदगी, इनकी जैसी धाक—आप पहले से ही फल का चुनाव कर लेते हैं; फिर उस लक्ष्य को पाने के लिए काम पर उतर जाते हैं। इस बात की चिंता या परवाह नहीं करते कि वह आपकी प्रकृति के अनुरूप है या नहीं। आप उसे अपनी प्रकृति बनाने की कोशिश करते हैं।

इस तरह दूसरों की देखा-देखी उन्हीं के साँचे में अपनी जिंदगी को ढालने का प्रयत्न करेंगे तो जीवन नरक बन जाएगा। हाँ, अपनी प्रकृति को समझे बिना उलटी दिशा में पतवार चलाना ही सभी समस्याओं का कारण है।

आपकी मूलभूत इच्छा में कोई दोष नहीं है।

लेकिन अपनी प्रकृति क्या है, इसे आप कैसे समझेंगे? सवाल यही है।



खुदगर्जी भी जरूरी है

अगर आप में इच्छा नहीं है तो आप अपनी नजर को इस लेख की अगली पंक्ति पर नहीं ले जा सकते। यही क्यों, इच्छा के अभाव में आप खड़े नहीं हो सकते, न चल सकते हैं न ही खा सकते हैं।

आप मेरी इस बात को काटने की गरज से कुतर्क कर सकते हैं, 'किसने कहा कि मैं इच्छा की वजह से खाता हूँ। मैं तो भूख के कारण खाता हूँ।'

मान लीजिए, आप रिश्तेदार के यहाँ गए हैं। भोजन का वक्त है। भूख भी खूब लगी है। केले का पत्ता बिछाकर आपके सामने स्वादिष्ट भोजन परोसा गया है। भात का पहला निवाला मुँह के पास ले जा रहे हैं। अचानक वे लोग अपशब्दों का प्रयोग करते हुए आपका अपमान कर रहे हैं। क्या ऐसे वक्त में अगला कौर गले के अंदर उतरेगा?

भूख अभी मिटी नहीं, लेकिन भोजन करना संभव नहीं हो रहा है। क्यों?

आपकी खाने की इच्छा खत्म हो गई।

इच्छा से प्रेरित हुए बिना आवश्यकता-पूर्ति के लिए आप जो भी काम करें, उसमें आपको पूरा संतोष नहीं मिलेगा।

प्रसन्न रहना ही आपका मूलभूत स्वभाव है। आनंद ही आपका स्वरूप है। आपने जिन परेशानियों को स्वयं बुलावा दिया है, उन्हीं की वजह से आपका वह आनंद गायब हो जाता है।

प्रसन्नतापूर्वक रहने के लिए पहले आपको खुदगर्ज होना चाहिए, हाँ, स्वार्थी होना चाहिए। खुदगर्जी में कंजूसी बिल्कुल न करें। पूर्ण रूप से स्वार्थी बनें।

एक बार शंकरन पिल्लै के बेटे को तेज बुखार चढ़ गया। डॉक्टर बुलाए गए।

“यह बुखार छूट से फैलनेवाले विषाणुओं से पैदा हुआ है। पता नहीं, आपका बेटा अभी तक न जाने कितने लोगों तक यह बीमारी फैला चुका है। जब तक चंगा नहीं होता, इसे स्कूल नहीं भेजना।” डॉक्टर ने चेतावनी दी। कुछ दिनों तक इलाज जारी रहा।

किसी तरह बुखार थम गया, बेटा स्वस्थ हो गया।

डॉक्टर ने अपना बिल पेश किया।

बिल की रकम देख शंकरन पिल्लै गुस्से से लाल-पीले हो गए।

डॉक्टर ने सफाई दी, “देखिए, मैंने नौ बार आपके घर आकर सुई लगाई है। इंजेक्शन की दवा भी काफी कीमती है।”

शंकरन पिल्लै उबल पड़े। “क्यों डॉक्टर साहब, आप हमारे साथ खिलवाड़ कर रहे हैं? मेरे बेटे ने शहर भर में बीमारी फैलाई, तभी तो आपका बिजनेस भला-चंगा चल रहा है। ऐसे में आप मुझसे कैसे पैसे माँगते हैं? न्याय से आप का फर्ज बनता है कि आप मुझे इनाम दें।”

इसी तरह लोग हर बात को तोड़-मरोड़कर उसमें से अपना फायदा निकालना चाहते हैं; दुनिया भर के ऐश्वर्य को समेटकर अपनी जेब में डाल लेने के लालच में भटकते हैं।

मैं उस तरह के स्वार्थ की बात नहीं करता। मैं जिस स्वार्थ का जिक्र कर रहा हूँ, वह और भी बड़ा है।

आप ऐसे स्वार्थ को त्याग दीजिए, जैसे—यह कमीज मेरी है, यह घर मेरा है। यह सब

समाज-सेवा करने का बढ़िया तरीका कौन सा है?

“कोई औजार सही हालत में रहे, तभी उसका पूर्ण रूप से प्रयोग कर सकते हैं। आपकी भी यही स्थिति है। अपना परिवेश कैसा भी हो, उससे प्रभावित हुए बिना यदि आप अपने भीतर शांति और आनंद से रह सकें, तभी आप दूसरों की सेवा कर सकते हैं।

समाज की देखभाल करने से पहले आप खुद अपना खयाल कीजिए।

अगर आप शांति और आनंद की अनुभूति में रह सकें तो खुद आप समाज के लिए बेहतरीन तोहफा हैं। उसके बाद आप अपनी शक्ति और क्षमता के मुताबिक अपने चारों ओर रहनेवाले लोगों के लिए जो भी करना चाहते हैं, उस काम में प्रेम से लग जाइए।”

क्षुद्र स्वार्थ हैं, छोटे-छोटे स्वार्थ हैं। इनको छोड़कर अपने स्वार्थ का विस्तार कीजिए उसे विराट् बना लीजिए; जैसे—यह देश मेरा है, यह पूरा संसार मेरा है। यों सब को अपना बना लीजिए।

आप दर्जी हों या ऑटोवाले, चाहे डॉक्टर हों या सब्जी बेचनेवाले या फिर कंप्यूटर इंजीनियर, यदि आप अपने मन से स्वीकार कर लेंगे कि यह पूरी दुनिया आपकी अपनी है तो इसमें रहनेवाले सभी लोग आपके स्वजन बन जाएंगे, बंधु-मित्र हो जाएंगे। उसके बाद आप उनके लिए जो भी करेंगे, कैसे करेंगे? वैसे ही न करेंगे जैसे खुद अपने लिए कर रहे होते हैं? उसी लगन के साथ, उसी समर्पण-भाव के साथ करेंगे न? इस तरह प्रेम से करते हुए उस काम का स्तर कैसा रहेगा? बढ़िया रहेगा न? उसके बाद यद्यपि आप अपने भाग के फल को स्वयं मना करेंगे तो भी वह अपने आप आकर आपके पाँवों पर पड़ा रहेगा। है कि नहीं?

हमेशा सौ फीसदी लगन और उत्साह के साथ काम कीजिए। यों सोचे बिना कि उसके फल में ही खुशी रखी है, जो काम कर रहे होते हैं, उसे प्रेम से संपन्न करना सीखिए। काम में पहली बार सफलता नहीं मिली तो यों सोचकर फिर से उसमें लग जाइए कि अपने प्रियकर काम को दुबारा करने का सुअवसर आपको मिला है।

फिर से पूरी लगन के साथ काम कीजिए। प्रत्येक बार आपको खुशी ही मिलेगी। दर्द महसूस नहीं होगा, पीड़ा नहीं रहेगी।

सो चकर देखिए, आपकी क्षमता पूर्ण रूप से किस समय प्रकट होती है? क्या उस वक्त जब आप खुश रहते हैं या उस समय जब आप तनाव में, उदासी में रहते हैं? प्रेम से आनंद के साथ कोई काम करते वक्त कोई कारण नहीं कि आपको उसमें कामयाबी न मिले।

केवल आप खुश रहें, यही पर्याप्त नहीं है। जहाँ आप रहते हैं, आपकी वजह से दूसरे लोग भी खुशी महसूस करें, यह भी जरूरी है। आपके चारों ओर के लोग आपको खुशी से अपनाएँ, यह भी जरूरी है।

जंगल में कोई शेर शान से कदम बढ़ाए चल रहा था। उधर से गुजर रहे खरगोश को उसने झट से पकड़ लिया।

शेर ने पूछा, “अबे, इस जंगल का राजा कौन है?”

खरगोश ने गिड़गिड़ाते हुए जवाब दिया, “इसमें क्या शक है? आप ही हैं!”

शेर ने खरगोश को छोड़कर लपक के एक लोमड़ी को पकड़ लिया। उससे भी यही सवाल पूछा।

लोमड़ी ने काँपते हुए उत्तर दिया, “हुजूर, आपको इसमें शक क्यों हो रहा है? आपके सिवा कौन इस जंगल का राजा हो सकता है?”

उसके बाद रास्ते में जो भी जानवर सामने आए, वे सभी बड़ी विनय के साथ घुटने टेककर भयभीत स्वर में चिल्लाए, “आप ही राजा हैं, राजा आप ही हैं।”

शेर गर्व से झूम उठा। वह और कुछ दूर आगे बढ़ा।

वहाँ पर कोई हाथी शेर की परवाह किए बिना स्वेच्छापूर्वक पेड़ से पत्ते तोड़ रहा था।

शेर उसके सामने जा खड़ा हुआ और गरजने लगा, “अरे मूर्ख, बोल, कौन है इस जंगल का राजा?” हाथी मुड़ा। उसने अपनी सूँड़ में शेर को लपेटकर ऊपर उठाया और जोर से जमीन पर पटक दिया। शेर की रीढ़ की हड्डी टूट गई थी। दर्द से कराहते हुए उसने बड़ी दीनतापूर्वक पूछा, “क्यों भई, मैंने ऐसा क्या पूछ लिया? मुँहजबानी जवाब नहीं दे सकते थे?”

“आगे इस मामले में तुम्हारे मन में कोई असमंजस नहीं रहना चाहिए, इसीलिए।” हाथी ने कहा।

चारों ओर के लोग आपको खुशी से न अपनाएँ तो आपको भी वही अनुभव मिलेगा, जो शेर को मिला था।

इस तरह दूसरा कोई आपको सबक सिखाए, उससे पहले अपने जीवन को खुद मधुर बना लेना सीखिए।

जो भी काम करें, पूरे प्रेम से करें।



समस्याओं का स्वागत करें

आ नंदप्रद समझकर आप जिस किसी भी काम को हाथ में लें, उसके साथ नत्थी होकर आएँगी कुछ चुनौतियाँ—खरीदे गए किसी सामान के साथ फोकट में मिलने वाली चीजों की तरह।

वह चुनौती आपसे कड़ी मेहनत माँग सकती है, जबरदस्त प्रतियोगिता हो सकती है या फिर अप्रतीक्षित बाधाएँ आ खड़ी हो सकती हैं। चाहे कुछ भी आएँ, उन सभी को प्रेम के साथ खुशी से स्वीकार कीजिए।

अगर आपको दरअसल अपने विकास या उन्नति की इच्छा है तो समस्याओं का प्रेम से स्वागत करने का अभ्यास कर लीजिए।

पता है, थके-हारे लोग आम तौर पर अपनी नाकामयाबी के लिए क्या कारण बताते हैं—

“इन दिनों मेरा वक्त ठीक नहीं है। अगर मैं आटा बेचने चलूँ तो जोर की हवा चलती है; नमक बेचने चलूँ तो भारी वर्षा होती है।”

आप चाहें या न चाहें, दुनिया आपके ऊपर समस्याएँ फेंककर तमाशा देखने का मन बना चुकी है। फिर उनका सामना करने से क्यों हिचकते हैं?

मुश्किलें और समस्याएँ वास्तव में अभिशाप नहीं हैं, बल्कि आपको मिले वरदान हैं।

आप सिनेमाघर में बैठकर कोई फिल्म देख रहे हैं। एक के बाद एक सीन आपकी प्रतीक्षा और अनुमान के मुताबिक आ रहे हैं। तब आप क्या करेंगे? फिल्म को चाव से देखते रहेंगे या उठकर बाहर आ जाएँगे?

अप्रतीक्षित ढंग से आनेवाले मोड़ ही जिंदगी को दिलचस्प बना सकते हैं। एक किसान भगवान् से लड़ने चला गया।

“तुम्हें खेती के बारे में क्या मालूम है? जब मन में आता है, बारिश कराते हो। गलत समय पर हवाओं को भेजते हो। तुम्हारी वजह से हम बरबाद हो गए हैं। ऐसे काम किसी किसान को सौंपकर निश्चित रह सकते हैं न?”

भगवान् ने फौरन मान लिया, “ऐसी बात! ठीक है, आइंदा प्रकाश, बारिश, हवा सब तुम्हारे नियंत्रण में रहेंगे।” यह वरदान देकर वे वहाँ से निकल गए।

किसान की खुशी का कोई ठिकाना नहीं। अगला मौसम आया।

किसान ने आज्ञा दी, “वर्षा, बरसो।” पानी बरसा। जब रुकने के लिए कहा, बारिश रुक गई। उसने गीली माटी को जोत डाला। हवा को यथावश्यक गति पर चलवाकर खेत में बीजों को बिखेर दिया। वर्षा, धूप, हवा—सभी ने उसका हुक्म माना। खेत में जहाँ देखो, हरियाली, धान की बालियाँ लहलहा उठीं। खेत देखने में रमणीय लगा।

फसल काटने का समय आया तो किसान ने एक बाली को काटकर उसे खोलकर देखा। अंदर दाना नदारद। अगली और फिर दूसरी, यों एक के बाद एक बालियों को काट कर उन्हें खोलकर देखा। किसी में भी दाना नहीं मिला।

इतने सारे देवताओं के होने के बावजूद, इतने सारे संत-महात्माओं के आने के बावजूद भूख, फाका और बीमारियाँ क्यों सता रही हैं?

“इस देश में भूख और फाकों के लिए जिम्मेदार कौन है? गैर-जिम्मेदाराना ढंग से आबादी किसने बढ़ाई, आपने या भगवान् ने? बेहिसाब बच्चे पैदा करने के बाद बेशर्म होकर क्यों कहते हैं कि ये सब भगवान् की देन है? भगवान् बुद्ध, वर्धमान महावीर जैसे महात्मा ज्ञान देने के लिए आए थे, रोटी देने के लिए नहीं। फिर आपके पास हाथ-पैर किसलिए हैं? आप इनका बुद्धिमानी से उपयोग कर लेंगे, इसी भरोसे के साथ तो भगवान् ने शरीर में हाथ-पैर लगाकर, आपको रच करके धरती पर भेजा है। गलती आपकी ही है।

जब तक आप सुधरेंगे नहीं, किसी भी भगवद्गीता से कोई प्रयोजन नहीं। चाहे कोई भी धर्म आए, वह आपका उद्धार नहीं कर सकता। भगवान् को प्रणाम करते हुए अगर आप आसमान को देखकर चलेंगे तो खुली हुई किसी नाली में जा गिरेंगे। मेहरबानी करके अपनी जिंदगी अपने हाथ में लीजिए, भगवान् को मत सौंपिए।”

“अरे ओ भगवान्!” उसने गुस्से में भरकर भगवान् को बुलाया और पूछा, “मैंने वर्षा, धूप, हवा सभी का सही अनुपात में ही तो प्रयोग किया, फिर भी फसल बेकार हो गई। क्यों?”

भगवान् मुसकराए। बोले, “प्रकृति के तत्त्व जब मेरे संचालन में रहे, हवा जोर से चलती थी। तब धान के छोटे-छोटे पौधे जिस तरह बच्चे माँ की छाती को कसकर पकड़ लेते हैं, वैसे ही धरती के अंदर अपनी जड़ों को कसकर पकड़ लेते। बारिश कम होने पर जड़ों को पानी की तलाश में चारों तरफ भेजते। संघर्ष की स्थिति में ही वनस्पतियाँ अपनी रक्षा करते हुए मजबूती से बढ़ती हैं। तुमने उनके लिए सबकुछ आसान कर दिया था। ऐसे में तुम्हारे पौधों पर सुस्ती छा गई। भले ही वे लहलहाकर समृद्ध हुए, लेकिन उन्हें स्वस्थ दानों को पैदा करना नहीं आया।”

“नहीं चाहिए मुझे तुम्हारी वर्षा और हवा! इन्हें तुम्हीं अपने पास रख लो।” यों कहकर किसान ने फिर से यह काम भगवान् को सौंप दिया।

हाँ, अगर जिंदगी हर तरह से सुविधापूर्ण बन जाए तो उस स्थिति जैसा खालीपन और किसी में नहीं।

जब समस्याएँ आप पर दबाव डालें, तभी आपकी क्षमता बढ़ेगी। चुनौतियाँ ही मनुष्य को पूर्ण बनाती हैं।

अँधेरा नाम से एक समस्या थी, तभी तो आपने बिजली की बत्ती ईजाद की! यात्रा करने में समस्याएँ आई, तभी तो अपने तरह-तरह की सवारियाँ बनाईं! दूरस्थ लोगों से संपर्क करना दूभर हो गया, तभी तो आपने टेलीफोन को रूप दिया!

अगर समस्याएँ ही न रहें तो आप अपने दिमाग की काबिलियत के बारे में क्या जानेंगे?

शंकरन पिल्लै अपना नया मकान बनाना चाहते थे। वास्तुविद् ने तरह-तरह के खाके दिखाए।

“न, यह नहीं ... यह भी नहीं। मेरे मन में जो रूपरेखा है, वह दूसरी तरह की है।” शंकरन पिल्लै हरेक मॉडल को नकारते गए।

वास्तुविद् थक गए। पूछा, “आखिर आपके मन में क्या प्लान है, बताइए न!”

शंकरन पिल्लै ने अपनी जेब से पीतल का एक पुराना हत्था निकालकर दिखाया और कहा, “आपने अभी तक मुझे कोई ऐसा प्लान नहीं दिखाया, जिसमें यह हत्था किवाड़ पर लग जाए।”

समस्याओं का सामना करने का साहस नहीं रहता, लेकिन प्रतीक्षा करते हैं कि जीवन सारी सुविधाओं से संपन्न रहे। ऐसे लोग शंकरन पिल्लै की तरह हाथ में किवाड़ के हत्थे के साथ महल की कामना करते होते हैं।

सभी काम योजना के अनुसार क्यों संपन्न हों? उनमें से किसी चीज में कोई खोट आ जाए तो आने दो। उसका सामना करें, संघर्ष करके उसे ठीक करें। यही तो है न असली कामयाबी।

पहले से ही बेकार की चिंता न करें कि परिणाम अनुकूल रहेगा या नहीं। पूरी लगन के साथ काम कीजिए।

आइंदा चुनौतियाँ आएँ तो उन्हें कभी न कोसिए। प्रेम के साथ सामना कीजिए।



वह क्षण, जब दस्तक देगी कामयाबी

आपकी अभिलाषा कौन सी है? जो भी काम हाथ में लें, उसमें सफलता मिलनी चाहिए, यही न?

पश्चिम के मनोवैज्ञानिक यही सीख देते हैं, 'सफलता मिले', 'सफलता मिले'। इन्हीं शब्दों को बार-बार रटते रहें। आपका प्रत्येक कार्य, हरेक कदम सफलता पर लक्षित रहे।

ऐसे प्रयास से बहुत संभव है कि आपका रक्तचाप बढ़ जाए।

सफलता पर ही ध्यान रखते हुए कड़ी मेहनत करने पर भी मन में 'कामयाबी मिलेगी या नहीं मिलेगी', इस द्वंद्व के चलते तनाव, आशंका, चिंता, मानसिक क्लेश जैसे कई सारे पिशाच आपके ऊपर हावी हो जाएँगे।

जेन दर्शन कहता है, लक्ष्य पर अपनी एक आँख गड़ा देने पर आदमी आधा अंधा हो जाता है। बाकी बची हुई एक आँख से बेचारा किस हद तक काम कर सकता है!

इस तरह आधे-अधूरे ध्यान के साथ काम न कीजिए। इस क्षण में जो काम करना है, उसे दोनों आँखों का प्रयोग करते हुए पूर्ण रूप से संपन्न कीजिए। इससे अपने लक्ष्य को पकड़ने के लिए उचकने की जरूरत नहीं पड़ेगी, बल्कि आप सफलता के लक्ष्य को आसानी से छू सकते हैं।

ठीक-ठीक समझ लें।

आपको ध्यान के साथ मेहनत करनी चाहिए। कड़ी मेहनत करने की जरूरत नहीं है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए जेन में एक दिलचस्प वाक्या मिलता है।

चान सू नाम के एक जेन गुरु रहते थे। तलवारबाजी में उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था। उनके पास एक नया चेला आया। उसने गुरु से पूछा, "क्या आप मुझे इस देश का सर्वश्रेष्ठ वीर बना सकेंगे?"

"क्यों नहीं! दस साल में मैं तुम्हें उस लायक तैयार कर दूँगा।" गुरुजी ने कहा। "ओह, दस साल? पाँच साल में यह क्षमता आनी चाहिए, गुरुदेव! मैं दूसरों की बनिस्बत दुगुनी मेहनत करने को तैयार हूँ।"

चान सू ने कहा, "तब तो बीस साल लगेंगे।"

चेला चकित रह गया, "यदि उतनी मेहनत काफी नहीं हो तो चौगुनी ज्यादा मेहनत करने के लिए तैयार हूँ।"

"ऐसा करोगे तो चालीस साल लग जाएँगे न!" गुरु ने कहा।

हाँ, ज्यों-ज्यों आप अपने को, अपने शरीर को ज्यादा दुःख देंगे, लक्ष्य को पाने में उसी अनुपात में ज्यादा समय लगेगा। चान सू ने उस चेले को यही मर्म समझाया।

कड़ी मेहनत करनेवाले लोग कभी-कभी सफल तो हो जाएँगे, लेकिन वे उसकी खुशी का अनुभव नहीं पा सकते।

विश्व के महान् आविष्कार वैज्ञानिकों के जीवन में उन्हीं क्षणों में घटित हुए हैं, जब वे पूर्ण रूप से मानसिक रूप से आराम की स्थिति में थे।

पेड़ के नीचे निरुद्देश्य बैठे रहने के समय न्यूटन ने सेब को नीचे गिरते देखा। उसी क्षण पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति का रहस्य उनके दिमाग में कौंध गया और एक अद्भुत आविष्कार का जन्म हुआ।

स्नान के टब में लेटकर आराम से नहाते वक्त ही आर्कमिडीज ने तैरने से संबंधित नियमों का आविष्कार किया।

गौर से देखिए। खेल में भी जो टीम मन में तनाव लेकर खेलती है, उसकी हार होती है। खेल का आनंद लेते हुए खेलनेवाले विजयी होते हैं।

सफलता, सफलता का मंत्र रटते हुए जब भी आप स्वयं को दुःख देते रहेंगे तो ऐसे समय आप शरीर और मन दोनों दृष्टियों से कमजोर हो जाएंगे।

सफलता के बारे में चिंता करना छोड़कर मन को शांत रखिए, शरीर अपने आप तेजी से काम करेगा।

कौन अच्छा है और कौन बुरा?

“पहली बात तो है कि वह फैसला देने के लिए आप कौन होते हैं?”

सीमा की रक्षा करनेवाले जवान के रूप में आप हाथ में बंदूक लिये खड़े हैं। दसैक पाकिस्तानी जवानों पर गोली चलाकर उन्हें मार गिराते हैं। आप अच्छे हैं या बुरे?

भारतीय सेना ले जाएगी तो आपको पदक मिलेगा। पाकिस्तानी सेना ले जाएगी तो आपको यातना मिलेगी।

एक ही काम करने पर भी किसी के लिए आप अच्छे हैं और दूसरे के लिए बुरे।

जिसके साथ आप अपनी पहचान बना लेते हैं, उसी के आधार पर तो आप अच्छे-बुरे का निर्णय दे पाते हैं।

प्रकृति कभी किसी की तरफदारी नहीं करती। यह पौधा है। कोई पुजारी पानी दे, तब भी यह फूलेगा; कोई हत्यारा पानी दे, तब भी फूलेगा।

लेकिन आप? जिसके बारे में निर्णय कर लेते हैं कि वह बुरा है, उसके प्रति नफरत पाल लेते हैं। पहले उनको भी अपने में एक के रूप में अपनाने का अभ्यास कीजिए। अपनी संकीर्ण मनःस्थिति में किसी के बारे में फैसला न लिखिए।”

लेकिन आप में से ज्यादातर लोग इसके ठीक विपरीत स्थिति में होते हैं। मन से अस्थिर और चंचल रहते हैं। ऐसे में शरीर की तेजी भी कम हो जाती है।

इसी तरह शंकरन पिल्लै के साथ एक बार एक अजीब घटना हुई।

शाम को घर पहुँचने के बाद कोई काम बिना चूके करना है, इसमें भूल नहीं होनी चाहिए, ऐसा सोचते हुए शंकरन पिल्लै ने रूमाल में गाँठ बाँध ली।

लेकिन घर पहुँचने पर वे उस बात को ही भूल गए, जिसे याद रखने के लिए रूमाल में गाँठ बाँधी गई थी।

शंकरन पिल्लै भारी तनाव में आ गए। दिमाग पर जोर डालकर सोचते रहे। छत पर काफी देर टहलते रहे, याद नहीं आई। माथा ठोक-ठोककर सोचा, कॉपी पर उलटे-सीधे जाने क्या-क्या लिखकर देखा, ऊहूँ ... याद नहीं आई।

उनकी श्रीमतीजी ने सलाह दी, “चुपचाप लेटकर सो जाइए। जो भी बात हो, कल सुबह जरूर याद आ जाएगी। देख लेंगे।”

“न, यह नहीं होने का। कोई अहम बात होगी, जिसे आज ही पूरा करने की जरूरत होगी। उसका पता लगे बिना मैं कैसे सोऊँ?” यों कहते हुए पिल्लै बिस्तर पर करवट लेते रहे।

यह काम था ... या वह ... ? सोचने-विचारने की इसी उधेड़बुन में दिमाग के अंदर लाखों विचार और चिंताएँ कीड़े बनकर उड़ती रहीं। आखिर रात के दो बजे थक-हारकर शंकरन पिल्लै ने रूमाल को दूर फेंक दिया। उसी क्षण झट से याद आ गई।

आज रात को नौ बजे ही सो जाना है, इसी काम की याद दिलाने के लिए रूमाल में गाँठ बाँधी गई थी!

दिमाग पर ज्यादा जोर डालेंगे, उसे तनाव में रखेंगे तो आपके साथ भी वही घटेगा, जो शंकरन पिल्लै पर घटा था।

परिणाम के बारे में चिंता करना छोड़िए। हर बार पूरी लगन के साथ काम कीजिए। सफलता स्वयं आकर आपके दरवाजे पर दस्तक देगी।



जिंदगी आपके मन-माफिक

संसार में दूसरों के साथ आपका रिश्ता कैसा है, यह आपके जीवन का निर्णय करनेवाले घटकों में प्रमुख स्थान रखता है।

यहाँ आपका नाना प्रकार के लोगों से पाला पड़ता है।

एक छोटे से चौकोर कमरे में केवल एक सहयोगी के साथ बैठकर काम करना पड़े तो समस्याओं से निपटना आसान होता है। लेकिन सैकड़ों कर्मचारियों को निभाने की नौबत आने पर आपको कई विचित्र अनुभव मिलेंगे।

बेशक आप प्रमुख व्यक्ति हो सकते हैं, मगर यदि आप चाहते हैं कि सभी कर्मचारी आपको समझें और आपके मन के अनुसार काम करें तो इसमें आपको भारी निराशा ही हाथ लगेगी।

यह स्थिति इसलिए पैदा नहीं हुई कि दूसरे लोग आपको समझ नहीं पाए, बल्कि इसलिए उत्पन्न हुई कि आप दूसरों को समझ नहीं पाए।

कर्मचारियों से ही क्यों, निकट के कई संबंधियों से भी कई बार आपको निराशा मिली होगी।

एक बार किसी महिला ने महीनों तक कोमा की स्थिति में चले गए अपने पति की बड़ी निष्ठा और लगन के साथ सेवा-टहल की।

जब पति को एक दिन होश आया, उसने अपनी पत्नी को अपने पास बुलाया।

“संकट की हर घड़ी में तुमने मेरा साथ दिया है। जब मेरी नौकरी चली गई, तुमने आशाजनक वचन बोलकर मुझे दिलासा दी। फिर मैंने अपना बिजनेस शुरू किया। उसमें नुकसान-दर-नुकसान होने पर तुमने रात-दिन काम करके पैसा कमाया और परिवार चलाया था। मुकदमे में जब हमारे मकान की कुर्की हो गई, तब भी मन

छोटा किए बिना तुम मेरे साथ छोटे घर में रहने के लिए चली आई। आज अस्पताल के इस बिस्तर में भी तुम मेरे साथ रहती हो। पता है, तुम्हें देखते हुए मेरे मन में कौन सा खयाल आता है?” वह धीमी आवाज में बोल रहा था।

पत्नी की आँखों में आनंद के आँसू थे। गद्गद होकर उसने पति के हाथों को पकड़ लिया।

पति ने कहा, “मुझे लगता है, तुम हमेशा मेरे साथ रहती हो, इसी वजह से मेरे ऊपर एक के बाद एक संकट के पहाड़ टूट रहे हैं।”

इस तरह बातों को उलटे दिमाग से गलत ढंग से समझनेवाले लोगों के साथ कौन सा रिश्ता स्थायी रह सकता है?

रिश्तों को कैसे निभाना है? हम उन्हें कैसे निभा रहे हैं?

चाहे कितना ही घनिष्ठ मित्र हो, हमने उसके और अपने बीच एक सीमा रेखा खींच रखी है। दोनों में से कोई भी उसे लाँघे तो विरोध का झंडा उठा देते हैं। कोई एक उदारता पूर्वक झुक जाए, तभी कड़वाहट दूर हो सकती है।

चाहे रिश्तेदार हों, सहकर्मी हों, मित्र हों या पड़ोसी देश के हों, दुनिया में पैदा हुआ कोई भी व्यक्ति हो, उनके पास ऐसे गुण होंगे, जो आपको पसंद हों; ऐसे गुण भी होंगे, जो आपको पसंद न हों।

दोनों तरह के गुणों को समान रूप से स्वीकार करने की परिपक्वता आ जाए तो सारी समस्याएँ खत्म हो जाएँ।

इसके विपरीत, जरूरत पड़ने पर दूसरों पर लाड़-प्यार बरसाने और जरूरत खत्म होने पर उन्हें दुत्कारने का रवैया जब तक रहेगा, अनबन और मन-मुटाव का माहौल बना ही रहेगा। एक बात समझ लें, हमारे चारों ओर के

लोग बहुत ही अच्छे हैं। उनमें कोई ऐब नहीं है। संभव है, एकाध मौकों पर पागलों जैसा व्यवहार हो गया हो। उन्हें तूल देना उचित नहीं है।

आप क्यों ऐसी प्रतीक्षा करते हैं कि वे बदल जाएँ? आप बदलिए न।

जहाँ जिन-जिन से जैसा व्यवहार करना चाहिए, वैसा बरतने के लिए तैयार रहिए। अगले व्यक्ति से निपटने के लिए जो युक्ति कारगर रहेगी, उसका प्रयोग कीजिए।

एक बार शंकरन पिल्लै एक खुली नाली के अंदर गिर पड़े। बड़ी कोशिशों के बावजूद बाहर नहीं निकल पाए। ऊँची आवाज में चिल्लाने लगे, “बचाओ! आग, आग!”

“मैं तो भगवान् को बहुत चाहता हूँ, लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता कि वे इसका खयाल करते भी हैं या नहीं!”

“आपके साथ दिक्कत यही है। परोक्ष में रहनेवाले भगवान् से आप प्रेम करते हैं। अगर वह अगले जून का आपका खाता बाँटने के लिए जा जाएँ, तब तो आपका यह प्रेम भाप की तरह उड़ जाएगा।

आपने भगवान् को अपने पालतू कुत्ते के माफिक समझ रखा है। कुत्ते के समान कुछ-न-कुछ डालते रहते हैं। कुत्ते से केवल इतना ही चाहते हैं कि वह आपकी फेंकी हुई चीज को उठा लाए। लेकिन भगवान् से ‘मुझे यह दो, वह दो’, यों मन में आई सभी चीजों को लाने का आग्रह करते हैं। क्या इसी का नाम प्रेम है?

आपके पड़ोस में जो आदमी रहता है, वह भी भगवान् की सृष्टि ही है। जब वे जिंदा रहते हैं, उन पर घृणा से थूकते हैं। जब वे मर जाते हैं, बड़ी भावुकता के साथ उनकी कब्र पर कविता लिखते हैं। ईश्वर की सृष्टि पर नफरत बरसाकर केवल सृष्टिकर्ता पर प्रेम करने की बात करना उसका अपमान करने जैसा है। ऐसे प्रेम का क्यों वह खयाल करेगा? आपकी हर साँस में, हर काम में प्रेम सना रहे। वही प्रेम स्वतः आपको भगवान् के पास ले जाकर खड़ा करेगा।”

आसपास के लोग घबरा गए। दमकल वालों को बुलवा लिया। उन्होंने शंकरन पिल्लै को बाहर निकाला।

लोग पूछने लगे, “आप तो चिल्ला रहे थे—आग ... आग! कहाँ है आग?”

शंकरन पिल्लै ने पूछा, “अगर मैं नाली, नाली चिल्लाता रहूँ तो आप थोड़े ही आते! इसलिए मैंने आवाज लगाई—आग, आग!”

घर के सभी लोग बदलकर यदि आप जैसे हो जाएँ तो सोचिए क्या होगा? फिर आप किसे डाँटेंगे—‘बेवकूफ कहीं का’। अक्लमंद कहकर किसको दाद देंगे? आधा घंटे भर भी निभा नहीं सकते।

यदि घर में ही यह हाल रहे तो पूरी दुनिया को अपने समान बदलने की कोशिश करना कितनी बड़ी बेवकूफी है!

जिंदगी अपनी विभिन्नताओं के कारण ही दिलचस्प लगती है।

यूँ इंतजार मत कीजिए कि प्रत्येक व्यक्ति आपकी इच्छानुसार अपने को ढाल ले, बल्कि अगले आदमी को उसी रूप में अपनाइए।

ऐसा करने पर चाहे दूसरे लोग आपके मन-माफिक न बदलें, जिंदगी आपके मन-माफिक बन जाएगी।



क्षमता के अनुरूप ऊँचाई

इस समाज में आप किस तरह पलकर बड़े हुए? माता-पिता, शिक्षक, बंधु-मित्र—इन सभी ने आपकी भलाई करने की नीयत से क्या किया था?

वे लोग आसपास के किसी व्यक्ति से तुलना करते हुए आपकी क्षमता को हमेशा कम ही आँका करते थे। क्यों?

उन्होंने यही सोचा होगा कि यदि आप खुद अपने को किसी और से कमतर महसूस करेंगे, तभी आपके अंदर वह प्रेरक शक्ति पैदा होगी, जो आपको कामयाबी की ओर ले जाएगी।

आपकी योग्यताओं और क्षमताओं को उजागर करने के लिए वे इससे अलग कोई मार्ग नहीं जानते थे।

एक चरण में आकर उन लोगों ने यों तुलना करना छोड़ दिया; लेकिन दूसरों से तुलना करते हुए स्वयं अपने को खदेड़ते रहने की आदत से आपको निजात नहीं मिली। इस कारण आप उसी में फँस गए हैं।

एक बार शंकरन पिल्लै अपनी पत्नी से बुरी तरह लड़ पड़े। आखिर गुस्से में घर से निकल गए।

तीन दिन तक इधर-उधर भटकते रहे। चौथे दिन सुबह एक होटल में घुस गए और बैरे को बुलाया।

पिल्लै ने उसे ऑर्डर दिया, “पत्थर जैसी कड़ी ठंडी इडली, स्वादहीन फीका साँबर, पानीदार दूध में कल वाला डिकाक्शन मिलाकर ठंडी कॉफी ले आओ।”

बैरा चकित रह गया, “यह भी कोई ऑर्डर है!”

“दोस्त, मैं भूख मिटाने के लिए यहाँ नहीं आया हूँ। मुझे घर की याद आ गई, इसलिए ...” शंकरन पिल्लै ने सफाई दी।

इसी तरह आप भी पुरानी आदतों को आसानी से छोड़ने में असमर्थ होकर परेशान रहते हैं।

दूसरे किसी व्यक्ति को श्रेष्ठ समझकर आप उसी को अपना लक्ष्य बना लेते हैं, फिर स्वयं को चुनौती देते हैं। उसके बाद लक्ष्य को पाने के लिए रात-दिन एक कर देते हैं।

अपने लक्ष्य-पुरुष से भी ऊँचा पद पाने के लिए संघर्ष करते-करते मंजिल तक पहुँच भी जाते हैं। तब तक दूसरा कोई उससे भी आगे की मंजिल में आपकी खिल्ली उड़ाता-सा खड़ा मिलता है। तब आप अगला चाबुक हाथ में ले लेते हैं।

पता है, यह कैसा है?

एक लचकदार (इलास्टिक) पट्टी को दोनों ओर से खींचकर पकड़ेंगे तो तनाव में आकर

धार्मिक अनुष्ठानों में अशुद्धि का विचार केवल महिलाओं के विषय में किया जाता है, क्यों?

यह उन लोगों की मूर्खता के कारण है, जो इस तथ्य को नहीं जानते कि नर और नारी एक ही प्रजाति के हैं।

आदिम युग में शरीर की ताकत के कारण पुरुष का वर्चस्व अधिक रहा था। फिर भी, वह लगातार गौर करता था कि उसके चिंतन पर स्त्री हावी हो रही है। पुरुष के मन में यह भय घर कर गया कि शारीरिक तौर पर ताकतवर होते हुए भी कहीं मैं स्त्री का दास न बन जाऊँ। राजा ही नहीं, बल्कि धार्मिक गुरु भी भयभीत हो गए कि स्त्री को आगे बढ़ने दिया जाए तो मुमकिन है, वह हुकूमत की बागडोर अपने हाथ में ले ले। इसलिए स्त्री पर हजार बंधन डाले गए। उनमें एक है यह अशुद्धि।

जो लोग यह कह रहे हैं कि स्त्री महीने में एक बार माहवारी के समय अशुद्ध रहा करती है, वे एक बात को भूल जाते हैं। आप जब अपनी माँ के गर्भ में वास कर रहे थे, उन दस महीनों में उसकी मलिनताएँ बाहर नहीं आईं। तब उन्हीं मलिनताओं में ही तो आप क्रमिक रूप से रूपायित हुए थे? आपके शरीर का बिंदु-बिंदु—रक्त, शिराएँ, मांस और हड्डियाँ उसी अशुद्धि या मालिन्य से ही तो बनी होंगी? अगर नारी को अपवित्र करार देते हैं तो उससे पैदा लोग उससे भी ज्यादा अशुद्ध हैं!

उसके दोनों सिरों एक-दूसरे से मिलने के लिए तड़पेंगे। हाथ हटाते ही इलास्टिक पट्टी के दोनों सिरों आपस में टकराएँगे।

फिर?

दोनों सिरों निष्क्रिय होकर पड़े रहेंगे। फिर से उन्हें खींचो, तभी सक्रियता आएगी।

इस तरह बाहरी शक्ति से प्रेरित होकर आप लक्ष्य-स्थान पर पहुँच भी जाएँ, तब भी आगे का गंतव्य जाने बिना वहीं पर निश्चेष्ट खड़े रहेंगे। आगे के लक्ष्य को दिखाकर कोई आपको उकसाए, तभी आप फिर से सक्रिय होंगे।

खींच-खींचकर काम में लगाया गया इलास्टिक आखिर कितने दिन तक टिक पाएगा? एक मुकाम पर आकर वह एकदम ढीला होता है और अपने स्वभाव को खो देता है। उसके बाद हलके से खींचते ही झट से फट जाता है।

जो लोग संकल्प के दृढ़ नहीं होते, तनाव बेतहाशा बढ़ने की वजह से लक्ष्य पर पहुँचने के बजाय अस्पताल के बिस्तर में जा गिरते हैं।

जीवन भर आप क्यों दूसरों द्वारा संचालित होना चाहते हैं?

अगर आप पहाड़ पर चढ़ना चाहते हैं तो अपने अंदर पर्वतारोहण की कला सीखने की इच्छा पालिए और अपने पैरों में पर्याप्त शक्ति संचित कीजिए। ऐसा करना छोड़कर दूसरों को मिसाल बनाते हुए मन को खदेड़ना मात्र काफी होगा। क्या वह आपको पहाड़ के ऊपर ले जाकर खड़ा करेगा?

आप किसी समय बेहतर ढंग से काम कर सकते हैं? क्या उस वक्त, जब आप दूसरों से अपनी तुलना कर रहे होते हैं या तब, जबकि आप जागरूकता से बैठकर कोई योजना बना रहे होते हैं?

शांतिपूर्वक या जागरूकता से काम करना आपकी इच्छा के सामने खड़ा किया जानेवाला गतिरोध नहीं है; आपके विकास के खिलाफ डाला गया प्रतिरोध भी नहीं है। वह ऐसी ताकत है, जो आपको मुक्त करके मनचाही दिशा में स्वतंत्र रूप से काम करने की इजाजत देती है।

इस बात को कतई न भूलें कि आनंद में रहना ही आपकी मूलभूत प्रकृति है। किसी के उकसाने पर भी विचलित हुए बिना शांति से रहिए। जिस काम को आपने चुन लिया है, निष्ठा और जागरूकता के साथ उसमें लगे रहिए। तभी आप पहचान पाएँगे उस आंतरिक शक्ति को, जो आपको विकास की ओर, उन्नति की ओर ले जाने की ताकत रखती है। केवल वही आंतरिक शक्ति आपकी प्रेरक शक्ति बने।

मुमकिन है, आप उस चोटी तक पहुँच न पाएँ, जिसे पहले ही कोई और जीत चुका है। लेकिन आपके अंदर जितनी क्षमता है, उसके अनुरूप ऊँचाई तक तो अवश्य पहुँच गए होंगे। यही आपको वास्तविक आनंद प्रदान करेगा।



क्रोध को मार डालो

को ई पेड़ या पौधा, भौंरा या कीड़ा दूसरों को मारने की साजिश में नहीं लगा रहता। वे अपने अंदर तनाव नहीं पालते। इसलिए वे अपनी प्रकृति के अनुसार पूर्ण रूप से काम करते हैं।

लेकिन सिर्फ मनुष्य अपने सिद्धांतों को दूसरों पर थोपने का प्रयास करता है। जो लोग उससे सहमत नहीं होते, उनके प्रति मनुष्य का संघर्ष शुरू हो जाता है।

जब दूसरे लोग ऐसे काम करते हैं, जो आपकी पसंद के नहीं हैं, तब आप उन्हें सहन नहीं कर पाते।

अपने अधिकार का प्रयोग करते हुए आप उन पर क्रोध करेंगे, उन्हें धमकी देंगे, कभी-कभी कोई सजा भी देंगे। यह आपके और अगले व्यक्ति के बीच में सुलगती बाती बन जाएगी।

आपका गुस्सा किसी चट्टान पर हो सकता है, भगवान् पर हो सकता है, दोस्त पर हो सकता है, गुरु पर भी हो सकता है।

आप यही तो सोचते हैं कि दूसरों के कारण ही आपको गुस्सा आता है? लेकिन सोचिए, क्रोध किसका गुण है? वह कहाँ पैदा होता है? बाहर?

जी नहीं, वह आपके अंदर जड़ जमाए है। उसे स्वयं आप अपने अंदर ले आए हैं।

आपने सोचा था कि क्रोध भी एक शक्ति है। उसके द्वारा कई चीजों को प्राप्त कर सकते हैं। यही सोचकर आपने क्रोध को एक हथियार बना लिया था।

लेकिन इस हथियार का दूसरों पर प्रयोग करते समय वह उन पर जो असर डालता है, उससे ज्यादा असर आप पर ही तो डालता है। जब आप गुस्से में होते हैं,

आपकी अक्ल उलटा-सीधा काम करने लगती है। है न? और उसका नतीजा हमेशा बुरा ही तो निकलता है।

सामने गुलाब का फूल है। उसे देखते ही संभव है, किसी को मतली आए। इसका दोष गुलाब का है या उस व्यक्ति का?

आपके क्रोध का मूल कारण अगला व्यक्ति नहीं, बल्कि आप हैं। यदि आप इस तथ्य का अनुभव कर लें तो आपकी समझ में आ जाएगा कि वह क्रोध कितनी बड़ी मूर्खता थी।

मेरे इस कथन को सुनकर कोई सवाल कर सकता है, 'यदि क्रोध न करें तो गलती करनेवाले कैसे सुधरेंगे?'

शंकरन पिल्लै एक बार हाट गए थे। वहाँ एक खास गधा उनको बड़ा प्यारा लगा।

गधेवाले ने कहा, "जनाब, मेहरबानी करके मार-पीटकर इससे काम न लें। प्यार से समझाएँ तो यह समझ लेता है।"

वाह, स्नेह से वश में आनेवाला गधा है!

शंकरन पिल्लै के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। मुँहमाँगा दाम देकर उसे खरीद लाए।

अगले दिन शंकरन पिल्लै गधे के पास गए। उसे सहलाते हुए बोले, "चलो प्यारे, काम करने चलें?" इस तरह के प्रिय वचन बोलने लगे।

गधा टस-से-मस न हुआ।

शंकरन पिल्लै ने और प्यार बरसाया, लल्लो-चप्पो की बातें कीं, गिड़गिड़ाए, फिर भी गधा अटल रहा।

हारकर वे उस व्यापारी को बुला लाए। उसने एक छड़ी उठाकर तपाक से गधे को मारा। फौरन वह उठकर काम करने के लिए तैयार हो गया।

शंकरन पिल्लै को गुस्सा आ गया।

“जिद्दी गधे पर भी मैंने इतने जोर से कोड़ा नहीं मारा है। यही नहीं, यह गधा प्रेम से समझाने पर बात मान लेगा, ऐसा कहकर तुमने मुझे धोखा दिया है।”

पिल्लै ने उससे पूछा।

“जनाब, अभी भी मैं यही अर्ज कर रहा हूँ। प्यार की बातें बोलने से काम बन जाएगा। लेकिन उससे पहले गधे का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए एकाध चाबुक रसीद करने की जरूरत हो सकती है।” गधे के व्यापारी ने कहा।

“मैं अगर रहम-दया से बरताव करता हूँ तो लोग शुक्रगुजार रहे बिना इसे मेरी कमजोरी के रूप में क्यों देखते हैं?”

“आप बड़े उदार हैं, रहम दिल हैं, यह सोच कहाँ से आती है? दूसरों को भिखारी समझकर उनका कम मूल्यांकन करते समय ही तो आती है?”

किसी के प्रति उदार होने का दावा करते समय आपका यही अहंकार ध्वनित होता है कि मेरे अंदर सख्ती का भाव होते हुए भी मैं उसका प्रयोग नहीं कर रहा हूँ।

जब आप अपनी छाती पीट रहे होते हैं कि मैंने फलाँ को माफ कर दिया तो उससे यही तो मतलब निकलता है कि आपने उसे पहले अपराधी के रूप में देखा है। ‘अगले व्यक्ति को मेरे प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए’, यह प्रतीक्षा मूल रूप में ऐसी घटिया सोच तो नहीं कि आप उन्हें अपने हितों के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं?”

आपके अंदर जो जानवर बैठा है, उसे समय-समय पर रहमदिली, माफी, शुक्रगुजारी आदि लिबास पहनाकर बाहर उसका प्रदर्शन कराते हैं।

इसमें कौन सा बड़प्पन है?

सहजीवी की तुलना में अपने आपको ऊँचा करके देखने का यह रवैया कभी आपको उन्नति नहीं दिलाएगा।

मैं और वह अलग नहीं। दुनिया में जो कुछ हमारे पास है, सभी लोग उसे एक साथ बाँटने के लिए ही यहाँ आए हैं, जब तक यह महासत्य समझ नहीं आता, क्रोध व अहंकार आदि उपर्युक्त गुण आपकी कमजोरियों के रूप में बने रहेंगे।”

दूसरों को रास्ते पर लाने के लिए यों एकाध बार जोर से ठोकना पड़ सकता है। लेकिन उसके लिए क्रोध आवश्यक नहीं है।

आपके अधीन काम करनेवाले कर्मचारी यदि कार्यालय के नियमों के प्रतिकूल चलें तो ऐसे मौकों पर आप चुप नहीं रह सकते। उन पर काररवाई करनी पड़ेगी।

शुरू से ही यदि आप उन पर केवल प्रेम दिखाते आते तो आपके ऊपर उन्हें पूरा भरोसा हो गया होता।

वे समझ जाते कि अनिवार्य कारणों से ही आपको ऐसा एक निर्णय लेना पड़ा है। आपके प्रति उनके आदर-भाव में कमी नहीं होती, मित्रता बरकरार रहती।

लेकिन अगर आप अपना अधिकार साबित करने के वक्रतापूर्ण संतोष के लिए काररवाई करेंगे तो उनके मन में आपके प्रति विरोध का भाव पैदा होगा। फिर वे उस मौके के इंतजार में बैठे रहेंगे, जब उनका हाथ ऊँचा होगा।

दुनिया में जहाँ-जहाँ अधिकार के बल पर शासन चलाने की नीयत हावी रही थी, उन जगहों में बगावतें और क्रांतियाँ इसी तरह फूट पड़ी थीं।

आप ही बताइए, क्या आप उन लोगों को पसंद करते हैं, जो आप पर हुकूमत चलाना चाहते हैं या उन्हें, जो मित्र की भाँति कंधे पर हाथ डालकर आपको अपने आगोश में लेते हैं?

हरेक जगह पर अलग-अलग ढंग से काम करना पड़ सकता है। लेकिन आपकी मूल प्रकृति जो स्नेह है, उससे चूके बिना स्नेह को बनाए रखिए।

तभी किसी को दर्द पहुँचाए बिना आप अपने लक्ष्य को पा सकते हैं।



पूरी लगन के साथ काम कीजिए

कि सी संस्था के एक असिस्टेंट डायरेक्टर मुझसे मिलने आए। उन्होंने बड़ी मायूसी के साथ पूछा, “मेरे अंदर जितनी काबिलियत है, उसका चौथाई अंश भी कंपनी के डायरेक्टर में नहीं है। यह मेरी बदकिस्मती है कि मुझे उनके अधीन काम करना पड़ रहा है। यह बदहाली कब बदलेगी?”

आप में से कई लोगों के मन में अपने बॉस के बारे में कहने के लिए ऐसे ही कुछ विचार होंगे।

जरा सोचकर देखिए, इसका मतलब यही तो निकला कि अगर कोई व्यक्ति आप से ऊँचे पद पर बैठा है तो उसके अंदर आपकी तुलना में कोई-न-कोई गुण या योग्यता है। तभी तो वह वहाँ तक पहुँच गया है। भले ही वह उसकी क्षमता हो सकती है, पैसे की ताकत हो सकती है, धाक या लोकप्रियता हो सकती है, घूस देकर ओहदा पाने की होशियारी भी हो सकती है।

जो भी हो, इतना तो मानना पड़ेगा कि वह गुण आपके अंदर नहीं है। है न?

आपसे ऊँचे ओहदे पर बैठने के एकमात्र कारण से यह जरूरी नहीं है कि उसके सारे काम, सभी निर्णय ठीक ही होंगे।

इस बात की क्या कोई गारंटी है कि उनकी जगह आप बैठे होते तो आप हर काम को सही ढंग से कर दिखाते। नहीं न?

इसी सिलसिले में मुझे एक मजेदार किस्सा याद आ रहा है।

एक बार की बात है, पोप अमेरिका पधारे थे। उनका स्वागत करके शहर में ले जाने के लिए एक बहुत ही शानदार गाड़ी हवाई अड्डे पर तैयार खड़ी थी।

पोप ने अभी तक ऐसी विलासितापूर्ण गाड़ी में यात्रा नहीं की थी। शानदार अंदाज

में खड़ी उस गाड़ी को देखते ही पोप के मन में उसे चलाकर देखने की ललक पैदा हो गई।

ड्राइवर पहले तो हिचका; मगर खुद पोप ऐसी इच्छा जाहिर कर रहे हैं, वह मना नहीं कर पाया।

पोप गाड़ी चलाने लगे। उनके अंग-अंग में खुशी की लहर दौड़ रही थी। शक्तिशाली इंजन और कल-पुरजों से लैस वह गाड़ी सड़क पर पहुँचते ही धड़ाधड़ गति पकड़ने लगी।

हाइवे पर गाड़ी चलाने के लिए निर्धारित गति सीमा से कहीं अधिक तेजी से भाग रही उस गाड़ी को देखते ही पुलिस सतर्क हो गई। पुलिस की गाड़ियाँ उस कार का पीछा करने लगीं।

एक मुकाम पर पहुँचकर पुलिस की गाड़ियों ने पोप द्वारा चलाई जा रही गाड़ी को रोक ही लिया।

जो अफसर पूछताछ करने आया, पोप को देख सहमकर पीछे हट गया। उसने अपने आला अफसर को फोन किया।

“सर, ओवर स्पीड का एक मामला है। लेकिन गाड़ी में जो बैठे हैं, उन्हें बुक करते हुए डर लग रहा है।”

“क्यों? क्या वे केनेडी परिवार के कोई सदस्य हैं?”

“नहीं, सर।”

“तो जॉर्ज बुश की जान-पहचान का कोई है?”

“जी नहीं ... पता नहीं चल रहा है, पीछे की सीट पर बैठे वी.आई.पी. कौन हैं। मगर उन्होंने स्वयं पोप को अपनी गाड़ी का चालक बना रखा है।”

इसी तरह देखिए न, कौन सा व्यक्ति किस पद पर बैठा है, उसी के आधार पर उसकी हैसियत बन जाती है। काबिलियत के बिना संयोग से कोई आदमी ऊँचे पद पर पहुँच जाए तो वह ज्यादा समय तक उस पद पर टिक नहीं पाएगा। इसलिए आप उस बात की परवाह न करें।

मान लीजिए कि आप कोई स्टेनो हैं। ऐसे में क्या आप प्रलाप कर सकते हैं, “देखिए, मेरे बॉस को इतना भी पता नहीं है कि टाइपराइटर पर कौन सा अक्षर कहाँ है। मेरा दुर्भाग्य यह है कि मुझे ऐसे व्यक्ति के अधीन काम करना पड़ रहा है।”

हो सकता है, कोई सुपरवाइजर कारीगरों द्वारा किए जा रहे किसी काम में अपना हुनर

“क्या मृत्यु के बाद भी जीवन है? क्या मृतकों से बात करने के लिए अलग से कोई प्रशिक्षण लेना चाहिए?”

“क्या मुझे अंतहीन शाश्वत जीवन मिलेगा? यही प्रत्याशा इस सवाल के रूप में आपके अंदर से सिर उठा रही है। यदि आप इस तथ्य पर भरोसा करें कि मृत्यु कोई पूर्ण-विराम नहीं है, उसके बाद भी जीवन जारी रहता है, तब आप चैन से रह सकेंगे। यहाँ पर साठ-सत्तर साल गुजारना पड़े तो उसके अंदर ही आदमी जीवन से बाज आ जाता है। ऐसे में मौत के बाद भी जिंदगी जारी रखकर क्यों कष्ट पाना चाहते हैं? अव्वल तो यह है कि जब तक जिंदा रहते हैं, हरेक दिन के अपने जीवन को पूर्ण रूप से जीने की इच्छा कीजिए? जीवन में स्नेह और आनंद अनुभव करना सीखिए। अगले रविवार के बाद क्या करने वाले हैं, आपने इसके बारे में तो कोई योजना नहीं बनाई। ऐसे में मृत्यु के बाद क्या करना है, इसके बारे में क्यों सोच रहे हैं?”

पहले आप इस समय अपने साथ जीनेवाले लोगों के साथ अपना संवाद टूटे बिना उनके प्रति स्नेह से रहिए। उसे छोड़कर मृतकों से सलाह लेकर क्या करने वाले हैं? ‘मैं क्या करूँ, क्या न करूँ’, उनसे यही न पूछना चाहते हैं? अपनी जिम्मेदारियों को मृतकों के कंधों पर डालना बेहद गंभीर नहीं तो क्या है? उन्हें शांति से रहने दीजिए।”

नहीं दिखा सकता। लेकिन अपनी टीम के सभी कारीगरों के हुनर को, उनकी क्षमता को बाहर लाने में उसे महारत हासिल है।

मुमकिन है, आपके कुछ कौशल आपके बॉस में न हों। लेकिन क्या आपके अंदर उनकी तरह सभी कर्मचारियों को सँभालने की क्षमता है?

अगर आपके अंदर वैसी क्षमता है तो आपकी तरक्की को कोई नहीं रोक सकता। भले ही मौजूदा कंपनी में फौरन तरक्की न मिले, किसी और कंपनी का ऊँचा पद आपका इंतजार कर रहा होगा।

इसलिए आपके ऊपर चाहे कोई भी बैठा हो, बड़बड़ाना छोड़ दीजिए। पूरी लगन और क्षमता के साथ काम करते रहिए।

ऐसी एक स्थिति बन जाए कि आपका बॉस आपकी सहायता के बिना काम सँभाल न पाए या आपके बिना कंपनी चल न पाए। फिर हुकूमत की बागडोर आपके हाथ में आकर रहेगी।

अगर कंपनी के प्रबंधन को पता है कि आपके काम करने का ढंग आपके बॉस से बढ़िया किस्म का है तो प्रबंधन क्यों उसे वहाँ रखता? आपको ही न उस जगह पर बिठाता? ऐसा काम करना छोड़कर मन-ही-मन कुढ़ते रहेंगे तो आप पूरी लगन से काम नहीं कर पाएँगे।

यदि आप ऐसी स्थिति पैदा कर दें कि आपके बिना कंपनी नहीं चल सकती तो आपका बॉस आपको तंग करके भगाने की कोशिश क्यों करेगा?

जीवन में जिन लोगों ने प्रगति की है, उनमें से किसी ने दूसरों की शिकायत करने में अपना वक्त बरबाद नहीं किया; बल्कि अपनी पूरी क्षमता के साथ लगन से काम किया और बुलंदियाँ छू गए।

चाहे किसी भी तरह का माहौल हो, हर परिस्थिति में आप पूर्ण रूप से मौजूद रहिए। आपके अंदर जितनी योग्यता है, जैसी क्षमता है, उसके अनुपात में जरूर आप तरक्की पाएँगे। आपकी उन्नति को कोई नहीं रोक सकता।



दिलचस्प लगेगा हरेक मोड़

आपने अपनी कामनाओं को इसी दुविधा के मारे तिलांजलि दे दी कि वे पूरी होंगी या नहीं।

नए उद्यमों में उतरने का साहस न होने की वजह से आपने अनेक सुनहरे मौके खोए हैं।

संगीत व चित्रकला जैसी बेहतरीन ललित कलाओं को सिखानेवाले महाविद्यालय देश में ढूँढ़े भी नहीं मिल रहे हैं।

लेकिन ऐसा लगता है, जल्द ही ऐसी स्थिति आने वाली है कि गली-गली में इंजीनियरिंग कॉलेज खुल जाएँ।

प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में तैयार होनेवाले सारे-के-सारे इंजीनियरों को नौकरी मिलती है या नहीं, इस बात की चिंता किए बिना माँ-बाप किसी-न-किसी तरह अपने बेटे या बेटी को इस विद्या में दीक्षित कराने के लिए तड़पते हैं।

ऐसा क्यों हो रहा है?

एक समय में इंजीनियरिंग की शिक्षा पूरी होते ही नौकरी मिल जाती थी, इसलिए इसी विद्या को दुनिया की सबसे सुरक्षित बाजी मानकर माता-पिता अपने बच्चों को पाँसों की तरह फेंकने लग गए।

भले ही इन लोगों को मनुष्य-शरीर मिला हुआ है, मगर मन के स्तर पर इनका विकास भेड़ों के स्वभाव तक आकर रुक गया है।

हजारों लोग जिस काम को करेंगे, ये भी उसी काम को करेंगे। खुद सोचकर फैसले पर नहीं आएँगे।

रात-दिन इसी की रट लगाते-लगाते माँ-बाप अपने बच्चों के मन को भी भोथरा बना देते हैं।

मैं केवल इंजीनियरिंग विद्या की ओर संकेत नहीं कर रहा हूँ। विषय कोई भी हो, उसे आपने अपनी इच्छा के अनुसार चुन लिया है तो वह स्वागत करने योग्य है। अगर आपने केवल अपनी जीविका के लिए उसका चयन किया हो तो क्या आपने अपनी जिंदगी को बरबाद नहीं किया है?

‘क्या यह विषय मेरे लिए उपयोगी रहेगा? क्या इससे दुनिया का कोई लाभ होगा?’ आदि प्रश्नों पर मन लगाकर चिंतन किए बिना क्या आप भी सबके द्वारा कूदने की उस पहाड़ की चोटी से कूदेंगे? क्या इसी के लिए आप इतनी सीढ़ियाँ चढ़ आए हैं?

यहाँ पर मुझे एक कहानी याद आ रही है।

किसी ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की कि राजा के लिए यह बुरा समय है, मारक योग है।

फौरन राजा ने चारों तरफ चार-चार फीट की चौड़ाई में किले की दीवारें मजबूत कर दीं। ऐसी दीवारें, जिन्हें भारी-से-भारी तोप भी भेद नहीं सकते। किले के चारों ओर खंदक को गहरा करके उसमें पानी भरवा दिया गया।

एकाध खिड़कियों को छोड़कर बाकी सारी खिड़कियाँ और फाटक बंद करवा दिए। केवल एक फाटक खुला था, जिस पर बहुत ही भरोसेमंद सौ सिपाहियों को पहरे पर बिठा दिया। उस फाटक को पार करके राजा कहीं नहीं निकलता था।

एक दिन राजा इत्तेफाक से खिड़की से बाहर देख रहा था। बाहर सड़क पर खड़ा कोई भिखारी राजा को देखकर हँसने लगा। वह लगातार हँस रहा था, हँसते-हँसते लोट-पोट हो रहा था। राजा को भारी गुस्सा आ गया। उसने पहरेदारों को बुलाकर उस भिखारी को खींच लाने का हुक्म दिया। सिपाहियों ने किले के सभी पहरो को पार कराके उस भिखारी को राजा के सामने ला खड़ा किया। तब भी उसकी हँसी जारी थी।

“किसलिए हँस रहा है, बता, वरना तेरा सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा?” राजा ने धमकी दी।
“हुजूर, आपने एकाध खिड़कियाँ क्यों खोल रखी हैं? उन्हें भी बंद कर देते। फिर फाटक को भी बंद कर लें तो कोई भी आफत अंदर नहीं आएगी।” भिखारी ने हँसी के बीच में कहा।
“अरे बेवकूफ, सभी को बंद कर दूँ तो दम घुटकर मैं मर जाऊँगा।” राजा ने कहा।
“क्या फरक पड़ेगा! अभी भी आप कब्रिस्तान के अंदर ही रह रहे हैं। अंतर इतना ही है

इतने सारे धर्मों के होने के बावजूद

विश्व में शांति नहीं है। क्यों?

“धर्मों का आविर्भाव इसलिए हुआ कि मानव अपने अंदर के ईश्वर का अनुभव कर सके। लेकिन परिणाम क्या हुआ? मनुष्य के अंदर दैवी भाव लाने में मजहबों से चूक हो गई। तब भी कोई बात नहीं। शोचनीय बात तो यह है कि वे मनुष्य के अंदर से मानवता नष्ट होने का कारण बन गए।

आज प्रत्येक धर्म अलग-अलग राजनीतिक दल की तरह काम कर रहे हैं। आप जिस धर्म के माननेवाले हैं, उस दल के सदस्य बन जाते हैं। अपनी पार्टी की रक्षा करने की इच्छा आपके अंदर स्वयमेव पैदा हो जाती है। आपको डर होने लगता है कि दूसरी पार्टी के लोगों से आपके धर्म पर आफत आ जाएगी।

भय का अगला चरण हिंसा ही तो है। इसलिए आप लड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं। व्यक्तिगत जीवन में आप जिसके मित्र रहते हैं, धर्म की पृष्ठभूमि में उसके दुश्मन बन जाते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति शांति और आनंद की ही इच्छा करता है। लेकिन जब वह अपने को दल के सदस्य के रूप में पहचानता है, तब उसका मूलभूत अच्छा स्वभाव खत्म हो जाता है। जब तक यह अज्ञान समाप्त नहीं होता, धर्मों से मनुष्य को आफत ही है, शांति नहीं है।”

कि इस कब्र का एक फाटक है और उस पर पहरा भी बैठा है। फर्क यही है, बस।” कहते हुए भिखारी हँसने लगा।

मैं आप लोगों से भी यही कहता हूँ।

नए तौर पर कोशिश करके देखने का साहस नहीं है तो हमारे जीवन का अर्थ ही क्या है?

अगर आप निरापद सुरक्षित स्थान ही चाहते हैं तो क्यों नहीं कब्र में जाकर आराम कर लेते!

सुरक्षित जीवन बिताने की इच्छा से यदि हम अपने चारों ओर दीवारें खड़ी करेंगे तो हम जीवट के साथ जी नहीं सकते। यों जान को दफन करने के बाद केवल शरीर को साठ-सत्तर साल तक किसलिए खींचते चलना है?

किनारे से दूर जाने के साहस के बिना यदि जहाज किनारे-किनारे ही चलता रहे तो वह कहीं नहीं पहुँचेगा। वह जहाज दलदल में धँसकर रह जाएगा।

कहानी हमारी प्रतीक्षा और अनुमान के अनुसार न होकर मौके-दर-मौके चौंकाने वाले मोड़ों के साथ चलती रहे, ऐसी सस्पेंसवाली कहानी की ही न आप बढ़िया मानकर तारीफ करेंगे!

लेकिन केवल अपनी जिंदगी को बिना किसी मोड़ के सीधा-सपाट क्यों बनाना चाहते हैं?

युवा रहने की योग्यता केवल हृष्ट-पुष्ट शरीर नहीं, दृढ़तापूर्ण मन भी है।

अप्रत्याशित विपदाओं की भी साहस के साथ कामना कीजिए।

ऐसे सुलझे मन और साहस को आप केवल योग से प्राप्त कर सकते हैं।



बच्चे को कैसा उपहार दें?

हालाँकि आपने बड़े प्रेम के साथ संतान पैदा कर ली थी। आज आप अपने बच्चों की वजह से परेशान हैं। बच्चे आपके काबू से बाहर हो रहे हैं, यही चिंता आपको लगातार सता रही है। आपका बेटा दोस्तों के साथ मजे से सिगरेट पीकर घर लौटता है, इसे आप बरदाश्त नहीं कर पाते।

गुस्से में लाल-पीले होकर आप चिल्लाते हैं, “तेरे इस तरह के हथकंडों से हमारे परिवार की प्रतिष्ठा को कलंक लग रहा है।”

बताइए, क्या वह फौरन सिगरेट पीना छोड़ देगा? किसी अँधेरे कोने में खड़े होकर सिगरेट पीने के बाद उसकी बू को छिपाने के लिए मुँह में कोई चीज चबाते हुए आएगा।

आपने उसे सिखाना चाहा कि सिगरेट पीना गलत काम है। लेकिन आपने तो उलटे उसे झूठ और चोरी सिखा दी।

उसे सुधारने की नीयत से आपने धमकी भरे कड़े शब्दों में उसे डाँटा था।

अधिकार चलाकर आप उसे थोड़े समय के लिए खींचे रख सकते हैं। लेकिन इससे आपकी सच्ची परवाह उसकी समझ में नहीं आएगी। उसमें वह बदलाव नहीं आएगा, जिसकी आप प्रतीक्षा करते हैं।

यदि आपने अपने अंदर उससे प्यार करने की आदत डाली होती तो शुरू से ही आप दोनों के बीच में अच्छी मित्रता पनप गई होती। उसके अंदर अच्छे-बुरे की पहचान करने का विवेक भी आ गया होता। ऐसे में वह समझ लेता कि आप जो भी कह रहे हैं, उसकी भलाई के लिए कह रहे हैं।

इसके विपरीत, अगर आप उस पर हुकूमत चलाने की सोचते तो जीवन में कठिनाइयाँ आते वक्त वह आपसे सलाह और मदद माँगने से हिचकता।

शंकरन पिल्लै ने अपने भानजे को उसके जन्मदिन पर टीन का एक सस्ता ढोलक उपहार में दिया।

एक महीने के बाद वे उससे मिलने गए। लड़का खुशी-खुशी उनकी ओर भागा हुआ आया और बोला, “मामाजी, जन्मदिन पर मुझे जितने उपहार मिले, उनमें आपका दिया ढोलक ही सबसे बढ़िया है। मैंने उसके जरिए पैसे कमाना सीख लिया।”

शंकरन पिल्लै की छाती गर्व से चौड़ी हो गई। भानजे से पूछा, “क्या तुम संगीत कार्यक्रम में संगत देने के लिए रियाज कर रहे हो?”

“जी नहीं, मामाजी! मैं ढोलक न बजाऊँ, इसके लिए माँ रोज दस रुपए देती है। दादाजी हर हफ्ते पचास रुपए देते हैं।” लड़के ने कहा।

आपको बेवकूफ बनाकर अपना उल्लू सीधा करने की विद्या आपके बेटे को भी आती है। यह उसकी गलती नहीं है। आपने उसे उस ढंग से पाला-पोसा, यह गलती आपकी है।

एक बात को अच्छी तरह से समझ लीजिए। संतान आपकी जायदाद नहीं है। आपके माध्यम से एक जीव इस संसार में आया है। यह आपको दिया गया एक गौरव है। इसके अलावा, बच्चा कभी भी आपका स्वत्व नहीं है।

मार-पीट कर बच्चे को पालना एक घृणित कार्य है। दरअसल बच्चे के अंदर आपका सामना करने की शक्ति नहीं है। आपका हाथ ऊँचा होने का कारण यही तो है। निहत्थे पर तलवार चलाना बहादुरी है या अविवेक?

केवल शारीरिक दृष्टि से अपना बचाव करने की क्षमता बच्चे में नहीं होती। वरना बच्चा जो है, किसी तरह की वक्रताओं से रहित नया-ताजा जीव है। एक ऐसा जीव, जिसे जीवन को दुःखपूर्ण बोझ समझने का अभ्यास नहीं

है। झूठ- फरेब से दूर होने की वजह से यह जीव दुनिया को आपकी बनिस्बत अद्भुत ढंग से देखने का नजरिया रखता है।

यदि आप चाहते हैं कि फूल का पौधा अच्छी तरह फले-फूले तो आप पास में बैठकर उसे छेड़ते रहेंगे? नहीं न? उसके लिए आवश्यक खाद डालेंगे और पानी सींचते हुए देखभाल करते रहेंगे। पौधा अपने आप फूलेगा।

बच्चा भी पौधा जैसा ही है। उसको आवश्यक संरक्षण दें और अपने विचारों को उस पर थोपें नहीं, बस।

यदि अपना इकलौता बेटा बिजनेस में चाव दिखाए बिना संगीत पर फिदा रहे, हमेशा गिटार बजाता रहे तो कोई सफल उद्योगपति इसे बरदाश्त नहीं कर सकेगा। किसी संगीतज्ञ

ध्यान को साधकों से नहीं सीख सकते, यह क्यों जरूरी है कि गुरु के मुँह से ही सीखा जाए?

अकबर ने एक दिन देखा, बीरबल आँखें बंद किए किसी मंत्र का उच्चारण कर रहे थे। उन्होंने आग्रह किया, “मुझे भी यह मंत्र सिखा दो।”

“जहाँपनाह! बाकायदा गुरु के मुँह से ही मंत्र को सीखना चाहिए।” ऐसा कहकर बीरबल ने मना कर दिया।

लेकिन अपने अधिकार के बल पर अकबर ने किसी और व्यक्ति से वही मंत्र सीख लिया। फिर बीरबल के सामने उस मंत्र का उच्चारण कर दिखाया।

“शब्द तो वही है, जहाँपनाह! मगर गुरु-मुख से मिलने पर ही उसमें शक्ति आती है।”

“जब तक शब्द नहीं बदलते, चाहे कोई भी सिखाए, इसमें क्या हर्ज है?” अकबर ने गुस्से से पूछा।

बीरबल ने ताली बजाकर सिपाहियों को बुलाया और हुक्म दिया, “इस बेवकूफ को पकड़कर जेल में बंद करो।” सिपाही सकपकाकर खड़े रह गए। बीरबल ने फिर से वही हुक्म दोहराया। लेकिन एक भी सिपाही अकबर के पास तक नहीं आया। बीरबल के इस व्यवहार से अकबर तिलमिला उठे।

“मुझे जेल में बंद करने का हुक्म देनेवाला यह कौन है? इसे पकड़कर जेल में बंद किया जाए।” फौरन सिपाही लोग बीरबल पर झपट पड़े और उन्हें पकड़ लिया। बीरबल ने हँसते हुए कहा, “शब्द तो वही हैं! मेरे कहने पर किसी ने परवाह नहीं की, लेकिन आपके द्वारा कहे जाने पर उन शब्दों का वजन कैसे बढ़ गया, देखा आपने, जहाँपनाह!”

गुरु-मुख से ही मंत्र सीखने की आवश्यकता पर बीरबल ने क्यों जोर दिया, अकबर इस बात समझ गए। क्या आपके सवाल का जवाब मिल गया?

का बेटा मोटर गाड़ी के कल-पुरजों के साथ सदा व्यस्त रहे तो संगीतकार पिता इसे सहन नहीं कर पाएगा।

क्यों? अपने चले जाने के बाद अपने अवशिष्ट के रूप में दुनिया में कुछ रहना चाहिए, यही छोटी सी आशा इसका कारण है। इसलिए लोग बच्चों को अपनी तरह बड़ा करके अपने निशान के रूप में छोड़ जाना चाहते हैं।

आप क्यों ऐसी प्रत्याशा रखते हैं कि आपकी संतान भी आपके द्वारा की जा रही उन्हीं गलतियों को दोहराए?

क्या आप नहीं चाहते कि आपके बच्चे ऐसे कार्यों को आजमाने की क्षमता पाएँ, जिन पर हाथ डालने का साहस आप में नहीं था?

आगे आनेवाली पीढ़ियाँ इस तरह अनछुए क्षेत्रों में आगे बढ़कर काम करें, तभी न दुनिया उत्तरोत्तर विकास करेगी।

अपने बच्चे के लिए आपके द्वारा देने योग्य उपहार केवल दो ही हैं—स्नेह और सच्ची देखभाल; हुक्मत कतई नहीं।

आपकी तुलना में आपका बच्चा बढ़िया निकलेगा, इसमें कोई संदेह नहीं।
इस तरह पलनेवाला बच्चा कभी गलत राह पर नहीं जाएगा।
परिस्थितिवश शायद गुमराह भी हो जाए, तो अपनी गलती का भान होने पर जल्द ही आपके पास लौट आएगा।



नंबर क्या कर सकते हैं?

एक दिन कोई उद्योगपति मुझसे मिलने आए थे। उन्होंने अपना विजिटिंग कार्ड दिया। थोड़ी देर बातें करते रहे। विदा लेकर निकलते हुए जरा हिचकते हुए खड़े रहे। आखिर पूछ ही दिया—

“सद्गुरु, मेरे साथ बात करते समय आप बीच-बीच में ‘रमियान’, ‘रमियान’ कह रहे थे। उस मंत्र का क्या अर्थ है?”

मैं चौंक उठा। उनका दिया विजिटिंग कार्ड दिखाते हुए मैंने कहा, “यही तो आपका नाम है? कार्ड में ‘Rhamean’ तो लिखा है।”

“नहीं महाराज, मेरा नाम रामन है। न्यूमरालॉजी के ज्योतिषी ने परामर्श दिया था कि मेरे नाम को अंग्रेजी में इस तरह लिखा जाए तो व्यवसाय में सफलता मिलेगी।”

मैं अपनी हँसी रोक नहीं पाया।

मनुष्य ने ही तो अंकों और अक्षरों को रूप दिया है, फिर वे कैसे मानव की किस्मत बना सकते हैं?

बताइए, आप अपनी क्षमता के बूते पर उद्योग खड़ा करेंगे या अंकों पर विश्वास करके? नंबर क्या कर सकते हैं?

अगर किसी ने कहा दिया कि अंक 2 आपके लिए भाग्यकारक है तो क्या आप आँखें मूँदकर उस पर विश्वास कर बैठेंगे? ज्योतिषी के कहने पर अपना हाथ या पैर काट डालेंगे?

कितनी वाहियात बात है!

शंकरन पिल्लै एक बार शराब पीकर हल्ला मचाने लगे। पुलिस ने उन्हें अदालत में पेश कर दिया।

न्यायाधीश ने गुस्से में आकर पूछा, “शराब पीकर बार-बार यहाँ आते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती?” फिर झल्लाकर बोले, “अरे, इसमें तुम्हारा कोई कसूर नहीं है। तुमने जो व्हिस्की पी रखी है, उसी की करतूत है यह।”

झट शंकरन पिल्लै ने कहा, “खुशी की बात है कि आपको असली कारण का पता चल गया। मेरी पत्नी तो मुझ पर ही दोषारोपण करती है।”

इसी तरह कुछ लोग दूसरों पर इलजाम लगाने की ताक में रहते हैं।

असफल होने पर तुरंत जन्म-कुंडली और अंक ज्योतिष के पीछे क्यों भागते हैं?

आपके निकम्मेपन का फायदा ज्योतिषी लोग ही तो उठाते हैं।

असफलता का असली कारण तो आपकी मूर्खता है।

मेरे पास एक पुरानी मारुति कार थी। कोई उसे खरीदना चाहते थे। बोले, “आपकी गाड़ी की संख्या मेरे लिए किस्मत ला सकती है। आप जो भी दाम बताएँ, मैं खरीद लूँगा।”

मैं हँस पड़ा। पूछा, “आप किस नंबर की बात कर रहे हैं? रजिस्ट्रेशन नंबर या इंजन का नंबर?”

वे चकरा गए।

अपने ज्योतिषी से परामर्श लेने के बाद लौटे।

“कहते हैं, रजिस्ट्रेशन नंबर ही महत्वपूर्ण है। अंक ज्योतिषी ने अंग्रेजी अक्षरों के लिए जाने क्या-क्या नंबर देकर गणना करने के बाद बताया।”

ज्योतिषी की बताई तारीख और निश्चित समय पर मित्र मेरे हाथ में 99,999 रुपए रखकर बोले, “महाराज, क्षमा करें, जो दाम तय हुआ था, उससे एक रुपया कम दे रहा हूँ, इसलिए कि ज्योतिषी ने बताया कि यही रकम

अंक ज्योतिष के हिसाब से भाग्यकारक है।” फिर उन्होंने कोई कीमती उपहार देकर उस एक रुपए की भरपाई भी कर दी।

“ये सब बातें रहने दीजिए, पहले गाड़ी को चलाकर देखिए। कई पुरजे हिल रहे होंगे। पूरा संतोष कर लेने के बाद खरीद लें।”

मित्र ने फिर कहा कि उन्हें तो भाग्यकारक नंबर से मतलब है। वे गाड़ी लेकर चले गए।

मुश्किल से एक महीना बीता, मित्र ने वह कार बेच दी। पता है, कारण क्या था?

एक बार गाड़ी चलाते समय आगेवाली सीट का स्प्रिंग उखड़ गया। वे पीछे की ओर

क्या कुंडली मिलाए बिना विवाह कर सकते हैं?

अपने जीवन-साथी को सोच-समझकर चुनने की जिम्मेदारी आपकी ही तो है? ज्योतिष और जन्म-कुंडली की रट लगाते हुए आप अपने जीवन को दूसरे के हाथों क्यों सौंप रहे हैं?

उन्होंने राशिचक्र देखकर अब तक जितनी शादियाँ कराई हैं, उनमें से कितनी पट्टरी से उतर गई हैं, क्या इसकी सूची आपको दिखाई है?

अगर पति से आपका मन-मुटाव हो जाए तो उसके लिए नक्षत्रों को दोषी ठहराएँगे। यदि आपको पत्नी के साथ ठीक से जीवन चलाना नहीं आता तो ग्रहों पर इलजाम लगाएँगे।

यदि विवाहित जीवन नरक तुल्य हो जाए तो उसके लिए यहाँ बैठे दो जिद्दी व्यक्ति ही जिम्मेदार हैं। कहीं बड़ी दूरी पर स्थित नवग्रह नहीं।

मियाँ-बीवी राजी हों तो क्या करेंगे तारे? ग्रह आपका क्या बिगाड़ लेंगे?

धकेल दिए गए। उन्होंने सोचा कि किसी अदृश्य शक्ति ने उन्हें पीछे से खींच दिया। बस, इसी डर के मारे उन्होंने गाड़ी बेच दी।

मुझसे गाड़ी खरीदकर ले जाते हुए मंदिर के सामने उसे खड़ा करके नारियल फोड़ा गया था और पहियों के नीचे नींबू रखकर उन्हें दबोचा गया। सब बेकार हो गया।

इन सब से शोचनीय बात यही है कि उनके भाग्यकारक अंक ने भी धोखा दे दिया।

हमने अपनी सुविधा के लिए दिन, वार और संख्याओं की व्यवस्था की थी। क्या ये सब चीजें हमारे जीवन को तय कर सकती हैं?

प्राणवान् होकर आप लोग जो बेवकूफियाँ करते हैं, उनके लिए बेजान ग्रहों को जिम्मेदार ठहराना कितनी बड़ी कायरता है!

ग्रहों में जो स्पंदन होते हैं, उनका थोड़ा असर पृथ्वी पर पड़ सकता है। लेकिन जिन लोगों का मन संतुलित है, उन पर इन स्पंदनों का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

कार्य आरंभ करने से पहले आप ज्योतिषी के पास जाएँगे। अगर वे कह दें कि कार्य में सफलता मिलेगी तो आप उसी पर विश्वास करते हुए पूरी क्षमता के साथ काम नहीं करेंगे। अगर वे कहें कि सफलता नहीं मिलेगी, तब निराशा के मारे लगन के साथ काम नहीं करेंगे। तब ज्योतिषी के पास जाने का मतलब ही क्या है?

आधे-अधूरे काम करेंगे तो सफलता कहाँ से मिलेगी?

इच्छित वस्तु को पाना हो तो अपनी क्षमता बढ़ा लीजिए। खेलने के लिए उतरने से पहले ही परिणाम पाने की इच्छा न करें। अपने काम की जिम्मेदारी स्वयं लेने की आदत डालें।



II

नुकसान में भी फायदा

क्या अगले की बरबादी में है

आपकी कामयाबी?

बा हर धड़ाधड़ पटाखों का धमाका।

मैंने पूछा, “क्या माजरा है?” पता चला कि किसी हीरो की फिल्म फ्लॉप हो गई है, जिसकी खुशी मना रहे हैं उसके विरोधी हीरो के उपासक। बेहूदगी की हद हो गई न!

फर्ज कीजिए, आप फुटबॉल की टीम में हैं। वहाँ आपके खिलाफ खेलने के लिए विपक्ष की एक टीम अवश्य होगी। मुकाबला करनेवाली टीम अगर आपकी टीम की बनिस्बत ज्यादा काबिल हो तो वह आपके हर गोल को रोक लेगी। यही नहीं, मौका मिलते ही आपको चकमा देकर गोल भी कर देगी। इसी वजह से उस टीम को दुश्मन करार देते हुए क्या आप मैदान से ही भगा देंगे?

मुकाबला करने के लिए सामने कोई टीम ही न हो तो आप जब चाहें, गेंद को लेकर आगे बढ़ सकते हैं। वहाँ गाड़े गए दो खंभों के बीच में से गेंद को चलाकर चाहे जितनी बार गोल मार सकते हैं, आपको कोई नहीं रोकेगा। मगर, क्या आप इसे फुटबॉल मैच कहेंगे?

या नहीं, तो जीतने की गरज से अपने से कमजोर के साथ, नौसिखिए खिलाड़ियों के साथ खेलते रहेंगे?

यामाकुची कराटे के जाने-माने मास्टर थे। हर प्रतियोगिता में विजय उनके कदम चूमती। संयोग से एक बार अपने गुरुजी से उनका मुकाबला ठन गया।

यामाकुची ने गुरुजी को गिराने के लिए अपनी सीखी सारी विद्याएँ आजमाकर देख लीं; लेकिन गुरुजी बराबर उन पर भारी पड़ रहे थे। यामाकुची धीरे-धीरे सब्र खोने

लगे। आखिर तैश में आकर उन्होंने गलत काटों का भी प्रयोग किया। नतीजन खुद लहलुहान हुए, गुरुजी को धराशायी न कर पाए।

स्पर्धा के बाद यामाकुची ने गुरुजी को प्रणाम करके अपनी हार का कारण जानना चाहा। गुरुजी ने पूछा, “वत्स, तुमने मुझे उस वक्त कैसे देखा था?”

“जब मुकाबले की बात आ जाती है तो वहाँ न कोई गुरु होता है, न चेला। आपकी कमजोरियाँ ढूँढ़कर किसी भी तरह आपको गिरा देने की मेरी पूरी कोशिश रही। फिर भी गुरुजी, मैं उसमें कामयाब नहीं हो पाया।”

गुरुजी ने तब नीचे एक लकीर खींची।

“बोलो, इस लकीर को छोटा करना हो तो क्या करोगे?”

यामाकुची ने लकीर के एक हिस्से को मिटाकर दिखाया।

“मान लो, यही लकीर चट्टान पर अमिट बनी पड़ी है, तब?”

यामाकुची को जवाब नहीं सूझा। गुरुजी ने उस लकीर के पास उससे भी लंबी एक लकीर खींच दी।

“देखो, अब पहली लकीर छोटी पड़ गई न! अगर किसी पर विजय पानी हो तो उसे दबाने या गिराने की कोशिश मत करना। अपनी क्षमता को उससे ज्यादा बढ़ा लेना। अपने लिए खेलो, उसके खिलाफ मत खेलो।”

यामाकुची का दिमाग अब सुलझ गया।

आप चाहे जिस किसी भी क्षेत्र में रहें, कभी-न-कभी मुकाबले का सामना करना ही होगा। अपने प्रतियोगी को यदि आप दुश्मन के रूप में देखेंगे तो निश्चय ही मन की शांति खत्म हो जाएगी। फर्ज कीजिए, आप सड़क पर चल रहे होते हैं। कोई अनजान व्यक्ति सामने से आता है और आपके कानों में फुसफुसाता है, 'बेवकूफ कहीं का!' और आगे बढ़ जाता है। फौरन आपका खून खौल उठेगा। अगर ऐसा कहनेवाला आपसे कमजोर हो तो आप उससे झड़प करने लगेंगे। पर अगर वह ज्यादा ताकतवर हो तो?

आप सुबह उठकर खिड़की का पल्ला खोलते हैं। वही आदमी सामने खड़ा होकर आपके घर को घूर रहा है। आपको चिढ़ाने के लिए इस समय उसे कुछ भी करने की जरूरत नहीं, थूकने या पत्थर मारने की कोई जरूरत नहीं। बस, चुपचाप खड़ा रहें, यही काफी है। आपका पारा चढ़ जाएगा और सारी चीजें गड़बड़ हो जाएँगी। है न?

वह कमजोर है या ताकतवर, यह कोई मायने नहीं रखता; लेकिन जैसे उसने कल आपको बेवकूफ कहा था, आज बनाकर दिखा दिया न।

अगर हम ईश्वर के निकट रहना चाहें तो क्या हमें आपकी तरह दैनंदिन कार्यों को छोड़ देना होगा?

मैं अपने कपड़ों को खुद धो लेता हूँ, क्या वह दैनिक कार्य नहीं है? नारियल के पेड़ों को पानी देकर उनकी देखभाल करता हूँ, अपना खाना खुद पका लेता हूँ। क्या आप इन्हें तुच्छ कार्य मानते हैं? इन सबको छोड़कर आप इस दुनिया में जैसे जीने वाले हैं?

आप कोई राजनीतिक कार्यकर्ता हो सकते हैं, मुनीम हो सकते हैं, किसी कंपनी के प्रबंधक हो सकते हैं या फिर सफाई कर्मचारी भी हो सकते हैं। इस दुनिया में जीवन-यापन करने के लिए कोई एक काम तो करना ही पड़ता है। उन सबको तुच्छ समझने से ही पैदा होती हैं झड़पटें।

अपनी पसंद का काम जो भी हो, पूरे मन के साथ उसे निभाइए। तब भगवान् के समीप होने का एहसास पाएँगे।

दूसरे किसी की तरह जीने की इच्छा लेकर नाहक दुःख पालना व्यर्थ है।

आप जिसे अपना मित्र मानते हैं, उसमें भी तो इतनी ताकत नहीं है। जब आप किसी को अपना दुश्मन मानने लगते हैं, देखा न, वह कितना ताकतवर बन जाता है!

अच्छी तरह समझ लीजिए, आप यहाँ किसी से लड़ाई करने नहीं आए हैं। अगर आप किसी को मिटा देंगे तो दूसरा सिर उठाकर खड़ा मिलेगा। आपकी ऊर्जा का अधिकांश भाग रचनात्मक कार्यों पर लगे बिना विनाशकारी कार्यों में ही खप जाएगा।

अगले व्यक्ति को दुश्मन न समझें।

यदि आप ईर्ष्या और भय से वशीभूत होंगे तो आपकी क्षमता कुंठित हो जाएगी। याद रखें, अपना हरेक कदम स्वयं को आगे बढ़ाने में काम आए, दूसरे को मिटाने के लिए नहीं। तभी लक्ष्य के शिक्षर पर पहुँचने तक आपकी यात्रा आनंदमय रहेगी।

अपनी कार्यशैली को यूँ ढाल लें कि आपकी पूरी क्षमता प्रकट हो जाए। असली कामयाबी तभी मिलेगी। इसके लिए आपको अपने तन व मन दोनों को पूरी तरह से काम में लगाने का गुर आना चाहिए।

इसके लिए नियमित योगाभ्यास से बढ़कर कोई साधना नहीं है।



सपने साकार होंगे

आपकी हर मंशा पूरी होगी, बशर्ते कि पहले से ही आप सुलझी हुई मति से चुनाव कर पाएँ कि आपको क्या चाहिए। फिर उसे पाने के लिए दृढ़ संकल्प चाहिए। यदि मैं आप लोगों से पूछूँ तो बहुतेरे लोग सकारात्मक ढंग से नहीं बता पाएँगे कि उन्हें क्या चाहिए, हालाँकि यह जरूर बता सकते हैं कि क्या नहीं चाहिए।

‘मैं हार का मुँह न देखूँ’, ‘व्यापार में नुकसान न हो’, ‘मेरे हाथ से अधिकार न चला जाए’, ‘किसी भी सूरत में फलों चीज को न गँवा बैठूँ।’—इस तरह की नकारात्मक सोच ही दिमाग में आती है।

आप जिस चीज की कामना करते हैं, मन की कल्पना में उसे रूपायित कर लें। तभी वह वास्तविक रूप में साकार होगी।

यदि आप रहने के लिए सुंदर-सा घर बनाना चाहते हैं तो पहले मन में उस मकान की रूप-कल्पना करते हैं, फिर कागज पर उसका नक्शा बनाते हैं, उसमें संशोधन करते हैं और उसके बाद ही तो मकान का निर्माण करते हैं।

नींव रखने के स्तर पर ही चंचल मन से संदेह करने लग जाएँ—क्या यह मुझसे संभव है?—तो आपका घर कल्पना में भी नहीं बन पाएगा।

कई बार लोग भगवान् से प्रार्थना करते हैं—‘हे प्रभो! मेरी फलों कामना पूरी हो जाए।’ आपने देखा होगा कि उनमें से कई लोगों का मनोरथ पूर्ण भी हो जाता है, उन्हें वांछित फल मिल जाता है। क्या स्वयं परमेश्वर ने आकर उस कार्य को संपन्न किया?

एक सेनानायक अपनी सेना को लेकर रणक्षेत्र की ओर कूच कर रहा था। सेना ने आधा रास्ता तय किया होगा, तभी एक गुप्तचर सामने से आया। उसने कहा—

“सेनापते! अपनी फौज में केवल एक हजार सिपाही हैं। दुश्मन की सेना में दस हजार जवान हैं। इसलिए यही बेहतर होगा कि हम आत्म-समर्पण कर दें।”

यह सूचना पाते ही पूरी सेना का हौसला पस्त हो गया। सेनापति ने अपने सारे जवानों को पास के मंदिर में पहुँचने का हुक्म दिया। उन्हें संबोधित करते हुए कहा, “मेरे प्यारे साथियो! हमारे सामने एक जबरदस्त सवाल है—‘क्या हम शक्तिशाली शत्रु का सामना कर सकते हैं?’ मेरा सुझाव है कि हम इस प्रश्न का उत्तर इस मंदिर की देवी माँ से ही माँग लें। देखिए, मैं देवी माँ की सन्निधि में अपने हाथ के सिक्के को उछालता हूँ। यदि सिक्का ‘पट’ में गिरे तो समझिए, लड़ाई पर जाने के लिए देवी माँ की अनुमति है। यदि सिक्का ‘चित’ में गिरे तो यहीं से वापस चले जाएँ।” सेनापति ने सिक्के को ऊपर उछाल दिया।

पट में गिरा। सारे-के-सारे सिपाहियों में उत्साह की लहर छा गई। वे पूरे जोश के साथ नारे लगाते हुए लड़ाई के मैदान में पहुँचे। अपने से दस गुना ताकतवर सेना से टक्कर ली। जान की बाजी लगाकर लड़े। दुश्मन को हराकर विजय-पताका फहराते हुए लौटते समय देवी माँ को धन्यवाद देने के लिए सेना उसी मंदिर में इकट्ठा हुई।

सेनापति ने तब अपनी जेब से वही सिक्का निकालकर दिखाया। उसके दोनों तरफ ‘पट’ ही छपा था।

‘पट’ आने पर जवानों ने उसे देवी माँ की आज्ञा मान लिया और पूर्ण रूप से विश्वास किया कि हर हाल में हमारी ही जीत होगी। उनके अंदर नकारात्मक विचार उठे ही नहीं। इसलिए सफलता प्राप्त कर ली। इस दृष्टि से देखा जाए तो भगवान् विचारों को केंद्रित करने का एक उपादान मात्र है।

वैसे, छोटा-बड़ा कोई भी काम शुरू करने से पहले मंदिर में जाकर मन्त माँगते रहें तो क्या सारे काम सफल हो जाएँगे?

क्या आपके मन में भगवान् पर अडिग विश्वास है? छल-कपट से रहित उसी मनोभाव की उपस्थिति में नकारात्मक विचार सिर नहीं उठाएँगे, वांछित मनोरथ पूर्ण भी होगा। लेकिन यदि आप सोचते हैं कि अपनी एक आँख मंदिर के अंदर देव मूर्ति पर और दूसरी आँख बाहर छोड़ी गई चप्पलों पर टिकाते हुए इष्टदेव के साथ नाता जोड़ना संभव है तो आप आस्था के नाम पर स्वयं को ठग रहे हैं, बस। यह झूठी आस्था कार्यों की सिद्धि में सहायक नहीं होगी।

ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद भी कार्य की सफलता के बारे में भय-मिश्रित आशंका बनी रहे, मन में अंतर्द्वंद्व चलता रहे तो नकारात्मक विचार कैसे हटेंगे? वांछित वस्तु कैसे मिलेगी?

“नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद मेरे पति को बार-बार बुखार आता है, क्यों?”

“मनुष्य के अंदर बचपन से ही एक तरह का गलत चिंतन शुरू हो जाता है। यदि कोई बच्चा मस्ती से खेलता रहे तो उसकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। बुखार चढ़ने पर सारा परिवार बच्चे को घेरकर खड़ा हो जाता है।

बच्चों के बार-बार बीमार होने का कारण उनके रिश्तेदार और परिजन ही हैं।

आप जरूर उनके इलाज का प्रबंध करें, स्वस्थ आहार दें। हम जिम्मेदारियों से मुक्त होने की सलाह नहीं दे रहे हैं। बच्चों पर नियंत्रण किए बिना उन्हें खूब खेलने दीजिए। अगर आप अनावश्यक देखभाल और लाड़-दुलार बरसाकर उन्हें इसके आदी बनाएँगे तो जब-जब आपका ध्यान पाने की इच्छा रहेगी, वे अनजाने में ही बीमार पड़ने लग जाते हैं।

बड़े होने के बाद भी इस रवैए में बदलाव नहीं आता। सेवानिवृत्त होने के बाद चूँकि व्यक्ति के मन में स्वजनों की परवाह कम हो जाने का डर पैदा हो जाता है, उसे बुखार आने लगता है।

यदि आप चाहते हैं कि दुनिया स्वस्थ रहे तो रोगों को उत्सव की तरह मनाइए नहीं।”

शंकरन पिल्लै एक बार बहुत दूर टहलने के बाद अचानक स्वर्ग में घुस गए। काफी दूर चलने की वजह से उन्हें बहुत भूख लग रही थी। बदन थककर चूर हो रहा था। वे एक वृक्ष के नीचे बैठ गए। वांछित फल देनेवाला कल्पवृक्ष था वह। शंकरन पिल्लै को इसका पता नहीं था। सहज रूप से उन्होंने सोचा, ‘अभी भरपेट भोजन मिल जाता तो कितना अच्छा होता!’

अगले ही क्षण उनकी पसंद के सारे भोज्य पदार्थ सोने की थाली में सजकर सामने आ गए। प्यालों में पसंदीदा फलों का रस भी था।

पेट भर गया तो नींद आई। पिल्लै ने सोचा, ‘काश, अच्छा-सा पलंग मिल जाता।’ फौरन मुलायम गद्दों और तकियों के साथ पलंग हाजिर। अब शंकरन पिल्लै के मन में भय छा गया।

विचार उठते ही कि ‘यह सब कैसे मिल रहा है? यह भूत-प्रेतों का स्थान तो नहीं है?’ अगले ही क्षण भूत-प्रेतों ने आकर उन्हें घेर लिया।

‘हाय, ये प्रेत-पिशाच कहीं मुझे मार डालें तो?’ सोचने की देर थी कि पिशाचों ने उन्हें चीरकर भरता बना दिया।

देखा, शंकरन पिल्लै का क्या हश्र हुआ? यदि आपके विचार नकारात्मक हों तो फल यही होगा।

अगर आपके मन में आवश्यक वस्तु की इच्छा करने का एक विचार उठता है तो भय और अविश्वास से भरे एक हजार विचार साथ में उठ जाते हैं।

कामना की विचार-शक्ति को स्वयं कमजोर कर डालने की मूर्खता न कीजिए। वांछित मनोरथ पूर्ण करनेवाले कल्पवृक्ष की खोज में वन में जाने की आवश्यकता नहीं है। यदि आपके विचारों में सच्चाई हो, यदि आपके मन में दृढ़ता हो तो वही कामनाओं को पूर्ण करनेवाले कल्पवृक्ष के रूप में कार्य करेगा। वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है कि विचारों के स्पंदनों में वैसी शक्ति मौजूद है।



आप भी बनें उग्रवादी

आप जो चाहते हैं, उसके प्रति मन में स्पष्टता और दृढ़ता हो तो इच्छित वस्तु को पा लेना सरल होता है। यदि कामना में तीव्रता और गहनता हो तो उसकी प्राप्ति-अप्राप्ति के विषय में मन के अंदर मूर्खतापूर्ण संदेह क्यों उठने लगा?

“क्या आप उठकर चल सकते हैं?” आप कहेंगे, ‘हाँ, क्यों नहीं!’

“क्या आप हवा में ऊपर उठकर आकाश में उड़ सकते हैं?”

आप कहेंगे, ‘न, यह तो संभव नहीं है।’

आपके इन दोनों उत्तरों को आपके पूर्व अनुभवों ने ही तय किया है, न?

कोई चाहत कल पूरी नहीं हुई, क्या इसका यह मतलब है कि वह कभी पूरी नहीं होगी। इस बात को आप किस आधार पर तय कर सकते हैं? सौ साल पहले हिंदुस्तान में बैठे किसी व्यक्ति के मन में अमेरिका में हो रही किसी घटना को उसी समय यहाँ देखने की इच्छा उठी होती तो वह निश्चित रूप से पूरी नहीं हुई होगी। लेकिन किसी के मन में इस तरह की इच्छा तीव्र एवं गहन रूप से पैदा हुई, तभी तो आज आपको टेलीविजन मिला है।

जर्मनी के ओटोलियंता नामक वैज्ञानिक ‘मानव उड़ नहीं सकता’, यह बात स्वीकार करने को तैयार नहीं हुए। उन्होंने ही पहले-पहल उड़नेवाली मशीन बनाई। इस खुशी को वे अपने देशवासियों के साथ बाँटना चाहते थे। एक दिन निश्चित किया गया। उस दिन सब लोगों के सामने उड़कर दिखाने का वादा भी किया।

लेकिन, जर्मनी के गिरजाघरों में धर्मोपदेश देनेवाले पादरी लोग इस बात को पचा नहीं पाए। ओटोलियंता का यह धर्म-विरोधी कार्य देखकर उनका खून खौल उठा। ‘देव-देवता ही आकाश में उड़ सकते हैं। मनुष्य का यों उड़ना ईश्वर-

विरोधी कृत्य माना जाएगा।’ यों कहकर पादरियों ने ओटोलियंता द्वारा निर्मित विमान को रातोंरात जला डाला।

विश्व इतिहास में कई एक धर्मगुरु इसी सोच के मारे कि खुद को ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में दिखाने का अपना व्यापार ठप्प हो जाएगा, समय-समय पर इस तरह की आपत्तियाँ उठाते आए हैं।

ओटोलियंता हारे नहीं। दुबारा विमान का निर्माण करने में उन्हें चार साल लगे। लेकिन तब तक राइट बंधुओं द्वारा तैयार किए विमान ने आकाश में उड़कर इतिहास को बदल डाला था।

मानव के उड़ने की संभावना के प्रति शंका पालते रहते तो ओटोलियंता या राइट बंधुओं ने विमान का आविष्कार कैसे किया होता। आज कुछ घंटों के अंदर दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुँचने का मौका क्या आपको मिला होता?

‘विकास की प्रक्रिया में बंदर की पूँछ झड़ जाने से मानव का जन्म हुआ।’—डार्विन का यह कथन शायद सच ही था। पूँछ तो झड़ गई, लेकिन बंदर उतरकर चला नहीं गया। वह मनुष्य के मन में बैठ गया। मानव आज भी अस्थिरता के साथ किसी बात में लगन या मनोयोग के बिना इधर-से-उधर भटक रहा है, आपने इस पर गौर किया है?

जिन थोड़े से लोगों ने उस बंदर को पास तक फटकने नहीं दिया और दृढ़ता के साथ सपनों को साकार करने की दिशा में कार्य किया, वे ही दुनिया में इतने सारे परिवर्तन ला पाए।

यदि आपके पुरखों ने भी 'यह नहीं होगा', 'यह संभव नहीं है', 'यह कहाँ मिलेगा'—यों सोचते हुए प्रयत्न छोड़ दिया होता तो आप अब भी पेड़ों से लटक रहे होते।

पुराणों में आपने पढ़ा होगा। कोई असुर ईश को प्रसन्न करने के लिए कठोर तपस्या करता। उसकी तपस्या को भंग करने के लिए देव लोग भीरु प्रयत्न करते—आँधी चलती, भयंकर वृष्टि होती, खूँखार जानवर आक्रमण करते। देवलोक से रंभा, उर्वशी जैसी अप्सराएँ उसके ध्यान को भंग करने का प्रयास करतीं। चाहे जितनी बाधाएँ आएँ, असुर अपनी तपस्या में दृढ़ रहता। इसी कारण से प्रकृति दुर्ग के समान उसकी रक्षा में खड़ी रहती। अंत में वह असुर शिवजी से वांछित वरदान पाकर ही लौटता। हाँ, जिन लोगों का संकल्प दृढ़ है, उनके द्वारा प्राप्य वस्तु को रोकना भगवान् के लिए भी असाध्य कार्य है।

महात्मा गांधी सीधे-सादे व्यक्ति थे। उनके बारे में यह नहीं कह सकते कि वे किसी भी

“धर्म-परिवर्तन के विषय में आपकी राय क्या है?”

पता है, धर्म किसलिए अस्तित्व में आए हैं? मनुष्य को अपने अंदर झाँककर हृदय में विद्यमान ईश्वरीय भाव को महसूस करने का अवसर मिले, इसी लक्ष्य के साथ धर्मों का प्रादुर्भाव हुआ है, इसलिए नहीं कि गली-कूचे में फेरीवाले की तरह उन्हें बेचा जाए। अनुयायियों की संख्या बढ़ाने के लिए उलटा-सीधा कुछ भी करने पर तुल जाने का नाम धर्म नहीं है।

‘मैं जिस खुदा पर ईमान रखता हूँ, उसी को तू भी मान’, यों तलवार दिखाकर धमकाना भी धर्म नहीं है। वैसे किसी भूखे को रोटी देना, गरीबों को भोजन और शिक्षा देना उत्कृष्ट कार्य ही है; लेकिन रोटी का टुकड़ा दिखाकर किसी को अपने धर्म की ओर खींचना सरासर निंदनीय कार्य है।

भूखे व्यक्ति के लिए भोजन ही साक्षात् भगवान् है। भोजन पर विश्वास करते हुए भले ही कोई अपना धर्म-परिवर्तन कर ले, पर यह जरूरी नहीं है कि उसे एकाएक नए ईश्वर पर विश्वास आ जाए। जिन लोगों का अपने धर्म पर सच्चा विश्वास है, हजारों वर्ष की समृद्ध परंपरा से पोषित किसी संस्कृति का भंजन करके अपने खेमे में भीड़ बढ़ाने की जरूरत नहीं है।

किसी भी धर्म के साथ अपनी पहचान बनाने की अपेक्षा किसी संस्कृति के साथ अपनी पहचान बना लेना ही मानव के लिए श्रेयस्कर है।

क्षेत्र में असाधारण क्षमता या विशेषज्ञता के धनी थे। लेकिन एकाएक उन्होंने पूरे जगत् को विस्मय-विमुग्ध करते हुए विश्व रूप ले लिया। जिस ब्रिटिश साम्राज्य को हिलाना उस समय एकदम असाध्य कार्य था, उसे उन्होंने हिलाकर दिखा दिया।

यह कार्य गांधीजी द्वारा कैसे संभव हुआ? उन्होंने जो दायित्व लिया, उसमें पूरी लगन और निष्ठा दिखाई। शिक्षा में, धन-संपत्ति में, सुविधा में, योग्यता और क्षमता में गांधीजी की तुलना में बढ़े-चढ़े सज्जन उनका अनुकरण करने को तैयार रहे थे।

कारण, अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के मार्ग में उनकी निष्ठा अडिग रही। जेल में डालने पर भी वे अपने दृढ़ संकल्प से पीछे नहीं हटे। उनके मनोबल को शिथिल करने में असमर्थ होकर ब्रिटिश राज उनके सामने झुक गया।

अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहनेवाले उग्रवादी ही ऐसे करिश्मे कर दिखा सकते हैं। इसे दुर्भाग्य ही कहिए कि इस वक्त अपने किसी सिद्धांत पर दृढ़ आस्था रखनेवाले उग्रवादी अपने दिमागों में खतरनाक चिंतन पाल रहे हैं। ये आतंकवादी अपने लक्ष्य को पूरा पाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने के लिए भी तैयार रहते हैं।

महात्मा गांधी भी तीव्रवादी ही रहे; लेकिन वे ऐसे तीव्रवादी थे, जो हिंसा और आतंक का रंच मात्र भी समर्थन नहीं करते थे। ऐसे तीव्रवादी थे, जो नकारात्मक विचारों को प्रश्रय नहीं देते थे।

अगर आपका उद्देश्य पवित्र हो, आपकी दृढ़ता अडिग हो तो आप भी निश्चित रूप से वांछित लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।



खुशी किसमें है?

एक बार शंकरन पिल्लै को भगवान् से मिलने का अवसर मिला। भगवान् ने कहा, “वत्स, मैं तुम्हें तीन वरदान देना चाहता हूँ। माँग लो।”

“जो भी चीज माँगूँ, मिलेगा, प्रभो?”

“खुशी से। मगर एक शर्त है, जो भी तुम्हें मिलेगा, उसका दुगुना भाग तुम्हारे मित्र को भी मिलेगा। ठीक है?” भगवान् ने कहा।

शंकरन पिल्लै खुशी-खुशी घर पहुँचे।

“हे मेरे भगवान्! राजमहल जैसा घर मिल जाए।”

अगले ही क्षण उनका पुराना-सा घर आलीशान महल में तब्दील हो गया।

उन्होंने खिड़की से झाँककर देखा, जहाँ उनका मित्र रहता था, वहाँ दो महल शान से खड़े थे। शंकरन पिल्लै का माथा ठनका।

“खैर, अब मेरे साथ आमोद-प्रमोद करने के लिए एक सुंदरी चाहिए।” माँगते ही उनके पलंग पर रूपवती रमणी लेटी हुई मिली।

शंकरन पिल्लै अपनी जिज्ञासा को नहीं रोक पाए। खिड़की से झाँककर देखा, पलंग पर उनका मित्र दो सुंदरियों के बीच बैठा था। दोनों आपस में होड़ लगाते हुए मित्र पर प्यार बरसा रही थीं। शंकरन पिल्लै के लिए यह दृश्य असहनीय लगा। जल्दी-जल्दी अपना तीसरा वर भी माँग बैठा।

“हे भगवान्! मेरी एक आँख छीन लो।”

अपने पास जो वस्तु है, वह अगले आदमी के पास न हो, तभी लोग शंकरन पिल्लै की तरह खुश होते हैं। ये लोग अपने पास की चीज भी खोकर दुःखी होते हैं।

आप एक गाड़ी खरीदते हैं, मन बड़ा खुश होता है। अगर आपका पड़ोसी उससे भी बढ़िया कीमती कार खरीद लाए तो आपकी खुशी टाँय-टाँय फिस्स हो जाएगी। हजार साल पहले आदमी ने मोटर कार के बारे में सुना तक नहीं था। लेकिन उन दिनों अपनी गाय की तुलना में पड़ोसी की गाय ज्यादा दूध दे तो आदमी का मन बैठ जाता। गाय के बजाय अब कार आ गई है, अन्यथा बुनियादी तौर पर क्या आदमी का दुःख दूर हो गया है? नहीं न?

पिछली कुछ सदियों के अंदर मनुष्य ने अपनी सुख-सुविधाओं के लिए इस पृथ्वी का चेहरा ही बदल दिया है। दूसरे प्राणियों के अस्तित्व की कोई परवाह किए बिना उसने कीट-पतंगों, पशु-पक्षियों—सभी के स्थानों पर कब्जा कर लिया है। वृक्ष-लताओं और घास-फूस को भी नहीं बख्शा है। जमीन, पानी सभी का मनमाने ढंग से दुरुपयोग करके ऐसा माहौल पैदा कर दिया है, जिसमें साँस लेना भी दूभर लग रहा है।

यह सब किसलिए? केवल इसी लोभ से न कि अपना जीवन सुखमय बने।

खुशी के आलम में मस्त होकर वह इस पृथ्वी के गोले को आतिशबाजी की तरह जला डाले, हमें कोई एतराज नहीं है। लेकिन अपने आनंद का आस्वाद लेने की कला से अनभिज्ञ होकर पृथ्वी को लगातार ध्वस्त करते रहने का उसे कोई अधिकार नहीं है।

“क्या स्त्री-पुरुष का परस्पर आकर्षण गलत है?”

यौवन की दहलीज पर पुरुष का स्त्री के प्रति या स्त्री का पुरुष के प्रति जो आकर्षण होता है, उससे चाहते हुए भी आप मुक्त नहीं हो सकते। यह सहज व स्वाभाविक है। सही-गलत के मानदंड को लेकर उसका अनुसंधान करने की आवश्यकता नहीं है।

पाश्चात्य देशों में 'फ्री सेक्स' नाम से एक प्रथा का प्रचलन किया गया। परिवार के बंधन में फँसे बिना स्त्री और पुरुष मस्ती से रहना चाहते थे। जवानी के रहते यह मजेदार अनुभव रहा। लेकिन ढलती उम्र में सच्चे संबंधों के अभाव में कई लोग मानसिक धरातल पर उद्विग्न होकर दुःखी रहने लगे। उत्तरदायित्व लिये बिना केवल सेक्स का भोग किए उन लोगों के कारण एक पूरी पीढ़ी अनाथ होकर भटक रही है।

यह न भूलिए कि शारीरिक इच्छाओं को लाँघकर जीवन को जारी रखना पड़ता है। शारीरिक इच्छा में आवश्यकता से अधिक निमग्न होंगे, तब भी फँस जाएँगे। उसे टालने की कोशिश करेंगे, तब भी फँस जाएँगे।

मेरी एक बुआ थीं। आधुनिक विचारों की महिला थीं। लेडीज क्लब की प्रमुख पदाधिकारियों में थीं। कीमती साड़ी में सज-धजकर क्लब की गतिविधियों में भाग लेतीं। विमला नामक सदस्या और बुआ में हमेशा अनबन रहती थी। एक बार मीटिंग से लौटते ही बुआ फफक-फफककर रोने लगीं।

क्या वे प्रधान का चुनाव हार गईं? क्या उनकी गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई? अथवा कौन सा रंज है? समझ में नहीं आया।

“विमला ने आज मुझसे डटकर बदला ले लिया रे!” रोदन के बीच में प्रलाप करते हुए बुआ ने विवरण दिया। उस दिन बुआ एक नया नेकलेस पहनकर बैठक में गई थीं। साथी मेंबरों के पूछने पर नेकलेस की खूबियों के बारे में क्या-क्या बताना है, इसकी सूची मन में तैयार कर रखी थी। लेकिन अफसोस, किसी भी मेंबर ने भूलकर भी बुआ के नेकलेस पर नजर नहीं फेरी। जान-बूझकर की गई उपेक्षा नहीं तो क्या है? जरूर उस विमला के उकसाने पर ही सभी ने मेरी अवहेलना की है। रोते-रोते बुआ ने विमला को दो गालियाँ भी दीं।

बुआ ने वह कीमती नेकलेस अपनी खुशी के लिए ही खरीदा था। लेकिन चुपके से कहीं बैठकर बुआ की खुशी को छीनना विमला के लिए सुलभ हो गया।

कैसी वाहियात बात है! आपके जीवन में भी ऐसी घटना घट सकती है।

आपकी कामना का लक्ष्य क्या है? खुशी पाना, यही न?

लेकिन आप कहाँ गलती करते हैं?

आप न जाने इसके लिए क्या-क्या शर्तें लगा देते हैं। इतनी पढ़ाई करूँ, तभी खुशी होगी। मेरे पास इतना धन रहे, तभी खुशी होगी। ऐसा आभूषण पहनूँ, जिसे देख अगला ईर्ष्या करे, तभी खुशी होगी।

सभी मौकों पर बाहरी माहौल आपकी इच्छा के अनुसार नहीं बन पाता। इच्छा का मकसद समझे बगैर बाहरी परिस्थितियों को सौ तरह से बदलकर देखें, तब भी मन को चैन नहीं मिलेगा। तब, नेकलेस की इच्छा करना गलत था? गाड़ी की इच्छा करना गलत था?

नहीं, बिल्कुल नहीं। आप किसी भी चीज की इच्छा कर सकते हैं। लेकिन खुशी पाना ही आपका मकसद रहा, इस तथ्य को भूलकर खुशी के उपादान के रूप में आपके द्वारा चुने गए नेकलेस या गाड़ी में फँस जाने से ही आपकी यह बेहाली हुई।

अपनी खुशी को दूसरों की टिप्पणियों और बाहरी परिस्थितियों के लिए गिरवी रखे बिना यात्रा जारी रखें। आप इस दुनिया को ही अपनी इच्छा के अनुसार बदल सकते हैं।



नाहक अपने को न दुखाड़े

एक निश्चित वय को प्राप्त होते ही आपके ऊपर धन कमाने की बाध्यता आ जाती है। आप कोई पेशा चुनते हैं, लेकिन दूसरा पेशा उससे बढ़िया लगता है। मन डाँवाँडोल होकर सोचने लगता है, क्यों न इस काम को छोड़कर उसे चुन लें?

इच्छा और विकल्प बदलते रहते हैं, इसलिए लक्ष्य शिथिल हो जाता है।

एक नौजवान ने मेरे पास आकर अपनी लाचारी व्यक्त की, “मुझे संगीत का बड़ा शौक है। लेकिन आजीविका चलाने के लिए नौकरी करनी पड़ रही है।”

बताइए, उस युवक को कौन सा काम चुनना चाहिए था? मेरे खयाल में, संगीत के वाद्य-यंत्रों की दुकान में झाड़ू देने का ही काम मिले तो उसे खुशी से स्वीकार करना चाहिए। भले ही वह काम वाद्य-यंत्रों को झाड़ू-पोंछकर रखने का हो तो भी सौ फीसदी लगन के साथ उसमें डूब जाना चाहिए।

यों अपने आपको संपूर्ण रूप से समर्पित करते हुए काम में मग्न होने पर उसका विकास जिस तरह होना हो, स्वतः हो जाएगा।

किस क्षेत्र को चुनना है, यह तय करने की सूझ-बूझ आप में नहीं है? कोई बात नहीं। इस समय आप जो भी काम कर रहे होते हैं, उसमें पूरे मन से लग जाइए, पूर्ण रूप से अपने आपको समर्पित कीजिए। ‘पूर्ण रूप से’ का मतलब—तन-मन से उसमें लग जाना है और जरूरत पड़ने पर जान की बाजी लगाने को तैयार रहना है।

आप जो भी कर्म करते हैं, उसमें सौ फीसदी निष्ठा के साथ लग जाएँगे तो आपकी अंतश्चेतना आपको सही मार्ग पर स्वयं ले जाएगी।

काम करते समय उसमें खुशी महसूस करने की भावना आए, तभी समझिए कि आप पूर्ण रूप से काम कर रहे होते हैं। जोर-जबरदस्ती के कारण या मजबूरी में

आकर काम करने की भावना आप में आए तो उस काम को आप बेमन से कर रहे होते हैं। ऐसे में अल्सर, उच्च रक्तचाप और नाना प्रकार के रोग आपके शरीर में घर करने के लिए बिन बुलाए हाजिर हो जाएँगे।

शंकरन पिल्लै एक बार रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे थे। सुविधा से बैठने के लिए जगह मिल गई तो बैठ गए। उसके बाद भी सिर पर रखी सामान की गठरी उन्होंने नीचे नहीं उतारी, उसे ढोते हुए बैठे रहे।

टिकट बाबू आए, खाने-पीने की चीजें बेचनेवाले आए। गठरी सिर पर होने की वजह से शंकरन पिल्लै से सहज ढंग से कोई भी काम करते नहीं बन पा रहा था।

सहयात्रियों में से किसी ने उनसे पूछा, “भाई साहब, गठरी काफी बड़ी होने के कारण शायद नीचे उतारना मुश्किल हो रहा है। क्या मैं आपकी मदद करूँ?”

“शुक्रिया, ऐसी कोई बात नहीं है।”

“ओह, अब समझा! गठरी के अंदर मूल्यवान् वस्तुएँ होंगी। चोरी का भय हो तो गठरी को नीचे रखकर आप उसके ऊपर बैठ सकते हैं।”

“न, कोई कीमती सामान नहीं। पुराने-कपड़े लत्ते हैं, बस।”

“फिर उसे क्यों आप नाहक ढो रहे हैं?”

“बस, यही सोचता हूँ, अपने इस बोझ को बेकार रेलगाड़ी पर क्यों डालूँ!” शंकरन पिल्लै बोले।

जिन लोगों को शंकरन पिल्लै की तरह अपने भार को उतारना नहीं आता, वे क्या किसी काम को तरीके से कर सकते हैं? परिवार के पूरे बोझ को कंधे पर ढोने के दुःख के साथ जो लोग काम करते हैं, उनकी कौन सी इच्छा पूरी होगी?

मेहरबानी करके अपने मन के बोझ को उतार डालिए। जिस काम को आप कर रहे हैं, उसे खुशी के साथ निभाइए।

प्लेटफॉर्म पर घोषणा सुनाई दे रही है, 'आपकी गाड़ी चार घंटे विलंब से खाना होगी।'

प्लेटफॉर्म पर मौजूद सारे-के-सारे जन, हाँ, आप लोग, मुहरमी चेहरे के साथ बैठे रहेंगे, मानो कयामत आने वाली हो। प्रतीक्षा करने के चार घंटे के दौरान काँटों पर बैठने की खीझ के साथ रेल-प्रबंधन को कोसते रहेंगे।

लेकिन यात्रा के लिए इंतजार कर रहे बच्चों पर जरा गौर कीजिए। अपने हाथ में छोटी-मोटी जो भी चीज है, उसे लेकर अपनी जगह पर मस्ती से खेलते हुए मिलेंगे—किसी

“व्यापार में तरक्की पाने के लिए

किस देवता का नमन करूँ?”

यदि मैं किसी मंदिर का नाम लूँ तो आप वहाँ जाएँगे। वहाँ जो देवता विराजे हैं, उनसे सीधे संवाद करने की कला आपको नहीं आती। इसलिए आप मंदिर के पुजारी को भगवान् का एजेंट मान लेंगे। उसके हाथ में दस रुपए रखेंगे। आपका नाम, नक्षत्र, राशि और पता आदि का उल्लेख करते हुए वह एजेंट मंदिर के देवता का आवाहन करेंगे।

यही कहेंगे, 'हे भगवान्! इस अक्लमंद आदमी ने तुम पर भरोसा रखते हुए दस रुपए खर्च हैं। इसके बिजनेस को तुम्हीं उबार दो।'

क्या भगवान् आएँगे? यहाँ बैठा कोई महामूर्ख भी आपके दिए दस रुपए के लिए आपके बिजनेस की देखभाल नहीं करेगा। मुंडन करके आपके द्वारा समर्पित बालों के गुच्छे या गोलक में डाले गए सिक्के-चिल्लर पर खुश होकर जमाने पर आपकी परवरिश का भार लेने के लिए क्या भगवान् इतने भोंदूमल हैं!

किस कदर अद्भुत यंत्र के रूप में प्रभु ने मनुष्य का सृजन करके संसार में भेजा है। प्रभु को जो काम करना था, उसे बड़े अच्छे ढंग से उन्होंने निभा दिया। अब तो बेटे, तेरे कौशल की बारी है।

अपनी क्षमताओं को प्रस्तुत करते हुए मैदान में उतरने का वक्त है यह। अब भी आप भगवान् को पुकारते रहेंगे तो इसका क्या मतलब है? आप एक करोड़ रुपए देंगे, तब भी भगवान् आपके लिए अपनी छोटी उँगली तक हिलाएँगे नहीं।

अगर अपने व्यापार की देखभाल करने का सलीका आपको नहीं आता तो व्यापार आपके किस काम का!

तरह की खीझ के बिना। बच्चे अनावश्यक रूप से अपने आपको दुःख नहीं देते। जो भी क्षण सामने हैं, खुशी से उनका आनंद लेते हैं। बिना कोई झंझट पाले अपने जीवन को पूर्ण बना लेते हैं। लेकिन आप? जिंदगी में खुशी पाने के मकसद से अपने आपको दुःखी बना लेते हैं। फिर भी आनंद लूटने का गुर न जानकर हार जाते हैं।

परेशान हुए बिना, तनाव के दबाव में आए बगैर जिस काम को करना हो, उसे जिम्मेदारी की भावना के साथ निभाइए। रेलगाड़ी न मिले तो बस पकड़ सकते हैं या टैक्सी ले सकते हैं। दूसरे किसी साधन के बारे में पूछताछ कर सकते हैं। कोई भी साधन मिलने की गुंजाइश न हो तो प्रतीक्षा करने का जो समय मिला है, उसे आनंदपूर्वक काट सकते हैं। दुःखी होने से मन का बोझ कम होने वाला नहीं है। खुशगवार जन ही किसी भी काम को अनायास खेल-खेल में कर सकते हैं।



बुरी आदतें कौन सी हैं?

छुटपन से ही बड़ों की यह नसीहत सुनते-सुनते कान पक गए हैं, 'बुरी आदतों का गुलाम न बनो। बेटे, जिंदगी में अच्छी आदतें पाल लो।'

आप मुझसे पूछेंगे तो मैं यही कहूँगा, 'कोई काम करते हुए आपके मन में खुशी का अनुभव न होता हो तो आदतन किया जानेवाला वह काम लचर ही होगा।'

आप घड़ी में अलार्म लगाकर सुबह उठते हैं, अफरा-तफरी के साथ नित्यकर्म से निपट, नहा-धोकर नाश्ता ठूस लेने के बाद स्कूटर, गाड़ी या बस से दफ्तर पहुँचते हैं। वहाँ पर भी शाम तक उन्हीं अभ्यस्त कामों को लकीर के फकीर की तरह पूरा करते हैं। काम पूरा करके घर लौटते हैं, भोजन करने के बाद सोकर, फिर उठकर ...

गाड़ी में जुता हुआ बैल जिस तरह गाड़ी खींचते हुए रोज उसी निश्चित स्थान पर जाकर लौटता है, चालीस-पचास सालों को इसी भाँति घिसाकर आँखें मूँद लेना, यह भी कोई जिंदगी है!

एक बड़ी मशीन के अंदर लगे हुए सैकड़ों पुरजों में एक हैं आप, दाँतोंवाले उन चक्रों में एक, बस। पास वाला पहिया जब आपको चलाता है, उसके अनुसार आप अपने निकट लगे पहिए को घुमाते हैं। अब आप इस बदहाली में पहुँच गए हैं कि दूसरे पहियों के घूमने के आधार पर ही आपकी गति तय होती है।

माना कि आप किसी संस्था के अध्यक्ष हैं या कारखाने के मालिक हैं। फिर भी, यदि आप आदत के गुलाम हो जाएँ तो आपकी आजादी छिन जाएगी न!

शंकरन पिल्लै एक दफा शराब पीने के बाद बार से निकले तो देर बहुत हो गई थी।

दोस्तों ने उन्हें छोड़ा, "अरे पिल्लै, आठ बजे तक घर पहुँच जाना चाहिए, यही है न तुम्हारी बीवी का हुक्म!"

शंकरन पिल्लै ने सीना तानकर जवाब दिया, "नो-नो, अपने घर में मुझे पूरी आजादी है।" फिर बड़ी मस्ती के साथ कदम बढ़ाते हुए घर का रास्ता लिया। द्वार पर पहुँचते ही आफत का अनुमान हो गया। बीवी की कमजोरी का उन्हें पता जो है। बड़ी फुरती के साथ उसे पार करते हुए अंदर भागे। मोटी-तगड़ी बीवी तेजी से उनके पीछे दौड़ नहीं पाई। घर के कई हिस्सों में खदेड़े गए शंकरन पिल्लै आखिर पलंग के नीचे जाकर छिप गए।

बीवी से पलंग के नीचे झुकते नहीं बना। वह चिल्ला उठी, "अरे, तुम चूहे हो या इन्सान! बाहर निकलो!"

शंकरन पिल्लै ने बड़ी शान से जवाब दिया, "मैं इस घर का राजा हूँ। घर के अंदर कहाँ लेटना है, इसे तय करने की पूरी आजादी मुझको है, समझी!"

आप में से कई लोग शंकरन पिल्लै की ही तरह आजादी के साथ जीने का खयाल करते हुए अपने आपको ठग रहे हैं।

काम पर लगने के पहले दिन आप जिस कुरसी पर बैठे थे, उस समय वह स्वर्ग के समान लगी थी। आज वही कुरसी आपके अंदर रक्तचाप, अल्सर और हृदय रोग पैदा करनेवाला नरक बन गई। खुशी मिलेगी, यही सोचकर तो आपने इस नौकरी को चुना था। अभ्यस्त होने के बाद खुशी को छोड़कर आप बाकी सब चीजों का अनुभव कर रहे हैं, क्यों?

जैसे कि नाव पर यात्रा करने के लिए पतवार लेनेवाला नाव को छोड़कर सिर्फ पतवार को जोर से थामे रहता है, आपकी हालत भी वैसी ही बन गई है। अपनी सूझ-बूझ और चौकसी का उपयोग किए बगैर लकीर के फकीर

की भाँति किए हुए काम को बार-बार करने के लिए आप भी कोई मशीन हैं!

एक ही पन्ने की सैकड़ों फोटोकॉपियाँ लेकर उन्हीं पन्नों को एक-एक करके पढ़ने की तरह जिंदगी के सारे दिनों को कैलेंडर में फाड़ते रहने का नाम जिंदगी है क्या?

पूर्ण रूप से जीने का मतलब क्या है, क्या आपने कभी यह सोचा है?

क्या आप किसी भी दिन सुबह-सुबह जागकर चहचहाती चिड़ियों का कलरव सुनकर मस्त हुए हैं? कितने दिन अपने शरीर के एक-एक पोर में पानी की बूंदों के उतरने के आनंदानुभव में रमते हुए नहाए हैं? गाड़ी चलाते समय चिंतन का भटकाव रोककर कितने दिन मनोयोग के साथ गाड़ी चलाई है?

भोजन चाहे जितना रुचिकर हो, पहले निवाले को स्वाद लेकर आनंद से खाते होंगे। बाद के निवालों को आपका हाथ आदतन ले जाकर मुँह में रखेगा। मुँह अपनी आदत के मुताबिक चबाकर रसदार बनाने के बाद पेट के अंदर भेजेगा। मुँह में रखा भोजन चबाया

“मेरा मन अशांति के साथ भटक रहा है, क्यों?”

ऐसी बात है? लगातार दस मिनट अपने मन पर गौर कीजिए। वहाँ जन्म लेकर चारों तरफ लहर की तरह भटकते चिंतनों को ईमानदारी के साथ एक कागज पर दर्ज करते जाइए।

थोड़े दिनों का अंतराल देकर उसे अपने मित्र को दिखाइए। या आप खुद भी उसे पढ़ सकते हैं। आप आश्चर्यचकित हो जाएँगे कि अब तक आप पागल हुए बिना कैसे रहते हैं।

इस समय भी आप में और किसी मानसिक रोगी में कोई अंतर नहीं है।

एकमात्र सांत्वना यही है कि आपने अपने पागलपन को समाज के द्वारा निर्णय की गई सीमा के अंदर रख छोड़ा है। उसे बाहर की दुनिया से छिपाकर नाटक खेलने की आपकी चालाकी ही अब तक आपकी रक्षा किए हुए है।

पागलपन को छिपाकर रखने मात्र से आपकी समस्याओं का अंत नहीं होगा।

संपूर्ण जागृति के बिना यदि आपका जीवन यंत्रवत् चलता रहे तो कभी भी मन को शांति नहीं मिलेगी। प्रत्येक क्षण पूर्ण रूप से जीवन को जीकर देखिए। मन बेकार के अपने भटकाव को बंद कर देगा।

जाकर किस तरह आहार नली के माध्यम से उतरकर पेट में जा रहा है, इस प्रक्रिया पर कभी पूर्ण रूप से गौर किया है?

‘सदा प्रसन्न रहना चाहिए’, अपनी इस इच्छा को भूलकर काम-धंधे में फँस जाने के कारण अब आप यही जवाब देंगे, “भला इन सब गोरख-धंधों में कौन अपना समय बरबाद करेगा!”

क्या आप केवल नाक द्वारा साँस लेने और छोड़ने के लिए इस धरती पर आए हैं? श्वासोच्छ्वास का कार्य तो प्राणों को शरीर में धारण करने मात्र के लिए काम आता है। जीवित रहना अलग है, जीना अलग है। एक पल, कम-से-कम एक पल का वक्त पूरी चेतना के साथ जीकर देखिए, आपके जीवन की दिशा ही बदल जाएगी।



क्या प्रेम भी कोई माया है?

जब आप नौजवान थे, उन दिनों आपकी आशा-अभिलाषाओं में सबसे प्रमुख स्थान किसका था?

प्रेम का, है न!

मैंने कॉलेज-प्रांगणों में कई प्रेमी युगलों को देखा है। ये जोड़े एक साथ यां चहकते फिरते हुए मिलेंगे, मानो एक-दूजे के लिए बने हों। नयनों में एक खास चमक होगी, चेहरों पर आनंद और उल्लास का उभार। मस्तानी चाल और अविरल वार्त्तालाप से पूरे माहौल को सरस बना देने का सलीका। उछलते-मचलते हुए उनका वह स्वच्छंद विचरण देखें तो लगेगा कि यह सिलसिला कयामत तक जारी रहेगा।

माँ-बाप, समाज और संस्कृति को धत बताते हुए ये लोग विवाह-सूत्र में बँध जाएँगे।

लेकिन पाँच-छह साल बाद उन्हें देखने का मौका मिले तो आप निश्चित रूप से चौंक उठेंगे। हुलिया इतना बदल गया होगा कि आप पहचान नहीं पाएँगे। अभी चार-पाँच साल पहले जो जोश और जीवट के पुतले बनकर घूम रहे थे, आज कहाँ गई गालों की लालिमा, चेहरे की वह कांति, वह मस्तानी चाल? बेचारे सूखकर काँटा बन गए हैं। खोए-खोए-से घूम रहे हैं, जैसे उनका सर्वस्व नष्ट हो गया हो।

जिस शख्स की याद आने मात्र से चेहरे पर आह्लाद खिल उठता था, अब उसकी निकटता वेदना का पर्याय बन गई होगी। ऐसा क्यों होता है?

प्रेम की सघनता के उन दिनों में जब वे एक-दूसरे को प्राणों से ज्यादा प्यार करते थे, गिला-शिकवा के बिना घंटों बैठकर इंतजार करते थे। भूख-प्यास, धूप-बारिश किसी का बोध नहीं रहता था। समय का बोध भी नहीं।

जब सपने साकार हो गए तो वहाँ व्यापार का प्रवेश हो गया। मुहब्बत को पूँजी के रूप में मानकर जिंदगी शुरू करने के थोड़े ही समय बाद ऊबन, दर्द और खीझ का आलम छा जाए तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

एक दिन पार्क में शंकरन पिल्लै की मुलाकात एक सुंदर लड़की से हो गई। वह बेंच पर बैठी थी। पिल्लै उसके समीप जाकर बैठ गए। जब वह सुंदरी वहाँ से हटने लगी तो शंकरन पिल्लै ने उसके सामने घुटने टेक दिए।

“जानेमन, मैं तुझे प्राणों से ज्यादा प्यार करता हूँ। तेरे बिना मैं एक पल भी नहीं जी सकता। ‘न’ कह दोगी तो अभी जान दे दूँगा।” शंकरन पिल्लै ने भावुक होकर प्रणय-निवेदन किया। वह लड़की उनके लल्लो-चप्पो पर मुग्ध हो गई। वह इत्मीनान से शंकरन पिल्लै की गोद में लेट गई।

फिर क्या था! शंकरन पिल्लै उसके साथ जी भरकर प्रेम-व्यापार में लगे रहे। लड़की भी पिल्लै जैसे आराधक को पाकर निहाल हो गई। समय के गुजरने का एहसास नहीं हुआ। शाम के साढ़े सात बज गए। शंकरन पिल्लै ने कलाई की घड़ी देखी। हड़बड़ी में उठ गए। लड़की ने गुहार की, “मेरे सनम, मुझे छोड़कर जाना नहीं।” अभी भी वह पिल्लै के मोह-जाल में फँसकर उन पर फिदा थी।

शंकरन पिल्लै ने कहा, “हाय, मैंने अपनी पत्नी को वादा किया था कि आज जल्दी घर लौट आऊँगा। उफ, देर हो गई है।”

“क्या कहा, पत्नी? अभी तो आप कह रहे थे कि युग-युगों तक मुझसे प्यार करेंगे। हाय, मैं भी उसे सच मान बैठी।” लड़की रोने लगी।

“अरी बेवकूफ! मुहब्बत जो है, अली बाबा के ‘खुल जा सिमसिम’ की तरह अपना उल्लू सीधा करने का एक मंत्र है, बस।” यों कहकर शंकरन पिल्लै ने उसका परित्याग कर दिया।

शंकरन पिल्लै के सरीखे व्यवहार को क्या हम प्रेम कहकर पुकार सकते हैं?

कोई स्त्री और पुरुष बैठकर यदि कुछ बातों का आदान-प्रदान करें, मुँह-जबानी कुछ चीजों के लेन-देन का वादा करें तो बिना लिखत-पढ़त का वह समझौता प्रेम कहा जाएगा।

आपको सामाजिक स्तर पर एक साथी की जरूरत है। वह शारीरिक इच्छा की पूर्ति के लिए हो सकता है, मानसिक संतोष के लिए हो सकता है या आर्थिक सुविधा के लिए हो सकता है। लेकिन इस तरह की जरूरतों से जो पैदा होता है, निश्चय ही वह प्रेम नहीं है।

जो लोग प्रेम की बुनियाद को समझे बिना विवाह को सामाजिक सुरक्षा मात्र मान लेते हैं,

मृत्यु के बाद स्वर्ग जाऊँगा या नरक?

इस समय प्राप्त जीवन को खुशी के साथ जीना न जानकर जो लोग उसे संकटपूर्ण बना लेते हैं, वे ही स्वर्ग की चिंता करते हैं, जो कि अज्ञात और अनिश्चित है।

सारा खेल खत्म होने के बाद जब कुछ भी शेष नहीं रहेगा, यह सवाल कोई अहमियत नहीं रखता कि जाना कहाँ है? गंतव्य स्थान स्वर्ग हो या नरक, वहाँ की रीति-नीति और नियमों के बारे में आपको क्या पता? फर्ज करें कि वह स्थान नरक निकला, ऐसा हो तो यहाँ प्राप्त स्वर्ग को खुशी से जिए बिना इसे नरक बनाने का पछतावा होगा न?

यहाँ पर जो जीवन मिला है, उसके एक-एक क्षण को प्रेम और स्नेह के साथ जिएँ। प्रत्येक साँस में खुशी का एहसास हो। कोई भी काम करें, उसमें पूरी लगन हो।

ऐसा जीना छोड़कर इहलोक के जीवन को नरक बनाने के बाद अज्ञात स्वर्ग के लिए योजना बनाने जैसी मूर्खता और कोई नहीं है।

वे प्रेम की हत्या ही कर सकते हैं। इस इंतजाम में जाने क्या-क्या सुविधाएँ मिल सकती हैं, लेकिन केवल आनंद नहीं मिलेगा। पीढ़ी-दर-पीढ़ी यही दुर्योग चलता चला आ रहा है।

म्याँमार का एक जवान दूसरे विश्व युद्ध के बाद फौज से निवृत्त होकर कोई और नौकरी करने चला गया। दरअसल उसने अपनी फौजी सेवा के दौरान दुश्मनों के घमासान हमले का सामना कुल पंद्रह मिनट तक किया होगा। वह उस पंद्रह मिनट की घटना का वर्णन घंटों तक करता रहता—“एक तरफ अमेरिका बमबारी कर रहा था, दूसरी तरफ जापानी बम कहर मचा रहा था। जिस दिशा में मुड़ो, बंदूकों की ठाँय-ठाँय, तोपों की गूँज। आसमान पर चिनगारियाँ, उनके बीच में काला कजरारा धुआँ।” लड़ाई का वर्णन करते नहीं अघाता था।

अगर उससे पूछा जाए, लड़ाई के बाद आपने क्या किया? उसका मुक्तसर जवाब मिलता, “विक्रय प्रतिनिधि का काम कर रहा हूँ।” अगले पच्चीस साल के कार्य-कलाप को एक ही वाक्य में समेट डालता।

उस जवान ने उन पंद्रह मिनटों में ही जिंदगी को तीव्रता के साथ जिया था। इसी तरह प्रेम के दीवानों का बहुत ही कम समय प्रेम की गहनता में जिया जाता है। इसीलिए प्रेम करने के दिनों का बयान करते समय आपने देखा होगा, बूढ़ों के चेहरे पर भी एक चमक कौंध रही होती है।

इस प्रकार के महिमामय प्रेम को आप आपसी सहायता की योजना यानी ‘म्यूचुअल बेनिफिट स्कीम’ न समझें। प्रेम व्यापार नहीं है, माया भी नहीं। वास्तव में, वह एक उदात्त भावना है।



कौन किसका मेल है?

बी स वर्ष की उम्र पार करते ही युवकों से यूँ पूछना एक रस्म-सा हो गया है, “शादी की दावत कब दे रहे हो, बेटे?”

शिक्षा और नौकरी की तरह समाज में शादी भी प्रतिष्ठा के प्रतीक के रूप में मानी जाती है। शादी कर लेना अपने लिए जरूरी है या नहीं, इस बात पर विचार किए बिना दूसरे लोगों की देखा-देखी जो लोग इसमें फँस जाते हैं, तीसरे ही दिन इतने निस्तेज दिखते हैं मानो उनका सबकुछ लुट गया हो।

विवाह की ही बात नहीं, आप जो भी काम करें, यह न भूलें कि उसके उत्तर-परिणाम बाढ़ की तरह जोर-शोर के साथ आएँगे ही। उनका सामना करने के लिए अपने आपको तैयार कर लेने के बाद ही काम में उतरना चाहिए।

बुजुर्ग लोग छोटों को निस्स्वार्थ प्रेम करने की कला नहीं सिखाते। लेकिन लड़कियों के माता-पिताओं में अधिकांश लोग अपनी पुत्री को बरबस यह उपदेश दिया करते हैं, “बेटी, ससुराल में सबका मन रखना, भले ही खुद झुकना पड़े।” अपनी बेटी की जिम्मेदारी दूसरे व्यक्ति को सौंपने का ही विचार लेकर ये लोग बेटी के लिए वर ढूँढ़ते हैं।

शंकरन पिल्लै की अविवाहित बेटी अचानक एक दिन गर्भवती बनकर उनके सामने आ खड़ी हुई। शंकरन पिल्लै आगबबूला हो गए। तैश में आकर बेटी की खूब पिटाई की। उसे झकझोरते हुए पूछा कि यह किसकी करतूत है? बेटी ने रोते-रोते उस आदमी का नाम बताया। शंकरन पिल्लै ने हाथ में पिस्तौल ले ली। सीधे उस आदमी के घर चले गए। महलनुमा उस मकान के दरवाजे पर लात मारकर उसे खोल दिया। पलंग पर लेटे हुए उस नौजवान के माथे पर पिस्तौल की नली टिका दी।

नौजवान गिड़गिड़ाया, “जल्दी न कीजिए। आपस में बातचीत करके हम इस मसले को सुलझा सकते हैं। यही हम दोनों के लिए अच्छा रहेगा।”

शंकरन पिल्लै दहाड़ पड़े, “माना कि तुम शहर के नामी-गिरामी बिजनेसमैन हो, लेकिन तुमने एक मासूम कन्या के साथ छल किया है, उसे धोखा दिया है। आज मेरे हाथों तेरी मौत तय है।”

“जी, आपकी बेटी के लड़की हुई तो मैं उसे दस लाख रुपए देने वाला हूँ।”

“लड़का हुआ तो?”

“बीस लाख दूँगा।”

शंकरन पिल्लै ने पिस्तौल समेटकर बैग में रख ली। नौजवान के सामने बड़े अदब के साथ खड़े हो गए। उसके सामने झुकते हुए पूछा, “सर, संयोग से अगर गर्भपात हो जाए तो आप उसे दूसरा मौका देंगे?”

ऐश्वर्य और सुख-सुविधाओं को ही मापदंड मानकर विवाह तय करनेवाले लोगों और शंकरन पिल्लै में कोई ज्यादा अंतर नहीं है। चाहे पुरुष हो या स्त्री, खाता-पीता परिवार, मोटी तनख्वाह—इन बातों को ही विवाह के लिए संगत मानना उचित नहीं है।

मन के मेल-मिलाप के बारे में विचार किए बिना दूसरे कारकों को तरजीह देते हुए दो जनों को विवाह-सूत्र में बाँधना ही अधिकांश वैवाहिक संबंधों के कड़वा होने का बुनियादी कारण है।

विवाहित जीवन को सुखमय बनाने के नुस्खों पर पश्चिम के देशों में सैकड़ों किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं, अनेक पुस्तकें निरंतर लिखी जा रही हैं। दिन में इतनी बार 'आई लव यू' बोलो ... कम-से-कम इतनी बार बीवी को स्पर्श करते हुए बातें करो ... कम-से-कम इतनी बार चुंबन लो—यों प्यार के गणित सिखाते हैं।

नवजात शिशु को दिन में कितनी बार चूमना चाहिए, इसकी गणना सिखानेवाले विशेषज्ञ भी वहाँ मौजूद हैं। इन सारी बातों को पढ़कर प्रत्येक व्यवहार को उँगलियों पर गिनते हुए अनुसरण करते रहें तो एक हफ्ते के अंदर पागलखाने में पहुँचना तय समझिए।

प्रेम यदि सच्चा हो तो गले लगाने या चुंबन लेने के सही समय का चयन अपना हृदय कर लेगा।

किसी दंपती के विवाह की पच्चीसवीं सालगिरह खूब जोर-शोर से मनाई जा रही थी। पति

मुझे फिल्म देखने का शौक है, मेरी पत्नी को फिल्म बिल्कुल पसंद नहीं है। इसी कारण हमारे बीच में अकसर कहा-सुनी हो जाती है। इसके लिए कोई उपाय बताएँगे?

बताइए, आपने शादी किसलिए की? फिल्म देखने के लिए? खुशी से जीने के मकसद से ही न?

भले एक ही पौधे पर खिले हों, दो फूल एक जैसे नहीं रहते। दुनिया भर में तलाश कीजिए, आपकी पत्नी की तरह दूसरी कोई स्त्री नहीं मिल सकती है। उसकी विशिष्टता का सम्मान कीजिए।

जो बातें आपको पसंद हैं, उन्हीं को करने के लिए उस पर जोर न डालिए।

क्या फर्क पड़ेगा, फिल्म देखने को मिले या न मिले, निजी मकान मयस्सर हो या न हो, संतान-लाभ हो या न हो। छोटी-छोटी बातों पर दुखी होकर उस भार को पत्नी पर न लादें। क्या आपने अपने दुःखों को बाँटने के लिए उनसे शादी की है? अपनी खुशियों को दुगुना करने के लिए ही आप दोनों एक हुए थे।

दोनों की प्रसन्नता को महत्त्व दीजिए। फिल्मों के बिना भी जीवन आनंदमय बन सकता है।

की आँखों से अश्रुओं की अविरल धारा बहने लगी। पत्नी यह देखकर गद्गद हो गई और उसने पति को आगोश में ले लिया।

“मेरे सनम, मेरे ऊपर इतनी मुहब्बत! किसलिए इतने भावुक हो रहे हो?”

पति अश्रुओं को रोकने में असमर्थ होते हुए बोला, “प्रिये, जब हम दोनों प्रेम में दीवाने होकर मस्ती से घूम रहे थे, तब तुम्हारे पिताजी न्यायाधीश रहे थे, याद है न?”

“हाँ।”

“हमारे मामले का पता चलते ही वे मुझे ढूँढ़ते हुए आ गए। बोले, ‘अगर तुम मेरी बेटी से शादी किए बिना उसे धोखा दोगे तो तुम्हें पच्चीस साल तक जेल के सीखचों के पीछे डाल दूँगा, समझे?’ अगर मैंने उनकी धमकी से डरे बिना साहस दिखाया होता तो आज मुझे आजादी मिल गई होती।”

तो क्या शादी का दूसरा नाम यातना है?

नहीं, बिल्कुल नहीं।

विवाह एक ऐसा प्रसंग है, जिसमें दो प्राण आपस में एक-दूसरे को समझते हुए जीवन को आनंदमय बना लें। सच्चा प्रेम बाँटने का अमूल्य अवसर है यह।

लेकिन शादी के बाद पति-पत्नी का संबंध एक-दूसरे से मिलनेवाले लाभ पर लक्षित हो जाए तो जीवन में क्रोध, उलाहना, क्षोभ और आक्रोश की लहरें बारी-बारी से उफन पड़ेंगी। भले ही दोनों अदालत का दरवाजा न खटखटाएँ, परिवार के स्तर पर विवाह असफल ही माना जाएगा।

दांपत्य का रिश्ता तभी मधुर बना रहेगा, जब आपस में लाभ-हानि की सौदेबाजी की भावना न टकराए। यदि वहाँ प्रेम के सुमन खिले होते तो जीवन की ऊँच-नीच राहों में कभी गड़ढे-खाई में गिरना पड़े, तब भी घाव-खरोंच के बिना जीवन-यात्रा को सुगमता से तय कर सकते हैं।



लगाव बुरा नहीं है

‘इच्छा ही दुःखों का कारण है’, ऐसी सीख देनेवालों के मुँह से आपने यह भी सुना होगा, ‘किसी व्यक्ति या वस्तु पर आसक्ति न बनो, उस पर लगाव न रखो। मोह, आसक्ति या लगाव तुम्हारे विकास के पथ के रोड़े हैं।’ यों कहकर वे लोग आपको धमकाते हैं।

आप तो स्नेह और आसक्ति के साथ जीने के अभ्यस्त हैं, इसलिए उपर्युक्त वर्जना को सुनकर आप पशोपेश में पड़ सकते हैं।

‘किसी के साथ कुछ भी हो जाए, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।’ ऐसी उपेक्षा या लापरवाही का भाव ‘अनासक्त रहना’ है—ऐसा गलत अर्थ लेना निश्चय ही अपने आपको धोखा देना है।

किसने कहा, लगाव होने पर विकास नहीं होगा?

धरती पर आसक्त होकर जब पेड़ अपनी जड़ों को माटी के अंदर गहराई से फैलाता है, तभी वह स्वस्थ रूप में पनपता है, अनेक पक्षियों को आश्रय देता है, हवा में प्राणवायु का प्रवाह करता है, फलों को प्रदान कर उपकार करता है। यदि उसे धरती से अलग कर दें, उसे उखाड़कर फेंक दें तो वह नष्ट हो जाता है।

आपके विषय में भी यही बात सही है। किसी के कहने में आकर यदि आप स्नेह-बंधन के धरातल से अपने आपको जबरदस्ती छुड़ाने की कोशिश करेंगे तो निश्चित रूप से स्वयं को घायल कर लेंगे। यदि आपकी सहज प्रकृति स्नेह करने की ओर आसक्त रहने की है तो आप अपनी प्रकृति को बदलने का प्रयत्न मत कीजिए।

कोई व्यक्ति मेढक को लेकर शोध कर रहा था। मेढक को उसने इस तरह प्रशिक्षित किया था कि यदि वह कहता, ‘कूदो’ तो मेढक तुरंत कूदता। शोध के दौरान वह मेढक की एक टाँग को काटने के बाद बोला, ‘कूदो’। बेचारा मेढक तीन टाँगों

के साथ थोड़ा मुश्किल से कूद पाया। दूसरी टाँग काटकर उसने कहा, ‘कूदो’, तब भी मेढक कष्ट के साथ कूदा। तीसरी टाँग काटने पर अत्यंत वेदना के साथ एक टाँग से किसी तरह कूदा था। अंत में चौथी टाँग को भी काटकर उसने आदेश दिया, ‘कूदो’। सरकने में असमर्थ होकर मेढक ने उसे कातर दृष्टि से देखा तो वह बार-बार मेढक को कूदने के लिए कहते हुए चिल्लाने लगा

मेढक बिल्कुल भी हिला नहीं।

उस व्यक्ति ने अपने शोध का निष्कर्ष इस प्रकार लिखा—‘चारों टाँगों को निकाल देने पर मेढक की श्रवण-शक्ति समाप्त हो जाती है।’

इसी तरह कुछ लोग कोई बात होने पर और किसी नतीजे पर पहुँचकर सिद्धांतों की स्थापना कर देते हैं। दुःख के आधारभूत कारण को सही ढंग से समझे बिना यह घोषणा कर देते हैं—इच्छा या आसक्ति से ही दुःख उत्पन्न होता है। आसक्ति रखने पर दुःख कब होता है?

आपके बच्चे को स्कूल से ला रहा रिक्शा आपकी आँखों के सामने उलट जाता है। तब आप क्या करेंगे? रिक्शा की ओर भागेंगे। नीचे गिरे हुए बच्चों में से पहले अपने बच्चे को उठाएँगे।

बच्चों के प्रति स्नेह करने का आपका दावा हो तो आप किसी भी बच्चे को उठा सकते थे।

असल में, वहाँ बच्चों के प्रति स्नेह काम नहीं कर रहा था। ‘वह अपना बच्चा है’, यों उसके साथ निजी संबंध जोड़ने की भावना ने ही उस समय आपको संचालित किया था। ‘मैं’ और ‘मेरा’ का विचार उभर आया था।

जब तक कोई व्यक्ति आपका मित्र बना रहता है, तब तक आप उनसे स्नेह करते हैं। जब वह दुश्मन बन जाता है, तब उससे नफरत पैदा हो जाती है। बताइए, पहले उसे केवल व्यक्ति मानकर आप स्नेह करते थे? नहीं न। 'वह अपना मित्र है', यही मानकर आप उस पर आसक्त हुए थे।

किसी भी रिश्ते में खुद को हटाकर दूसरे को आगे रखते हुए उससे स्नेह करना आपके लिए संभव नहीं था। अपने को आगे रखकर ही किसी के प्रति आसक्त हुए थे। इस तरह एक संकीर्ण दायरे में अपने को समेटते वक्त आसक्ति रखें, तब भी दिक्कत होती है, आसक्ति को हटाने पर भी समस्या होती है।

मेरे पास योग सीखने के लिए आनेवालों में कुछ लोग शिकायत करते हैं कि कुछ चीजें

परिवार को तजकर आध्यात्मिक मार्ग पर बढ़ना परिवार के साथ किया जानेवाला विश्वासघात है।

यदि आप आध्यात्मिक मार्ग पर बढ़ना चाहते हैं तो इसके लिए अपने को किसी से अलग कर लेने की कोई जरूरत नहीं है। लेकिन यदि जो परिवार है, संतानों की उत्पत्ति करने और किसी के साथ जटिल संबंध जालों को बुनने का स्थान रह जाए तो वहाँ किसी भी समय कलह फूट सकता है। अगले व्यक्ति को उसी रूप में स्वीकार करने की मानसिकता के बिना केवल सहिष्णुता के कारण रिश्तेदार आपस में मिले रहें तो मौका आने पर वह परिवार अपने आप फूट जाएगा। इसका कारण लोगों में परिपक्वता का अभाव ही है, निश्चित रूप से अध्यात्म नहीं।

उन्हें पसंद नहीं हैं। तब मैं उन्हें एक कागज देता और कहता कि जो चीजें पसंद हैं, उनकी सूची बनाएँ।

काफी देर तक दिमाग पर जोर डालने के बाद वे लोग कुछ लिखकर मुझे वह कागज लौटाते। उसमें आधा दर्जन आसनों के नाम लिखे होंगे। मैं पूछता, "इतने विशाल जगत् में आपकी पसंद की चीजें बस, छह-सात ही हैं?" उनसे कोई जवाब देते न बनता।

इच्छा-अनिच्छा के नाम पर यदि हम अपनी दृष्टि को संकुचित बना लेंगे तो कितनी ही अनोखी बातें अपनी पसंद की सूची में स्थान नहीं पाएँगी। नतीजन इस जगत् की पूर्णता का अनुभव करना आपके लिए कभी संभव नहीं होगा।

अनासक्त होकर सबसे अलग-थलग रहना स्वतंत्रता नहीं है, विकास नहीं है। सबको आत्मसात् करते हुए विश्वरूप लेकर दिखाना ही वास्तविक विकास है। जब वायु और सुगंध एक-दूसरे पर पूर्ण आसक्त होकर एकाकार होती हैं तो एक से दूसरे को अलग करके देखना संभव नहीं होता।

किसी पर आपकी आसक्ति में भी यही गहनता रहनी चाहिए।

आप उनके साथ यों पूर्ण रूप से जुड़ जाएँ, इस तरह एकाकार हो जाएँ कि दोनों को अलग करके देखा न जा सके। तब 'अन्य' या 'पराया' के बोध के लिए स्थान कहाँ!

तब यह सवाल ही नहीं उठता कि उसके साथ मिलकर रहें या उससे हटकर रहें। तब यह प्रश्न भी नहीं उठता कि उस पर आसक्ति रखें या न रखें। फिर काहे का दुःख और कैसा दर्द!

इस जीवन में एक जीव को अपने प्राण समान प्रिय मानकर उसे स्वीकार करने के समान उदात्त अनुभव और कौन सा हो सकता है। 'मैं' और 'मेरा' के विचार को हटाकर जब आप थोड़ा-थोड़ा करके जगत् के साथ पूर्ण आसक्त बनेंगे, तब आपका जीवन परिपूर्ण बन जाएगा।



कर्तव्य—विदा कर दीजिए इस शब्द को

बचपन से ही बड़ों ने आपके अंदर 'कर्तव्य' की घुट्टी पिलाई होगी।

बेटे को पढ़ाना-लिखाना पिता का कर्तव्य है; बूढ़े माता-पिता की देखभाल पुत्र का दायित्व है; छात्र को शिक्षा देकर तैयार करना अध्यापक का कर्तव्य है; कानून का पालन करना नागरिकों का कर्तव्य है—यों कर्तव्यों की सूची बड़ी लंबी है।

कर्तव्य मानकर आप जो भी काम करेंगे, उसमें आप जरूर थकान महसूस करेंगे। तनाव के कारण रक्तचाप बढ़ने की भी संभावना है।

जूतों की कंपनी के मालिक एक दिन अपने कारखाने का निरीक्षण करने निकले। पैकिंग अनुभाग में काम बड़ी मुस्तैदी से चल रहा था। बॉस को देखकर मैनेजर ने बड़े गर्व के साथ कहा, “सर, इन कर्मचारियों को अच्छी तरह समझाया गया है कि इधर-उधर झाँको नहीं; अगला व्यक्ति क्या कर रहा है, उस पर ध्यान दिए बिना सबको अपना कर्तव्य निभाना चाहिए।”

मालिक ने देखा—एक कर्मचारी ने गत्ते का बॉक्स निकालकर उस पर लेबल चिपकाया और उसे अगले कर्मचारी के पास सरका दिया। दूसरे ने उसमें एक जूता रखा और आगे बढ़ाया। तीसरे कर्मचारी ने बॉक्स बंद करके चिपका दिया। अब वह बिक्री अनुभाग भेजे जाने के लिए गाड़ी में चढ़ाया गया।

यह देख मालिक सकपका उठे। बोले, “अरे, क्या हो रहा है यहाँ? जूतों को हम जोड़ों में न तैयार करते हैं? क्यों एकल जूते को पैक कर रहे हैं ये लोग?”

मैनेजर ने इत्मीनान से जवाब दिया, “बाएँ पाँव का जूता बॉक्स में रखनेवाला

लड़का आज छुट्टी पर है, सर! फिर भी देखिए, जो लोग आए हैं, अपना काम पूरी जिम्मेदारी के साथ निभा रहे हैं।”

किसी भी काम को जब तक मन लगाकर खुशी से नहीं करेंगे, नतीजा यही होगा। आपका मन जल्द ही ऊब जाएगा, काम से विरक्ति पैदा हो जाएगी और तब आप संवेदनहीन यंत्र की तरह काम करेंगे।

किसी के कहने पर काम न करें। उसे अपनी जिम्मेदारी समझकर इच्छा के साथ करें। तभी झुँझलाहट नहीं होगी। पदोन्नति आपका अनुगमन करेगी। सफलता मिलने पर कई लोग उसे अपनी उपलब्धि मानते हैं; असफल होने पर उसे भाग्य का खेल मान बैठते हैं।

आपने परीक्षा का पेपर दिया। पेपर अच्छा किया तो बड़ी शान से कहेंगे, ‘एकदम बढ़िया हुआ, यार! सचमुच कलम तोड़ दी।’ अगर पेपर ठीक न रहा तो कहेंगे, ‘समय कम था’, ‘प्रश्नपत्र कठिन था’, ‘सिलेबस से बाहर के प्रश्न पूछे गए’ या इसी तरह के दूसरे कारण ढूँढ़ेंगे। कामयाबी मिलने पर उसका श्रेय लेने के लिए उछलनेवाला हमारा मन गलती हो जाने पर उसकी जिम्मेदारी किसी और पर थोपने के लिए दौड़ मचाता है।

ज्यादातर लोग उत्तरदायित्व लेने का मतलब ‘कोई भार ढोना’ समझते हैं। सफाई करना, थाली-कटोरी साफ करना, पानी भरना, दिया जलाना जैसे घर के छोटे-छोटे कामों की जिम्मेदारी लेने के बारे में भी घर के सदस्यों के बीच लंबी-लंबी बहसें चलती हैं।

इसी तरह एक बार शंकरन पिल्लै और उनकी पत्नी के बीच ताला कौन लगाए, इस विषय पर विवाद छिड़ गया। बड़ी देर तक कहा-सुनी हुई। आखिरकार फैसला यह हुआ कि दोनों में से जो पहले मुँह खोलकर एक

लफ्ज भी बोलेगा, उसी को उठकर दरवाजा बंद करके ताला लगाना होगा।

बस, उसके बाद दोनों मौन हो गए। अगर पिल्लै मुँह खोलकर बताए, 'खाना खिलाओ' या पत्नी मुँह खोलकर बुलाए 'खाने के लिए आओ' तो दरवाजा बंद करने की जिम्मेदारी आ जाएगी। इसी डर के मारे दोनों भूखे रहकर मौन व्रत का पालन करने लगे।

आधी रात को कुछ बदमाश घर में घुस गए। हॉल में बैठा वह दंपती घुसपैठियों को देखने के बाद भी शोर मचाए बिना चुपचाप बैठकर तमाशा देख रहा है, यह देखकर वे बदमाश हैरान हुए। जो भी कीमती चीजें मिलीं, उन्हें बटोर लिया। तब भी उस विचित्र दंपती का मौन जारी रहा। इससे शह पाकर एक बदमाश ने शंकरन पिल्लै की पत्नी के कान से हीरों का कर्णफूल उतारा। इस पर भी उस नारी ने शोर नहीं मचाया।

क्या वास्तु के अनुसार घर की स्थितियों को

बदलने पर जीवन में समृद्धि आएगी?

पहाड़ के ऊपर मकान बनाया जाए तो वह यूँ होना चाहिए—

तलहटी पर दूसरे ढंग का मकान ठीक रहेगा, समंदर किनारे हो तो उसे यूँ बनाना होगा—इन बातों को समझाने के लिए वास्तु-शास्त्र का उदय हुआ था। घर के अंदर रोशनी और हवा पर्याप्त मात्रा में आने लायक मकान कैसे बनाया जाना चाहिए, यह बताने के लिए निर्मित वास्तु-शास्त्र का उपयोग आज बिजनेस में तरक्की करने के नुस्खों के रूप में किया जा रहा है। यह अविश्वसनीय मजाक है।

शास्त्रों का निर्माण मानव जीवन को सुखी बनाने के लिए किया गया। जीवन को ही उठाकर शास्त्रों के हाथ में सौंपना गैर-जिम्मेदारी का काम नहीं तो क्या है?

अपने आपको सुधारे बिना दरवाजे को तोड़कर खिड़की बनाने से या जहाँ शौचालय था, वहाँ रसोईघर बनाने से इस बदलाव के कारण भले ही कोई-न-कोई सुविधा मिल जाए, आपके जीवन में बदलाव नहीं आएगा।

यह देख अगला बदमाश हैरत में आ गया। उसने पास में पड़ा चाकू उठाया और शंकरन पिल्लै की मूँछों को मूँड़ने का उपक्रम करने लगा। तब तक काठ के देवता की भाँति बैठे रहे पिल्लै लाचार होकर यों चिल्लाए—

“अच्छा, ठीक है, मैं ही उठकर ताला लगाता हूँ।”

क्या इसी का नाम जिम्मेदारी है?

अगर आप अपने चारों ओर के माहौल को अपने अनुकूल बना लेना चाहते हैं तो आपको उसकी जिम्मेदारी लेने को तैयार होना चाहिए। तभी हार होने पर भी उसका दर्द आपके ऊपर असर नहीं करेगा।

उन असफलताओं को विजय पाने की सीढ़ियों के रूप में कैसे बदलना है, यह शिक्षा भी आप पा सकते हैं।



विनाश भी विकास के लिए ही है

किसी भी हानि या नुकसान को विकास और उन्नति के अवसर के रूप में देखना चाहिए।

हाल में समंदर की गोदी में सो रही धरती ने निद्रा में ही जरा अपनी करवट बदली थी।

बस, समुद्र-तट की कुछ जमीनें गायब हो गईं। दैत्याकार लहरों ने सैकड़ों जानें निगल डालीं।

समुद्र-तट से लगी जमीनों पर मकान बनाना उनकी सुरक्षा के लिहाज से खतरनाक है—इस नियम की उपेक्षा किए जाने के कारण फिर एक बार कुछ जानें जुरमाने के तौर पर वसूली गईं।

समुद्र मानव को लाखों की तादाद में मछलियाँ उपहार के रूप में देता रहा। उस समय मानव ने उसे मित्र के रूप में नहीं माना। उसी समुद्र ने आज एक बार गर्जन किया तो इसी वजह से उसे दुश्मन के रूप में देखा गया।

नववर्ष के आगमन की प्रत्यूषा में हुई इस आकस्मिक आपदा (सुनामी) से जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। लोगों के सामने यही सवाल उठ खड़ा हुआ कि संवत्सर का प्रारंभ होते ही एक के बाद एक आनेवाले पर्व-त्योहारों को मनाएँ या हम भी इस शोक में शरीक हो जाएँ।

संकट में फँसे इन लोगों के बीच में जाते समय यह आवश्यक नहीं है कि हम भी दुःख और वेदना में फँसे रहें। सबके मिल-बैठकर रोने-कलपने का अवसर नहीं है यह। बीमार लोगों की देखभाल करते हुए उनकी सेवा और उपचार करना है तो वह किनसे संभव है? स्वस्थ लोगों के द्वारा ही न!

सबकुछ गँवाकर भारी विपदा में फँसे लोगों को उस दुःख-दर्द से उबारना हो तो वह किनसे संभव है? आनंद में रहनेवाले लोगों से, है न। फौरन यह सवाल फूटकर निकल सकता है, 'क्या कहा? जब अगला दुःख-दर्द के कारण शोक-मूक हो, तब मैं कैसे आनंद में रह सकता हूँ? क्या यह चिंतन क्रूर और वक्रतापूर्ण नहीं है?'

वस्तुओं के लाभ से ही आनंद मिलता है, इस उसूल के साथ जो लोग जीवन बिताते हैं, उन्हें एक हजार अच्छाइयों के बाद एक संकट आ जाए तो उनके लिए सबकुछ दुःखपूर्ण बन जाता है। मैं इस कोटि के आनंद का जिक्र नहीं कर रहा हूँ।

यह किसने कहा कि आनंद में रहने का मतलब गाजे-बाजे और आतिशबाजी के साथ खुशी मनाते रहना है! प्रेममय रहना आनंद की अवस्था है। रोनेवाले को दिलासा देना और उसे ढाढ़स बँधवाना आनंद है। दीन-दुःखियों को स्नेहपूर्वक सहारा देना आनंद है। बेबस और लाचार भाइयों की दिल से सेवा करने से आनंद मिलता है। विपत्तियों के बीच में उनसे प्रभावित हुए बिना माहौल के अनुकूल अपने को ढाल सकें, यही आनंद की वास्तविक स्थिति है।

ऐसा नहीं कि पाने में ही आनंद है। देने में भी आनंद है।

विज्ञान कहता है, जब भूखे आदमी को खाने को कुछ मिले, तभी उसमें ताकत आती है।

लेकिन महात्मा बुद्ध कहते हैं—'यदि भूखा व्यक्ति अपने भोजन को उठाकर अन्य किसी जरूरतमंद को देगा तो वही कार्य उसे अधिक शक्ति प्रदान करेगा।'

नदी के जल में खड़े होकर कपड़ों को धो रहे किसी धोबी की नजर एक चमकीले पत्थर पर पड़ी। धोबी ने उसे उठाकर एक डोरी में बाँधा और अपने गधे के गले में अलंकार-वस्तु के रूप में पहना दिया।

धुले हुए कपड़ों को बाँटने के लिए जब वह बस्ती के अंदर गया, किसी जौहरी ने उस पत्थर को गौर से देखा। उसने कहा, "यह पत्थर मुझे दे दो। मैं तुम्हें एक रुपया दूँगा।"

धोबी ने दृढ़तापूर्वक कहा, “पाँच रुपए देंगे तो इसे दे सकता हूँ। नहीं तो यह पत्थर मेरे गधे के गले के सिंगार के रूप में पड़ा रहेगा, बस।” वह व्यापारी ‘दो रुपए दूँगा, तीन दूँगा’, यों सौदेबाजी करता रहा।

इस बीच अगली दुकान पर बैठे जौहरी ने यह सब देखकर कहा, “बस, एक दाम। यह लो हजार रुपए।” धोबी के हाथ में पैसे रखते हुए उसने जल्दी-जल्दी में सौदा पटा लिया और पत्थर ले लिया।

पहला व्यापारी झल्ला उठा। धोबी से बोला, “अरे बेवकूफ, वह हीरा था रे, हीरा! उसका

सुनामी में समंदर ने लाखों जानों की बलि ले ली। क्या इसे तमाशे के रूप में देखनेवाले का नाम ईश्वर है?

भगवान् और अध्यात्म को लेकर जरूरत से ज्यादा बोलते-बोलते यहाँ आधारभूत मानवता भुला दी गई। देवत्व फूलों का एक पौधा है। यदि उसकी डंठलों पर पुष्पों का अंबर खिलना हो तो उसकी जड़ों पर उचित खाद डालना जरूरी है। सच्ची मानवता ही उत्तम खाद है।

जहाँ-जहाँ इनसानियत की मौत को गई हो, भले ही वहाँ जाने कितने मंदिर बनाएँ, देवत्व भी मर जाएगा।

यही मान लीजिए कि प्रकृति का आक्रोश आपके अंदर की मानवता जिंदा है या मर गई है, इसकी जाँच करने का इम्तिहान है। सबकुछ खोकर सर्वहारा बनकर खड़े लोगों को, बेगाने या पराए मानकर हटाए बिना अपने परिवारजन के रूप में देखें और तदनु रूप पूरी हमदर्दी के साथ स्नेह बरसाएँ।

मानवता से देवत्व की ओर उन्नत होने के लिए भगवान् द्वारा दिए गए सुनहरे अवसर के रूप में इसे स्वीकार करें।

मोल एक लाख से ज्यादा होगा। ऐसे कीमती पत्थर को हजार रुपए में दे दिया। तुम ठगे गए, हाँ!”

“हो सकता है, लेकिन मेरे लिए तो वह सिर्फ एक साधारण पत्थर था। हजार रुपए में उसे बेचने पर भी मैं फायदे में ही हूँ। उसका मूल्य जानते हुए भी पाँच रुपए देने का मन न होने से सौदेबाजी करने जाकर तुम्हीं अपनी मूर्खतावश उसे खो बैठे हो।” यह कहकर धोबी हँस पड़ा।

अपने अंदर बसी अमूल्य मानवता का बोध होते हुए भी उसे बाहर प्रकाशित न करने के लिए दो-तीन रुपए की सौदेबाजी करनेवाले मूर्ख व्यापारी हैं आप। अक्लमंदी इसी में है कि आप किसी हानि या नुकसान को विकास के लिए काम में ला सकें।

इसे आप एक सुनहरा अवसर मान लें, क्योंकि यांत्रिक जीवन में फँसकर आपके अंदर जो मानवता जड़ीभूत हो गई थी, उसमें नया अंकुर फूट रहा है, नई कोपलें आ रही हैं।

मौत के घाट उतरे एक लाख से ज्यादा लोगों के चेहरे आपके लिए अनजान जरूर हैं, लेकिन चंद पलों के लिए हार्दिक रूप से उन्हें अपने घनिष्ठ मित्र या बंधुओं के रूप में सोचिए। आपको एहसास होगा कि सुन्न पड़ी हुई आपकी संवेदना हरहराकर उठ रही है।

अपने बंधु-मित्रों को खोकर तड़पनेवाले लोगों को आप जिन आँखों से देखेंगे, उनमें करुणा अपने आप जागेगी। बहुत ही सीमित समय में वर्तमान दुःख और कष्ट दूर होंगे और उनके जीवन में आनंद लौटकर आएगा।



जिम्मेदारी भी कोई बोझ है!

जी वन के विभिन्न धरातलों में आपको विभिन्न व्यक्तियों और विषयों से आमना-सामना करना पड़ेगा।

आपके मन को यही सवाल कुरेदता रहेगा कि आखिर मैं किस-किस की जिम्मेदारी लेता रहूँ?

प्रकृति के प्रकोप से गुजरात में हजारों मकान धराशायी हो गए। तमिलनाडु के समुद्र-तटों पर हजारों मकान पानी में डूब गए। ऐसे मौकों पर क्या आप यही सोचकर निर्विकार रहेंगे कि ये सब उत्पात किसी और के साथ हो रहे हैं?

क्या ये ऐसे क्षण नहीं हैं, जब पूरे देश को एकजुट होकर अपनी जिम्मेदारी निभाना चाहिए?

आप देख रहे हैं, बीच सड़क पर कोई बेचारा गाड़ी की ठोकर खाकर पड़ा हुआ है। एक जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में आप क्या कर सकते हैं? वैद्यकी का ज्ञान हो तो आप उसे प्राथमिक उपचार देंगे, नहीं तो उसे तुरंत चिकित्सा सहायता मिलने के लिए जरूरी इंतजाम करेंगे।

इसके विपरीत, यदि 'मुझसे संबंध न रखनेवालों की जिम्मेदारी मैं किसलिए लूँ', यही सोचते हुए आगे निकल जाएँ तो आप में और सड़क के किनारे पड़े पत्थर में क्या अंतर है? जिम्मेदारी से तात्पर्य यह नहीं है कि आपको क्रियात्मक रूप से कुछ-न-कुछ करना ही पड़ेगा। यदि आपके अंदर अपने संबंध में उत्तरदायित्व का बोध हो, तभी आप परिस्थिति के अनुकूल व्यवहार कर सकते हैं।

कभी-कभी अपनी क्षमता और पहुँच के बाहर होने की वजह से आप परिस्थिति के अनुकूल कोई काम करने में असमर्थ रह जाते हैं। यह भी उत्तरदायित्वपूर्ण काम है। लेकिन जिम्मेदारी ले सकने के अवसरों पर भी उन्हें टालना आपकी सफलताओं के मार्ग पर कभी काम नहीं आएगा।

फर्ज करें कि आप जिस काम में लगे हैं, वह आपका निजी उद्योग या व्यापार नहीं है। ऐसे में यह खयाल आ सकता है, 'मैं क्यों अपनी जान खपाऊँ? मेरी मेहनत का फल मुझे नहीं, मालिक को ही तो मिल रहा है।' इस विचार के चलते आप काम को लगन के साथ नहीं, बल्कि कर्तव्य का बोझ समझकर कर रहे होते हैं।

वास्तव में, उस व्यवसाय को करने की क्षमता आपमें है या नहीं, इसकी जाँच करने के लिए प्राप्त अवसर के रूप में इसे मानना चाहिए। वाकई यह दूसरे के निवेश में कुछ सीखने के लिए मिला हुआ अनोखा अवसर है। उसे अपना निजी व्यवसाय मानते हुए आपको यही सोचना चाहिए कि इस उद्यम को सफलता की चोटी पर पहुँचाने के लिए मैं क्या-क्या जिम्मेदारियाँ ले सकता हूँ। यहाँ पर यदि आप पूरी लगन के साथ काम करेंगे तो इससे न केवल आपके मालिक का व्यवसाय प्रोन्नत होगा, बल्कि आपकी क्षमता में भी बढ़ोतरी होगी।

उलटे, इसे दूसरे किसी का व्यवसाय मानकर वेतन के लिए काम करने के उपेक्षा-भाव से काम करेंगे तो वह उद्योग जल्द ही ठप्प हो जाएगा और आपको मिला हुआ अवसर भी नष्ट हो जाएगा।

जिन कर्मचारियों ने उत्तरदायित्व-बोध के साथ पूरे मन से काम किया, वे ही आगे चलकर बड़े पूँजीपतियों और प्रबंधकों के रूप में चमक रहे हैं। सफल लोगों के जीवन-चरित यही बता रहे हैं। पहले जिम्मेदारियों को दूसरे किसी के द्वारा थोपा गया बोझ न मानकर खुशी से, पूरे मन से उन्हें स्वीकार करने की आदत डालिए। उसी क्षण आपकी समस्याओं में से आधी का हल हो जाएगा।

हुयदी नाम से एक जेन गुरु थे। वे अपने कंधे पर हमेशा एक बड़ी गठरी को ढोए चलते थे। गठरी के अंदर जाने क्या-क्या वस्तुएँ होंगी। गाँवों और बस्तियों से होकर चलते हुए छोटे बच्चों को देखने पर उसमें से मिठाइयाँ

लेकर बाँटेंगे।

एक बार कोई और जेन गुरु सामने से आ रहे थे।

उन्होंने पूछा, 'जेन' का मतलब क्या है?

हुयदी फौरन अपनी गठरी को नीचे डालकर तनकर खड़े हो गए।

“जेन का उद्देश्य क्या है?” अगला सवाल फूट पड़ा।

हुयदी ने नीचे डाली गई गठरी को फिर से उठाकर कंधे पर रख लिया और उन्हें संकेत से यही सुझाव दिया कि गठरी को अपनी न मानते हुए उसे नीचे डाल भी सकते हैं और उसे खुशी से ढो भी सकते हैं।

स्नेह दिखाने के लिए मेरे मुसकराने पर यदि अगला व्यक्ति मुँह मोड़ ले तो मैं कैसे प्रेम का व्यवहार कर सकता हूँ?

स्नेह-युक्त रहना एक आंतरिक अवस्था है। आप स्नेही व्यक्ति हैं, इस बात का ढिंढोरा पीटते हुए गली-कूचों में घूमने की जरूरत नहीं है। आपके द्वारा स्नेह-प्रदर्शन हेतु दूसरे लोगों को आपके साथ सहयोग करना चाहिए, ऐसी प्रतीक्षा करने का मतलब यही है कि प्रेम का अर्थ पूर्ण रूप से आपकी समझ में नहीं आया है।

प्रेम प्रतिदान की अपेक्षा नहीं रखता। ऐसी कोई शर्त नहीं है कि अगला भी आपसे प्यार करे। चाहे आप हजारों लोगों की सेवा करते हों या घर में केवल दो जनों के लिए खाना बनाते हों, आप उसी मात्रा के स्नेह का मन में अनुभव कर सकते हैं।

यह आपकी समझ में आ गया है कि स्नेहपूर्ण रहने में ही बुद्धिमानी है। फिर क्या? अगर कोई आपके क्रोध को भड़कानेवाला काम करे तो उसके साथ होड़ लगाते हुए क्या आप यही साबित करना चाहते हैं कि अरे, मैं तुझसे भी बड़ा मूर्ख हूँ?

क्या आप इसी प्रतीक्षा के साथ बैठे रहना चाहेंगे कि पहले सारी दुनिया प्रेममय हो जाए, उसके बाद अंत में मैं बदलूँगा।

दर्द के बिना जिम्मेदारियों को स्वीकार करने की कला आ जाए तो वह बोझ नहीं है।

अपनी जिंदगी के लिए आप ही जिम्मेदार हैं। इसलिए कभी-कभी अपनी जिम्मेदारी को टालने की कोशिश न करें। पहले जिम्मेदारी को एक कार्य के रूप में न लें; जिम्मेदारी को एक भावना के रूप में लेने की आदत डालें।

यदि आप पूर्ण उत्तरदायित्व-बोध से रह सकें तो शांति और आनंद आपके अपने हो जाएँगे।



विधि-विधानों का नियामक कौन?

अ कसर मुझसे पूछे जानेवाले प्रश्नों में एक है—

‘ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं?’

आदि मानव पर भय हमेशा हावी रहता था।

आकाश में काली-काली घटाएँ, रह-रहकर कौंधतीं टेढ़ी-मेढ़ी प्रकाश रेखाएँ, धड़-धड़ करते मेघों का घनघोर गर्जन, नभ की छत फोड़ते हुए मूसलों की तरह गिरती वर्षा, अंतरिक्ष का अपरिमेय विस्तार, अनगिनत नक्षत्रों का पुंज, असीम सागर में लहरों का तुमुल नर्तन—ये सब अबूझ पहेलियाँ थीं आदि मानव के लिए। इनका मूल कारण जाने बिना वह भय-त्रस्त रहता था।

ब्रह्मांड के अनंत विस्तार की तुलना में उसने अपने आपको तिनका जैसा पाया।

उस अबूझ शक्ति के सामने सिर नवाकर गुहार की, ‘प्रभो, मेरी रक्षा करो।’

उसने वर्षा को नमन किया, सूर्य के सामने दंडवत् प्रणाम किया।

उसी दिन से ईश्वर उसके लिए भय के कारण प्रणम्य सत्त्व बन गया।

आप लोग ईश्वर के अस्तित्व पर क्यों विश्वास कर रहे हैं? इसलिए न कि जन्म के समय से लेकर माता-पिता यही समझाते आए हैं—‘ईश्वर है’, ‘ईश्वर है’। आपके परिवार-जन जिस देवता की पार्टी के अनुयायी हैं, आप भी उसी ईश्वर को मानते हैं। आपके मन में ईश्वर के बारे में एक कल्पना है। उसके अनुसार आप यही सोच रहे होंगे कि भगवान् उन्हीं जरीदार वस्त्रों और रत्नाभूषणों में सज-धजकर भक्तों को अनुग्रह प्रदान कर रहे हैं। ठीक है न?

कैलेंडरों में छपे वेश-विधानों को छोड़कर अगर वे कुछ भिन्न तरीके से जींस और कुरता पहनकर प्रकट होंगे तो क्या आप उन्हें भगवान् के रूप में स्वीकार करेंगे?

हाथियों के संसार में जाकर पूछिए—‘ईश्वर किस रूप में होंगे?’ हाथी-समाज यही कहेगा, ‘हमसे भी बड़े आकार में, चार सँड़ों के साथ शोभित हैं हमारे भगवान्।’ चींटियों से पूछने पर उत्तर मिलेगा—‘पूरे छह इंच के कद में एक चींटी है। वही हमारा ईश्वर है।’

संभव है, परिणाम-विकास की प्रक्रिया में मनुष्य से भी उन्नत कोई प्राणी इस ब्रह्मांड में कहीं रहता होगा। यदि हम अपने देवताओं को उन्हें दिखाएँ तो वे हमारी खिल्ली उड़ाते हुए हँसेंगे—‘छिह, कहीं ईश्वर आदमी की शक्ल-सूरत में रह सकता है! हमें देखो, तुमसे उन्नत-विकसित हैं। ईश्वर हमारे जैसे रहते हैं।’

जो लोग खुद अपनी समस्याओं का हल नहीं ढूँढ़ सकते, वे दूसरों की समस्याओं का निराकरण करने निकले हैं। ईश्वर के साथ आपका कोई प्रत्यक्ष अनुभव नहीं है। इसलिए दूसरों ने उनके बारे में जो कुछ कहा, उसे उसी रूप में आपने मान लिया है।

खैर, बताइए, आप मंदिर किसलिए जाते हैं? ईश्वर की अनुभूति प्राप्त करने के लिए या उनसे कुछ-न-कुछ माँगने के लिए? ‘हे प्रभो! मुझे यह दो, वह दो, मुझे फलाँ जैसा बनाओ, संकटों से मेरी रक्षा करो।’ इस तरह की मिन्नतें माँगने के लिए ही तो आप देवालय में जाते हैं।

ईश्वर के प्रति आपका जो विश्वास है, वह भय और लालच के आधार पर पाला गया है।

अपने पूजा-गृह में आपने देवी-देवताओं के दर्जनों चित्र टाँग रखे हैं। इसके फलस्वरूप क्या जीवन के प्रति आपका भय दूर हो गया है? बाहर निकलने से पहले आपको घर के साथ इस पूजा-गृह को भी बंद करके जाना पड़ता है, है न!

भगवान् आपके भय का प्रतीक है, तभी तो आपने 'भक्ति' शब्द के साथ 'भय' को जोड़ रखा है—भयपूर्वक भक्ति, भय-भक्ति।

अगर भगवान् प्रेम-स्वरूप हैं तो उनके प्रति भक्ति-भाव होना पर्याप्त नहीं है?

भय किसलिए?

जो लोग ईश्वर का अनुभव नहीं कर पाते, वही आज भक्ति के बारे में ज्यादा बातें करते हैं।

तब तो ईश्वर केवल काल्पनिक पात्र हैं?

क्या उनके बारे में चिंता करनी है?

एक अदना-सा बीज माटी के अंदर गिरने पर बड़े वृक्ष के रूप में बढ़ जाता है। कैसे? इस बीज में से इसी तरह का पेड़ उगेगा, ऐसा फूल खिलेगा—यों उसके अंदर दर्ज किया गया है। इन विधि-विधानों का नियामक कौन है? आपसे परे जो शक्ति है, उसे ईश्वर न

क्या कारण है कि कुछेक मंदिरों में ही भक्त जनों की अपार भीड़ लगी रहती है; अन्य कई मंदिरों में दीया जलाने के लिए भी कोई नहीं पहुँचता?

आप ईश्वर को जानने-समझने के लिए मंदिर नहीं जाते, बल्कि यही आस लेकर मंदिर जाते हैं कि भगवान् आपके लालच का साथ देंगे। इसलिए 'भगवान्' नामक माल की बहुत बढ़िया ढंग से बिक्री जिस मंदिर में की जाती है, उसी मंदिर में भक्तजनों की भीड़ इकट्ठा होती है।

इस मंदिर में जाओ; हुंडी में दस रुपए डालो तो बीस रुपए बनकर तुम्हें वापस मिल जाएँगे''' उस मंदिर के देवता से मनौती माँग लो कि मुनाफे में 10 प्रतिशत मंदिर को दान करूँगा। तब निश्चित रूप से लाखों-करोड़ों का लाभ मिलेगा। यों जिन मंदिरों के बारे में सिफारिश की जाती है, आप लोग वहीं जाना पसंद करते हैं। क्या इस तरह के प्रलोभनों से भगवान् खरीदे जा सकते हैं? क्या ईश्वर कोई बिकाऊ माल है? तब तो और कोई व्यक्ति 20 प्रतिशत देने को तैयार हो जाए तो भगवान् आपको अधर में लटकाकर उसके पक्ष में न चले जाएँगे?

माना कि आप अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ही मंदिर जाते हैं। कोई बात नहीं। मगर कम-से-कम इसमें तो ईमानदारी बरतिए न! क्यों भगवान् से सौदेबाजी कर रहे हैं?

कहें तो फिर क्या कह सकते हैं? तो, हम उसी स्थान पर पहुँच गए हैं। ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं?

अगर आपके मन में इसे जानने की इच्छा जाग जाए तो किससे पूछकर जान सकते हैं?



III

ईश्वर की प्रतीक्षा न करें

ईश्वर है ... या नहीं है?

कि सी ने कह दिया कि 'ईश्वर है', इसी आधार पर ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करना या किसी ने कह दिया, 'ईश्वर नहीं है', इसी बात को मानकर ईश्वर को नकारना कहाँ की बुद्धिमानी है?

आप भगवान् पर विश्वास करें या उन्हें नकार दें, इससे भगवान् को कोई फर्क नहीं पड़ता। यह तो पूर्ण रूप से आपकी समस्या है।

विचार कीजिए, असली समस्या क्या है? राम जीवित थे या कृष्ण आए थे, ईसा जीवित थे या पैगंबर साहब आए थे—समस्या क्या यही है? नहीं न!

आपका अपना अनुभव क्या है?

यहूदी लोग दावा करते हैं कि वे भगवान् से सीधा संपर्क रखते हैं। उनके विषय में एक दिलचस्प कहानी भी है। यहूदियों के नेता जोशवा गोल्डबर्क को साल में एक बार स्वर्ग जाने और ईश्वर के साथ बैठकर दावत खाने का अधिकार मिलता था। इसी तरह एक बार ईश्वर के साथ भोजन के लिए बैठे थे जोशवा गोल्डबर्क। हर साल उन्हें सूखी रोटी ही परोसी जाती। उस मेनू में कोई बदलाव नहीं रहता।

“ऐ मेरे मालिक, एक संदेह मेरे दिमाग को चाट रहा है।” जोशवा ने सूखी रोटी को बड़ी मुश्किल से चबाते हुए भगवान् से कहा।

“पूछो, मेरे बेटे!”

“आपकी सल्तनत में आपके अजीज लोग हमी हैं या और कोई भी है?” जोशवा ने रोटी के अगले टुकड़े को निगलकर गले के अंदर पानी उँड़ेल लिया।

“इसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं है, बेटे! और किसी को हमने यह विशेषाधिकार नहीं दिया है। इसीलिए सिर्फ तुम्हें दावत पर बुलाया है।”

जोशवा हाथ में लिये रोटी के टुकड़े को नीचे डालते हुए उठ खड़ा हुआ। उसने गुस्से से पूछा, “और कितने समय तक हमें यह परेशानी सहनी पड़ेगी? क्या आप दूसरे किसी का अपने घनिष्ठ के रूप में चयन नहीं कर सकते?”

इस तरह जो लोग अपने को ईश्वर के घनिष्ठ होने का दावा करते हैं, वे ही तो ज्यादा दुःखी होते हैं?

ईश्वर नामक उन्नत भाव इन लोगों की समझ से बाहर है। इन्होंने ईश्वरीयता के उदात्त भावों के अनुभव नहीं पाए हैं। इसके बावजूद भगवान् और लोगों के बीच में दलाल बनकर धन और सुख-सुविधाएँ बटोरने के लिए इनके द्वारा रचे जानेवाले नाटक सचमुच असहनीय लगते हैं।

क्या आप भगवान् पर पूरा विश्वास करते हुए जिए हैं?

कुछ ऐसे भी लोग हैं, जब उनके प्रियजन बहुत अस्वस्थ हो जाएँ तो भगवान् से मनौती मानते हैं।

तब भी प्रियजन बच नहीं पाए तो तैश में आकर, ‘भगवान्-वगवान् कुछ नहीं है। सब मिथ्या है।’ यों चिल्लाते हुए घर में टँगे देवी-देवताओं के चित्रों को उठाकर फेंक देते हैं।

अपना कोई कार्य साधने के लिए ये लोग भगवान् से सहायता माँगते हैं और अगर उसमें सफल नहीं हुए तो ईश्वर के अस्तित्व को ही नकार देते हैं।

जिस ढंग से आपकी परवरिश हुई है और आपके मन में जैसा विचार बोया गया है, उसी के अनुरूप तो आपके अंदर ईश्वरीय विश्वास पनपा है?

‘ईश्वर की सत्ता है’, यह एक विश्वास है। ‘ईश्वर का अस्तित्व नहीं है’, यह एक अन्य विश्वास है। पर वास्तविकता यह है कि ‘ईश्वर है या नहीं’, इस बात का आपको कोई पता नहीं है। जब हम स्वीकार करते हैं कि मैं यह बात नहीं जानता, तभी तो किसी चीज के बारे में जानने का पूरा अवसर मिलेगा।

कोरे विश्वासों से बुनी जानेवाली कल्पनाओं को क्यों स्वीकार करें?

यदि आपके अंदर ईश्वर के बारे में जानने की सच्ची प्यास है तो दूसरों की सिखाई-पढ़ाई बातों पर आँखें मूँदकर विश्वास करने की आदत छोड़ दीजिए। फिर आप स्वयं तलाश कीजिए, ईश्वर है या नहीं है।

अपनी इस गवेषणा को, तलाश को खुद अपने से शुरू कीजिए। यदि यह बात सही है कि असीम परमेश्वर सब जगह व्याप्त है तो आपके अंदर भी उसका वजूद होना जरूरी है।

असल में भगवान् के कितने मुख हैं?

ईश्वर नामक सत्ता आपकी तुलना में वृहदाकार होनी चाहिए, इसी धारणा के चलते आपने कल्पना की कि भगवान् के सोलह हाथ होंगे, या भगवान् को आपने चार मुख या छह मुख प्रदान किए।

सच-सच बोलिए, आपके कितने चेहरे हैं? घर में एक चेहरा, दफ्तर में दूसरा चेहरा, मित्रों के बीच में इनसे भिन्न एक चेहरा, दुश्मनों का सामना होने पर अलग सा कोई चेहरा। यों गली-दर-गली बदलने के लिए आप कितने चेहरों को ढोए फिर रहे हैं? षण्मुख कार्तिकेय की अपेक्षा आपके पास ही तो अधिक मुँह हैं।

मुखों की गिनती के आधार पर देवताओं का निर्णय करने लग जाएँ तो आपके राजनीतिज्ञों से कोई भी देवता होड़ नहीं लगा सकते, है न!

हमारे पूर्वजों ने देवी-देवताओं को जो रूपाकार दिए हैं, उसके लिए अन्य अनेक बुद्धिमत्तापूर्ण कारण हैं, कुछ तर्कपूर्ण आधार हैं। उन्हें समझे बिना ईश्वर को समझ लेने का दम भरना अपने अहंकार को खुराक देने जैसी बात है, बस!

साकार रूप में उसे ढूँढ़ना छोड़कर ईश्वरीयता को अपने अंदर ढूँढ़कर देखिए। यदि अपने अंदर ईश्वर की सत्ता का अनुभव हो जाए तो फिर आप मान सकते हैं कि वह यहाँ-वहाँ और सब कहीं हो सकता है।

यहाँ एक बात स्पष्ट रूप से समझ लें।

अगर आपको बुद्धिमानी के साथ जीवन-यापन करना आता है तो आप ईश्वर के बिना भी आनंद से जी सकते हैं। यदि आप जीवन के बारे में सही समझ के बिना मूर्खतापूर्ण ढंग से जीवन बिताने वाले हों तो भले ही पूजा-गृह में देवी-देवताओं के ढेर सारे चित्र टाँग लें, उससे कुछ होने वाला नहीं है।



दुनिया पर शासन चलाने की

इच्छा है?

पहले यह बात तय कर लीजिए, आपकी इच्छा क्या है? दुनिया पर शासन करने की या गुलामों की जिंदगी बसर करके मिट जाने की?

किसी का मुँहताज बने बिना खुद अपनी मेहनत से मन की इच्छाओं को साकार बनाना चाहते हैं तो सोचिए, उसके लिए क्या करना होगा?

पहली शर्त यह है कि पूरी निष्ठा और समर्पण-भाव के साथ काम करने के लिए तैयार हो जाएँ। यदि आप अपनी ऊर्जा को पूर्ण रूप से लगाए बिना आधे-अधूरे मन से काम करेंगे तो आपके प्रयत्न किसी भी सूरत में सफल नहीं होंगे। दुनिया पर शासन चलाने का मनसूबा बाँधनेवालों में से कई लोग अपने प्रयास में पूरे मन से नहीं लगते। इसलिए इन लोगों की शक्ति ज्यादा-से-ज्यादा अपने परिवार के कमजोर सदस्यों पर धाक जमाने तक सीमित रह जाती है।

दूसरे विश्व युद्ध से संबंधित एक फिल्मी कहानी याद आती है।

अंग्रेजों के अधीन था वह नगर। एक दिन अचानक यह खबर फैली कि फ्रेंच सैनिक नगर में कहीं बम गाड़कर भाग गए हैं। डर के मारे ब्रिटिश फौज और बहुत सारे नागरिक रातोंरात शहर खाली करके भाग जाते हैं। उस वीरान नगर में कुछेक मूर्ख और निकम्मे लोग ही बचे रहते हैं, जिन्हें भागनेवालों ने साथ ले जाने की परवाह नहीं की थी।

नगर में 'गड़े हुए बम' के बारे में अनजान होकर वे लोग पूरे शहर में बेफिक्री से घूमते हैं।

बेलगाम होकर विचरण करने के बाद वे लोग मनमाने ढंग से आपस में तय कर लेते हैं—'तुम राजा हो, मैं मंत्री हूँ और यह बंदा नगर का मेयर है।' यों पदाधिकारियों को नियुक्त कर लेने के बाद वे लोग नगर पर शासन करने लग जाते हैं। कुछ हफ्तों के बाद जब बम फटने का डर खत्म हो जाता है, जर्मन फौज नगर में दाखिल हो जाती है। दूसरी ओर से ब्रिटिश सेना भी प्रवेश करती है। दोनों सेनाएँ एक-दूसरे पर गोलियाँ चलाने लगती हैं।

तब वह आदमी, जो राजा बन बैठा था, आपत्ति करते हुए आगे आता है, "रुको, मेरी अनुमति के बिना तुम लोगों को यहाँ लड़ाई करने का हक नहीं है।" बीच में आने से वह राजा गोली खाकर धराशायी हो जाता है। 'राजा मर गए, उस पद का हकदार मैं हूँ', यों कहते हुए अगला आदमी लड़ाई के मैदान में मूर्खतापूर्ण ढंग से घुसता है और वह भी मारा जाता है। यह देखकर धर्मगुरु का पद सँभालनेवाला व्यक्ति 'मेरा परामर्श लिये बिना राजा मनमाने ढंग से काम करता है, इसीलिए उसकी यह गति हुई', यों कहते हुए बीच में आता है और उसका काम भी तमाम हो जाता है।

वहाँ असली लड़ाई चल रही थी, लेकिन इस बात के इल्म के बिना वे लोग एक-एक करके कुरबान होते हैं और उस अंतिम समय में भी अपने पद और प्रताप का बकवास करना नहीं छोड़ते। यों फिल्म आगे बढ़ती है।

यह महज फिल्मी कथा नहीं है। वास्तविक जगत् में भी बहुत से लोग यही दम भरते हुए कि दुनिया पर राज करने के लिए उनका जन्म हुआ है, अहंकार में फूलकर कुप्पा होते हैं। अपनी क्षमताओं को बढ़ाए बगैर खोखले

शौर्य और प्रताप का बखान करनेवाले ये लोग ढपोरशंख नहीं तो और क्या हैं! शेखचिल्ली की तरह ये लोग अपनी शक्ति और सामर्थ्य बढ़ते रहने की कल्पना में डूबे रहते हैं।

छत पर चढ़कर मुरगा पकड़ने तक का शऊर जिनमें नहीं है, वे स्वर्ग राज्य पर कब्जा करने की योजना बनाते हैं। घर में वृद्धा माँ, पत्नी और बच्चों पर अपनी हेकड़ी जताने और उन्हें डराने-धमकाने में ही इन्हें सुख मिलता है। राज करने चले थे दुनिया पर, मगर उसकी काबिलियत न होने के कारण इन मूर्ख जनों की धाक घर की सीमा नहीं लाँघ पाती।

कुछ लोग पूरी दुनिया को जीत लेने की लालसा के साथ जोर-शोर से तैयारियाँ शुरू करते हैं। बीच में एकाध अड़चनें आ जाएँ तो बस, सिर पर हाथ रखकर बैठ जाते हैं, ‘मुझे यह सब कहाँ मयस्सर होने वाला है।’

यदि आपने वांछित लक्ष्य तय कर लिया तो उसके विरुद्ध उठनेवाले सारे विचारों को मन से हटा दीजिए। फिर अपनी इच्छा और शक्ति को एकाग्र कीजिए। प्रकाश को लेंस द्वारा एकाग्र करने पर आपने गौर किया होगा कि वह कागज को जला डालता है।

आपके सघन एवं तीव्र विचारों में ऐसी ताकत है कि वह बड़ी-से-बड़ी बाधा को भी चीरकर आपकी इच्छित वस्तु को ला दे। सच्चे प्रयास का मतलब है—विचारों की तीव्रता

बड़ी-बड़ी इच्छाएँ पालने पर ही तो निराशा हो सकती है। इच्छाओं को थोड़ा-थोड़ा करके पूरा करें तो?

एक नामी चित्रकार थे। वानगा उनका नाम था। अपनी कुरूपता से जनित हीन-भावना उन्हें साल रही थी। इसी कारण से वे अपनी तूलिका से एक-से-एक सुंदर चित्रों का सृजन कर उसी में प्रसन्न रहते थे।

यह बात तय थी कि उनकी सूरत देखकर कोई भी औरत उनके प्रति आकर्षित नहीं हो सकती। इसलिए वानगा पैसा देकर लड़कियों को बुलवाते और उनके साथ थोड़ा समय खुशी से बिताते।

एक बार उन्हें खुश करने के लिए आई लड़की ने सोचा—इतनी मोटी रकम लेने के बाद इनकी प्रशंसा में एक वाक्य भी बोले बिना निकलना ठीक नहीं होगा। यही सोचकर उस लड़की ने वानगा से कहा, “आपके कान बहुत ही सुंदर हैं।”

वानगा खुशी से फूले न समाए। उनके मन में यह इच्छा जागी—किसी लड़की ने पहली बार मेरी तारीफ की है। इसे कोई-न-कोई उपहार जरूर देना चाहिए।

अगले दिन उस लड़की को उपहार का एक पार्सल मिला। ज्यों ही उसने पैकेट खोलकर देखा तो वह सहसा चौंक उठी। अगले क्षण सकपकाकर उसे नीचे फेंक दिया।

वानगा ने अपने दोनों कान काटकर भेजे थे। पत्र में लिखा था—‘लो प्रिये, ये मेरे कान, जिन पर तुम रीझी थीं।’

पूर्ण रूप से इच्छा किए बिना अंशों में इच्छा करेंगे तो उनकी उपलब्धि पर आघात और विषाद ही मिलेगा। इसलिए खंड-खंड करके इच्छा न करें, पूर्ण रूप से इच्छा करें।

और पूरी निष्ठा के साथ काम में लग जाना। अपने वांछित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए योजनाबद्ध रूप में बिना थके काम करना।

आग की गरमी सहने के बाद ही जल की शीतलता का आनंद ले सकते हैं। जिसने मेहनत के पसीने को महसूस किया हो, वही विश्राम के सुख का अनुभव पा सकता है। मेहनत किए बिना लिये जानेवाले आराम का नाम है सुस्ती।

गुलामी की जिंदगी बसर किए बगैर यदि आप दुनिया पर शासन करना चाहते हैं तो आपको पूरी लगन के साथ प्रत्येक क्षण अथक परिश्रम करने के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए। चाहे जागते रहें या सोने चले, आपके अंदर चौबीसों घंटे यही धुन आग की तरह दहकती रहनी चाहिए।



दुश्मन अंदर बैठा है

कि सी आदमी ने आपका अपकार कर दिया, दुःख पहुँचाया। इसी वजह से वह आपका दुश्मन बन गया। आप सोचने लगते हैं—मैं भी कम-से-कम उतनी मात्रा में उसे पीड़ा न पहुँचाऊँ तो इसका यही मतलब होगा कि मैं उससे हार गया।

इसलिए उस अपमान को दूर करने के लिए आप उससे बदला लेने की कसम खाते हैं, उसे सबक सिखाने की तैयारी में लग जाते हैं। इसी प्रयास में अपनी संपूर्ण ऊर्जा खर्च कर देते हैं। इसे आप अपनी बहादुरी मानते हैं। व्यक्ति के प्रति शुरू किया गया यह रोष धीरे-धीरे तूल पकड़कर सामाजिक शत्रुता और राष्ट्र के प्रति शत्रुता के रूप में विस्तृत आकार लेता जाता है।

बदले की भावना आज एक स्वीकार्य सभ्यता का रूप ले चुकी है।

अब बताइए, दोनों में ज्यादा शक्तिशाली कौन है—आप या वह व्यक्ति, जिसे आपने दुश्मन मान रखा है?

दिन भर किस पर आपका ध्यान अधिक रहता है?

अपने हितैषी मित्र पर?

नहीं न।

अपने दुश्मन के बारे में ही तो ज्यादा सोचते हैं।

आपने उसे इतनी हैसियत और छूट दे रखी है कि आपकी सारी खुशी को पलक झपकने की देरी में छीन लेना उसके लिए बाएँ हाथ का खेल बन गया है। आपकी स्मृति हर वक्त उस शत्रु के पीछे चलती रहती है, मानो आप उसके दास बन गए हों। पता नहीं आपने अपने प्रिय जनों के लिए स्थान दिया है या नहीं, लेकिन आपने जिन्हें अपना दुश्मन करार दिया है, उन्हें बुलाकर अपने हृदय-सिंहासन पर बिठा रखा है।

कुल मिलाकर अपने दुश्मन को इतनी अहमियत देनेवाले और कोई नहीं, स्वयं आप हैं। उसे अपने दिल में जगह देने की वजह से आप स्वयं अपने लिए सबसे बड़ा गद्दार बन गए। आपने जिससे बदला लेना चाहा था, दरअसल वही व्यक्ति चुपचाप बैठकर आपसे बदला ले रहा है। आपने कभी इस बात को महसूस किया है?

विदेशों में कहीं नौकरी की तलाश में गए एक नेपाली, एक पाकिस्तानी और एक भारतीय—तीनों एक साथ किसी देश में बसे थे। उस देश में शराब पीने पर कड़ी पाबंदी लगी थी। तीनों लोग चोरी-छिपे शराब पी रहे थे। अचानक पुलिस ने उन्हें घेर लिया। न्यायाधीश ने कानून का उल्लंघन करने के जुर्म में उन्हें बीस-बीस चाबुक मारने की सजा सुनाई।

जज ने साथ-ही-साथ यह सूचना दी, “आज मेरी चौथी बीवी का जन्मदिन है। इसी खुशी में तुम लोगों की सजा में कुछ छूट देना चाहता हूँ। जो मरजी हो, माँग लो।”

नेपाली ने यह छूट माँगी, “चाबुक मारने से पहले मेरी पीठ पर एक तकिया लगाने की

समस्या से जूझते वक्त जो समाधान नहीं मिलता, वह बाद में चिंतन करते समय मिल जाता है, कैसे?

कब बीज बोना है, कब जुताई करनी है, खर-पतवार कब निकालना है, फसल कब काटनी है—सभी का समय तय होता है। उचित समय पर निर्णय लिये बिना देर से निकाले जानेवाले निर्णय सही होने पर भी उनसे कोई फायदा नहीं मिलेगा। समस्या का सामना करते

समय दिमाग काम नहीं करता, बोथस हो जाता है। जरा सोचिए कि ऐसा क्यों होता है? आपने गलत धारणा बना रखी है कि मन जो है, सोचनेवाला कोई यंत्र है और आपने इसी ढंग से उसे पाल रखा है। वह भी हर वक्त कुछ-न-कुछ सोचता रहता है। इसलिए सैकड़ों चिंतन कीड़ों के उड़ने की तरह बेलगाम होकर इधर से उधर भागते रहते हैं।

इसके विपरीत, यदि आप अपने मन को पूरी जागरूकता के साथ काम करने का अभ्यास देंगे तो यह तमाशा नहीं होगा।

आईने पर मैल लपेटने के बाद देखेंगे तो उसमें प्रतिबिंब साफ कैसे दिखेगा?

मन को स्वच्छ रखने का एकमात्र उपाय—नियमित ध्यान ही है।

इजाजत दें।” तदनुसार तकिया बाँधा गया। चाबुक के आठ वार झेल लेने के बाद तकिया जवाब दे गया। बाकी बारह चाबुक खाकर उसकी पीठ का चमड़ा उधड़ गया।

यह देखकर पाकिस्तानी ने पीठ पर दो तकिए बाँध लेने की इच्छा जताई।

“और तुम्हारी क्या माँग है?” जज ने भारतीय से पूछा।

“मेरे दंड को दुगुना कीजिए, जज साहब; लेकिन इस पाकिस्तानी को मेरी पीठ पर बाँध दीजिए।” भारतीय ने कहा।

सिर्फ मजाक के लिए सुनाया गया लतीफा है यह।

यह लतीफा मैंने यही बताने के लिए सुनाया कि जब हम कुतर्क से सोचते हैं कि अगले आदमी को पीड़ा पहुँचाने में ही अपनी खुशी है, तब हमारे जीवन का उद्देश्य ही तितर-बितर हो जाता है। बदला लेने की भावना सचमुच एक बीमारी ही है। यदि वह आप के भीतर घुस जाए तो आपको कहीं का नहीं रखेगी।

दुश्मन बाहर खड़ा हो तो उससे निपटने की संभावना रहती है। लेकिन यदि वह अंदर बैठकर आपको नचाने लग जाए तो समझिए, पहाड़ से लुढ़काए गए पत्थर और आपकी जिंदगी में कोई फर्क नहीं है। धड़ाधड़ नीचे गिरते हुए जगह-जगह ठोकर खाकर वह अंत में आपको पाताल तक खींचकर ले जाएगा।

तब आपकी खुशी को मटियामेट करने के लिए बाहर के किसी दुश्मन की क्या जरूरत है? स्वयं आप ही पर्याप्त हैं न! उलटे, अपनी खुशी को बाहरी परिस्थितियों के पास गिरवी न रखकर शांत रहना सीख लें तो आपकी क्षमता पूर्ण रूप से बाहर आएगी। सफलताएँ आपके द्वार पर दस्तक देंगी।



मन क्यों उलझता है?

एक निश्चित संख्या के लोगों को लेकर उनके व्यवहार का अनुसंधान किया गया। निष्कर्ष यह निकला, हालाँकि इनमें से अधिकांश लोग आठ घंटे की अपनी ड्यूटी पूरा करते हैं, लेकिन उनके काम में दो या तीन घंटे की क्षमता ही प्रकट होती है।

ज्यादातर लोग हाथ में पेन लेकर उसे इधर-उधर घुमाने में, नीचे रखने में, बेमतलब मुड़कर देखने में, कुरसी को आगे-पीछे सरकाने में, उँगलियों की नोक पर आँखें गड़ाकर चिंतन करने में या ऐसे ही अन्य अनेक व्यर्थ के कामों में अपना वक्त जाया करते हैं।

क्या आप जानते हैं, ऐसे उलझन भरे शारीरिक काम अस्पष्ट मन की अभिव्यक्तियाँ हैं?

इस तरह अपने चिंतन को डाँवाँडोल बनानेवाले कामों में ऊर्जा खपत किए बिना उसे रचनात्मक कार्यों में लगाने पर आश्चर्यजनक परिणाम हो सकते हैं। आपको कोई भी काम मुश्किल नहीं लगेगा। कार्य अपने नियत समय से भी आधे वक्त में पूरा हो जाएगा।

खैर, मन क्यों उलझा रहता है?

क्रोध, उत्तेजना, अवसाद, प्रसन्नता—ये सभी आपकी भावनाओं की अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ हैं।

आपकी भावनाएँ ज्यादातर बाह्य परिस्थितियों से ही प्रेरित होती हैं। बाह्य परिस्थितियों को नियंत्रित न कर पाने की स्थिति में इन भावनाओं पर काबू पाना भी संभव नहीं होता और मन में उलझन पैदा होती है। ज्यों-ज्यों पद और हैसियत में बढ़ोतरी होती है, अप्रत्याशित बाह्य परिस्थितियों से आमना-सामना करना पड़ता

दुश्मन का सामना कैसे करें?

आप लोहे एक टुकड़े को झुकाना चाहते हैं, लेकिन उसमें कायामबी नहीं मिलती। आप कह देते हैं कि यह लौह खंड ज्यादा मजबूत है। आपकी तुलना में कोई बलवान् व्यक्ति आता है और उसे टेढ़ा कर देता है। मशीन में देने पर उस लोहे को कई टुकड़ों में तोड़ना भी संभव हो जाता है।

विरोध के द्वारा बल दिखाने के सारे मामलों में यही होता है। जो विरोध करता है, उससे भी ताकतवर आता है और उसे झुका देता है। लेकिन जो बिल्कुल विरोध नहीं करता, बड़े-से-बड़ा सुपर मैन आए, वह भी न झुका सकता है, न हरा सकता है।

इसलिए दुश्मन कहलाते हुए जो आपके सामने आता है, आपको उससे ज्यादा शक्तिशाली होना चाहिए। अपार स्नेह के साथ उसे स्वीकार करने की आदत डाल लीजिए। यही सबसे बड़ी शक्ति है, उन्नत और उदात्त भी है। जूझने से भी ज्यादा शक्ति स्नेह करने में है।

है। एक आम नागरिक की तुलना में देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को ही बाह्य परिस्थितियों का ज्यादा सामना करना पड़ता है।

अशांत मन को रेत का कण भी चट्टान सरीखा दिखाई देता है। जब मन साफ रहता है, तब रोड़ों को भी सीढ़ियों के रूप में बदलकर ऊपर उठना संभव हो जाता है।

इसके उदाहरण के रूप में एक लतीफा सुनिए।

एक गुरु के पास अनेक शिष्य थे। उनमें दो चले सिगरेट पीने के आदी थे। चूँकि आश्रम में बीड़ी-सिगरेट पीना मना था, ध्यान में उनका मन नहीं लगता था और वे परेशान रहते थे। दोनों ने सोचा, इस तरह परेशान रहने से गुरुजी से सीधे पूछना उचित होगा कि क्या हम यहाँ सिगरेट पी सकते हैं? अगले दिन मित्रों में से एक मुँह लटकाकर बगीचे में बैठा हुआ था।

दूसरा मित्र मजे से धुआँ उड़ाते हुए सामने से आया। उसे देखते ही पहला सकपका कर उठा।

“तुम कैसे यहाँ धुआँ उड़ा रहे हो? जब मैंने पूछा तो गुरुजी ने मना कर दिया था।”

“तुमने गुरुजी से क्या पूछा?”

“साफ-साफ पूछा था—क्या मैं ध्यान करते समय सिगरेट पी सकता हूँ?”

उन्होंने कहा—न, बिल्कुल नहीं।”

“मैंने उसी बात को थोड़ा बदलकर पूछा था—क्या मैं सिगरेट पीते हुए ध्यान कर सकता हूँ? उन्होंने कहा—
खुशी से।” यह कहकर दूसरा हँस पड़ा।

मन यदि शांत रहे तो कोई भी काम मुश्किल नहीं लगेगा।

आपने कब-कब शांति का अनुभव किया है?

भरपेट भोजन किए लोगों को देखिए। थककर सो रहे होंगे।

सुकून पाने के लिए पीता हूँ—यों कहते हुए कुछ लोग शराब पीकर बेहोश पड़े मिलेंगे।

इस तरह निष्क्रिय रहने का नाम शांति नहीं है।

चित्त शांत हो तो मन पूरी जागरूकता के साथ किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहेगा।

आप हरियाली से पटे हुए किसी पर्वत को देखते हुए बैठे होते हैं। उस समय मन शांति और आनंद का अनुभव कर रहा होगा। तभी वृक्षों की ओर से लंबे-लंबे दाँतोंवाला कोई हाथी निकलता हुआ दिखाई दे तो शांति गायब हो जाएगी। बचने का रास्ता न पाकर आप सकपका उठेंगे, है न? फौरन अपने को बचाने की काररवाई में लग जाएँगे। लेकिन यदि आपका चित्त शांत रहे तो हाथी को देखकर मन चकित नहीं होगा। आमतौर पर कब-कब आपकी शांति भंग होती है?

जब दूसरे लोग आपकी अपेक्षा के अनुरूप काम नहीं करते, तब क्रोध आता है, तनाव बढ़ जाता है।

जहाँ लोग आपके खिलाफ मुँह नहीं खोलते और नम्रता के साथ आपकी हर बात को स्वीकार कर लेते हैं, वहाँ आप शांति का अनुभव करते हैं। इसका मतलब यह है कि आपको शांत रखने के लिए आपके घमंड को खुराक देनी पड़ती है।

अच्छी तरह समझ लीजिए, आपके गर्व और अहंकार का समर्थन करनेवाले दरअसल आपके मित्र नहीं हैं। वे तो आपके बुरे दुश्मन हैं, जो आपको अज्ञान में धकेल कर आपकी उन्नति में बाधा डाल रहे हैं। आप अपने माहौल को शांत रखने में चूक गए थे। मन की ये सारी उलझनें इसीलिए पैदा हुईं। आपने अंदर की शक्ति को नियंत्रित करके उसे आपकी इच्छानुसार काम करने की सीख नहीं दी थी, सारी गड़बड़ी का कारण यही है।

आप आंतरिक रूप से पूरी शांति से रहते हुए बाहर से चुस्त-दुरुस्त भी रह सकते हैं।

आंतरिक शांति पाने के लिए क्या करना होगा?

नियमपूर्वक योग और ध्यान के अभ्यास से अपनी ऊर्जा को तितर-बितर हुए बिना व्यवस्थित रख सकते हैं। मन को इस तरह अनुशासन में रखने पर ही आपकी क्षमता पूर्ण रूप से व्यक्त हो सकेगी।



क्या पवित्र ग्रंथों के पाठक पुण्यात्मा हैं?

फर्ज कीजिए कि आपके नगर में कोई भगवद्गीता, बाइबल या कुरान शरीफ को जला डालता है। उसका अंजाम क्या होगा? इसके बदले कुछ लोग नगर को ही जला डालेंगे, ठीक है न?

अपने ईश्वर के श्रीमुख से निकली वाणी के रूप में आपके द्वारा समादृत वह छपी हुई पुस्तक उसी ईश्वर द्वारा बनाए गए सह-मानव की तुलना में आपको ज्यादा मूल्यवान् लगती है। क्यों?

जिन लोगों ने ईश्वर के बारे में आपको बताया है, उन्होंने भावावेश में इन ग्रंथों की महिमा का वर्णन किया है और आपके मन में अमिट रूप से यह विश्वास बिठा दिया है कि ये पवित्र ग्रंथ हैं।

मैं यह नहीं कहता कि ईश्वरीय वाणी के रूप में कथित उन पुस्तकों में पावनता नहीं है। मैं यह प्रतिवाद नहीं करता कि उनमें सच्चाई नहीं है। मेरा मतलब यही है कि उन ग्रंथों की सहायता से आप राम, कृष्ण या ईसा मसीह को आदर्श मानते हुए जीवन को उसी पूर्णता में समझने की अपनी अभिलाषा पूरी कर सकते हैं। उनका प्रयोजन बस, इतना ही है।

मैं यही कहना चाहता हूँ कि उन महापुरुषों के वचनों का पाठ करने मात्र से आप श्रेष्ठ हो जाएँगे, यह विश्वास मूर्खतापूर्ण है। फिर महापुरुष ये बातें किसलिए कह गए हैं?

आप कोई मजेदार चुटकुला सुनते हैं या एक अच्छी पुस्तक पढ़ते हैं अथवा कोई दिलचस्प फिल्म देखते हैं। उसके तुरंत बाद आप क्या करेंगे? आपने जिस खुशी

का आस्वादन किया, उसे किसी के साथ बाँट लेने की प्यास आपके अंदर उठ सकती है।

आनंदपूर्ण कोई अनुभव मिलने पर उसे अपने घनिष्ठ मित्र या बंधु के साथ बाँटने की इच्छा तीव्र होती है न? आपके धर्मग्रंथ भी इसी भावना के साथ रचित हुए हैं। कुछ लोगों ने बहुत ही अद्भुत अनुभव पाए। उन्होंने उन अनुभवों को आपके साथ बाँटना चाहा, इसलिए अपने अनुभवों को पुस्तकों में लिखा, श्लोकों के रूप में सुनाया या और किसी रूप में उन्हें दर्ज किया।

उन अच्छे ग्रंथों ने यही संदेश देना चाहा है कि आपकी आत्मा, व्यक्तित्व और जीवन को कितना उन्नत व उदात्त बनना चाहिए।

इसे भूलकर मूलभूत उद्देश्य को ही निष्क्रिय बनाते हुए अपने सहजीवी मानव को ही जला रहे हैं न। यह कितनी बड़ी बेवकूफी है!

चाहे राम हों या कृष्ण, पैगंबर साहब हों या ईसा मसीह, उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता का सदुपयोग करते हुए गहन-गंभीर सच्चाइयों को अपने अनुभवों के माध्यम से जीवन में साकार करके आनंदमय जीवन जिया था। इसीलिए वे उन्नत स्थिति पर पहुँचे थे।

लेकिन आप?

भगवद्गीता को पढ़ चुकने के बाद यही महसूस करते हैं कि आप ज्ञानवान् हो गए हैं। परम सत्य को समझ लेने का स्वाँग भरते हुए आप वाचाल बन जाते हैं।

यह कैसी बात है, इसे समझने के लिए एक लतीफा सुनिए।

शंकरन पिल्लै अपने प्रवास में किसी सुंदर समुद्र-तट पर गए थे। वहाँ पर सुखद व शीतल वायु बह रही थी। इतना अपूर्व आनंद उन्हें और कहीं नहीं मिला था। अपने इस सुखद अनुभव को उन्होंने तत्काल अपनी पत्नी के साथ बाँटना चाहा। लेकिन उनकी पत्नी उन दिनों इलाज के लिए किसी अस्पताल में भरती हुई थीं।

शंकरन पिल्लै ने तुरंत एक ताबूत खरीदा। उसके अंदर थोड़ी समुद्री रेत बिछाई और समुद्री हवा को भी थोड़ा भरने के बाद ताबूत को बंद करके सील-मुहर लगा दी।

“मैंने जिस सुखद वायु का अनुभव किया, वह एहसास तुम भी पा सको, इसी मकसद के साथ इस पेटी को मैं तुम्हें प्यार-मुहब्बत के साथ भेज रहा हूँ। इस संदूक में लेट जाओ और ढक्कन को अच्छी तरह से बंद कर लो। समुद्र-तट पर बैठकर सुहावनी हवा खाने का एहसास होगा।” यों एक परची में लिखकर उन्होंने पत्नी के पास वह पेटी भेज दी।

कहने की जरूरत नहीं है कि उसके बाद शंकरन पिल्लै का क्या हश्र हुआ।

इच्छा करने से समस्याएँ पैदा हो जाती हैं

किसी चीज को प्राप्त करने की प्रबल इच्छा मन में उठती है। उसके साथ ही भय और आशंका मन पर हावी हो जाती है कि इच्छित वस्तु बेरोक-टोक मिलनी चाहिए। कहीं उसके हासिल होने में अड़चन तो नहीं आएगी? जिस स्थिति को आप संभाल नहीं पाते, यदि वही स्थिति सामने आ जाए तो आप उसे समस्या मान लेते हैं। दरअसल समस्या कहीं बाहर नहीं है। वह तो आपके मन में ही रहती है।

खाना नहीं मिला? मान लीजिए कि आज एकादशी है। फिर समस्या किस बात की? जीवन के मार्ग पर रोड़ा न आए तो जिंदगी एकदम फीकी पड़ जाएगी। खाते वक्त स्वाद लिये बिना भोजन को सीधे अपने पेट में ठूस लेना चाहिए?

जीवन को स्वाद लेकर भोगे बिना केवल उसके फलों को उपहार-स्वरूप माँगना कहाँ तक उचित है?

पवित्र ग्रंथों का पाठ करने मात्र से उन्हीं अनुभवों को पा लेने की आपकी घोषणा में और शंकरन पिल्लै द्वारा भेजे गए संदूक के अंदर लेटकर समुद्री हवा का अनुभव करने में कोई खास अंतर नहीं है।

समुद्र-तट पर शंकरन पिल्लै द्वारा प्राप्त अनुभवों को आप स्वयं पाना चाहते हैं तो यह जान लेने की तो पहल करनी चाहिए कि समुद्र-तट पर पहुँचने का रास्ता कौन सा है और वहाँ कैसे पहुँचें।

महापुरुषों ने अपने जीवन में पाए अद्भुत अनुभवों को दूसरों के साथ बाँटने के लिए उन्हें दर्ज कर रखा है। इन्हीं को हम धर्मग्रंथ कहते हैं, वेद कहते हैं। इन पावन ग्रंथों को कंठस्थ कर उन्हें मात्र दोहराना क्या विकास कहलाएगा? महापुरुषों ने जो कहा है, उसे अपने अनुभवों में साकार करने का प्रयत्न कीजिए।

अपनी जिंदगी को खुद जीने लग जाइए। परम सत्य को स्वयं अपने अनुभव में पाने का उपक्रम शुरू कीजिए। अच्छा, सत्य को समझने के लिए पहला कदम कहाँ रखना है?

अभी बताता हूँ।



भगवान् के इंतजार में बैठे न रहिए

सत्य को समझने के लिए पहला कदम कहाँ रखना है?

चाहे आपको पड़ोस की गली तक जाना है या फिर आपकी इच्छा चंद्रमंडल पहुँचने की है, दोनों स्थितियों में आप यात्रा कहाँ से शुरू करेंगे? इस वक्त जहाँ बैठे हैं, वहीं से न! वहाँ से पहला कदम रखेंगे, फिर अगला कदम—इसी क्रम से ही तो यात्रा करते हैं।

आध्यात्मिक यात्रा के उद्देश्य से, अपने स्थान से उठते ही, यदि आप सोचना शुरू करें कि आप स्वर्ग के द्वार पर खड़े हैं तो यह स्वयं अपने आपको धोखा देने की कल्पना हो सकती है। यह आपकी यात्रा की शुरुआत कतई नहीं।

आप जिस बात को नहीं जानते, साहस के साथ स्वीकार कीजिए कि मुझे इसका पता नहीं है।

बेकार की कल्पना न पालिए कि वेदांत और दर्शन का रहस्य आपकी समझ में आ गया है।

किस रंग के कपड़े पहनने हैं, किन गुणों को अपनाना है, किन शब्दों का चयन करके बात करनी है, किन ऊँचाइयों को छूना है—यों आपकी सभी आवश्यकताओं का निर्णय आपकी इच्छा ही करती है।

किसी तरह उचककर बुलंदी पर पहुँच गए तो आप विजय का उत्सव मनाएँगे। उलटे, उस बुलंदी को छू न पाए तो क्या आप वेदांत का बखान करेंगे?

शंकरन पिल्लै लगातार वेदांत की कक्षाओं में जाते रहे।

“यहाँ सबकुछ माया है। ‘मैं, तुम, वह’—इनमें कोई भेद नहीं। सब अभिन्न हैं, एकमेव हैं। एक के सिवा दूजा नहीं है। तुम ही मैं हूँ, मैं ही तुम हो।” वेदांत के ऐसे

सिद्धांत सुनते-सुनते शंकरन पिल्लै मायावाद में रच-बस गए और मानने लगे कि वे इस ज्ञान में पारंगत हो गए हैं।

सड़क पर चलते समय अपने आपको दार्शनिक मानते हुए शंकरन पिल्लै सिर ऊँचा किए चलने लगे।

भूख लगी तो रेस्तराँ में चले गए। मनचाही चीजें मँगवाकर पेट भर खाया। तृप्त होकर डकार भरी।

गल्ले पर बैठे होटल मैनेजर को देखा। ‘वह मैं हूँ, मैं ही वह है’, यों विचार करते हुए बिल का पैसा दिए बिना बाहर निकल गए। उन्हें खींच लाने के लिए आदमी भेजा गया। फिर उन्हें अदालत में पेश किया गया।

“महामहिम न्यायाधीश, मैं ही सब मैं हूँ और कुछ भी मैं नहीं हूँ। अगर आप भी मेरे साथ वेदांत की कक्षा में आकर पढ़े होते तो यह सच्चाई आपकी समझ में आ गई होती। तब यह मामला आपके पास नहीं आया होता। मैंने जो खाया, उसके लिए भला मैं ही खुद को पैसा क्यों दूँ?”

शंकरन पिल्लै मामले को उलझाने की कोशिश कर रहे हैं, यही मानकर न्यायाधीश ने आदेश दिया, “इस आदमी को दस चाबुक मारो।” पीठ पर चाबुक के वार लगते ही शंकरन पिल्लै दर्द से तड़प उठे।

“वेदांत आपकी समझ में नहीं आ रहा है, न्यायपति। जब मैंने कोई गलती नहीं की तो उसके लिए क्यों मार रहे हैं?” पिल्लै का प्रलाप जारी रहा।

न्यायाधीश ने कहा, “आपको किसने मारा यहाँ? चाबुक मारनेवाला अलग और आप अलग कहाँ! वह तो खुद अपने को मार रहा है।”

“न, मैं कोई वेदांती नहीं हूँ। मैंने होटल में जो भी खाया, उसका पैसा दे देता हूँ। चाबुक मारना बंद करें।” शंकरन पिल्लै ने घुटने टेक दिए।

इसी प्रकार जिन लोगों को अपने मन को सुलझी हुई स्थिति में रखना नहीं आता, वे अपनी याददाश्त, नाना प्रकार के विचार, संकल्प-विकल्प, कल्पना, सनक, नोद, पठित ज्ञान, बूझ-अबूझ आदि मन की विभिन्न परतों को एक साथ मिश्रित करके उलझन में पड़ जाते हैं।

कहते हैं, इस धरती पर भगवान् नौ बार अवतार ले चुके हैं।

अपने चारों ओर के माहौल पर नजर दौड़ाए। भगवान् के इतनी बार आने से क्या कोई कारगर परिवर्तन आए हैं?

अतिरंजनापूर्ण विज्ञापनों के बिना

क्या व्यापार नहीं चल सकता?

नगर का महशूर रेस्तराँ। चकाचक चमक रही मेजें, भड़कीली वर्दियों में बैरे, अलंकारपूर्ण बिजली की बत्तियों की शृंखला; लेकिन वहाँ खाना बनाने में लगे रसोइए; खानेवालों के बारे में जरा भी परवाह किए बिना भोज्य-पदार्थों में सस्ती और स्तरहीन चीजों को मिलाते हैं।

एक और रेस्तराँ है। बिजली की सजावट नहीं है। लुभावने शब्दाडंबर नहीं; लेकिन वहाँ खाना पकाने वाले रसोइए खानेवालों के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखते हुए सस्ती और स्तरहीन चीजों को भोज्य-पदार्थों में कभी नहीं मिलाते।

आप इनमें से किस रेस्तराँ में जाना पसंद करेंगे? ग्राहकों की वास्तविक परवाह करनेवाले रेस्तराँ में या लुभावने शब्दाडंबर के साथ स्वागत करने के बाद घटिया भोजन बेचनेवाले रेस्तराँ में?

घटिया किस्म की चीजों का उत्पाद करके शब्दाडंबर पूर्ण विज्ञापनों के जरिए ठगते हुए उन्हें उपभोक्ताओं के सिर मढ़ना संपूर्ण दुनिया को लूटने जैसा गुनाह है।

विज्ञापन का लक्ष्य सच बोलने का होना चाहिए। वह लोगों को केवल यह जानकारी दे कि फलाँ चीज फलाँ जगह पर मिलती है। जनता को ठगकर माल बेचने का कुतंत्र नहीं होना चाहिए। यदि उत्पादक ग्राहक को अपने जैसा मान ले तो अपराध की मनोवृत्ति नहीं पनपेगी। व्यापार अपने आप फूलेगा-फलेगा। व्यवसाय सुदीर्घ काल तक स्थायी बना रहेगा।

चाहे कोई आए या चला जाए, जब तक आप अपने आपको उन्नत करने के लिए तैयार नहीं होते, आपके जीवन को कोई नहीं बदल सकता। मसीहा-महापुरुषों का केवल आगमन लोगों में पूरी जागरूकता नहीं ला सकता। लोगों में बदलाव तभी आता है, जब वे बदलने की इच्छा करते हैं। अगर आप स्वयं अपनी जिंदगी जीना नहीं सीखेंगे तो दसवीं बार भगवान् के अवतार लेने से भी कोई अंतर आने वाला नहीं है। दस हजार बार महान् आत्माएँ आएँ, तब भी कुछ होने वाला नहीं।

भगवान् के इंतजार में बैठे न रहिए। किसी के बताए दर्शन या सिद्धांत पर जस-का-तस विश्वास न कीजिए। पुस्तकें भले ही महापुरुषों से संबंधित हों, वे प्रेरक शक्ति के रूप में ही आपके काम आ सकती हैं। इन्हीं को अपनी मंजिल समझकर विश्राम न कीजिए।

अपने मन में जमा हुए बेकार के कूड़ा-करकट को हटाने पर ही आप वहाँ अमूल्य निधियाँ भर सकते हैं।

जिस बात को नहीं जानते, मान लीजिए कि मैं नहीं जानता। तभी आपका अहंकार दूर होगा और सत्य को जान लेने का अवसर मिल पाएगा।



यश और लोकप्रियता कैसे पाएँ?

पिछले दिनों किसी कलाकार ने मुझसे प्रश्न किया, “सद्गुरु, इस दुनिया में धनवान् व्यक्तियों को जो आदर-सम्मान मिलता है, वह कलाकारों को नहीं मिलता, जो अपने सृजन-कर्म में ब्रह्माजी से बराबरी कर सकते हैं। ऐसा क्यों होता है?” उनकी आवाज गमगीन थी।

वास्तव में सर्जक कौन है?

आप पहले से विद्यमान वस्तुओं को इधर-उधर से बदलने का ही तो काम कर रहे हैं। कहिए, आपने नए सिरे से किस चीज का सृजन किया?

क्या आपने विज्ञान की यह कहानी सुनी है?

आज से पचास साल बाद एक सुदिन ... पृथ्वी तल के सभी विख्यात वैज्ञानिक भगवान् के सामने एकत्र हो गए।

“हे ईश्वर! हम लोगों ने ऐसे औषधों का आविष्कार कर लिया है, जिनसे मृत्यु टल सकती है। नए जीवों को उत्पन्न करने की कला में भी हम माहिर हो गए हैं। इनके अलावा, हमने पर्याप्त मात्रा में भोजन और पानी तैयार कर लिया है, दुनिया के किसी भी कोने में होनेवाली छोटी सी हलचल को उसी क्षण जानने की क्षमता प्राप्त कर ली है। इस समय हम लोग आपके सभी कार्यों का निष्पादन कर रहे हैं। ऐसे में हे ईश्वर! आपकी क्या आवश्यकता है। चुपचाप सेवानिवृत्त होकर विश्राम ले लो।” वैज्ञानिकों ने एक स्वर में कहा।

भगवान् हँस पड़े। बोले, “आप लोग किसी एक वस्तु का सृजन कर दिखाइए। मैं बेशक विश्राम करने चला जाऊँगा।”

एक वैज्ञानिक ने वहीं पास में पड़ी चिकनी गीली मिट्टी को उठाकर दिखाया और पूछा, “क्या मैं इसमें जान फूँककर दिखाऊँ?”

“वह मिट्टी तो मेरी देन है। आप लोग स्वयं मिट्टी बनाकर दिखाइए।” वैज्ञानिक लोग निरुत्तर हो गए, चुपचाप सिर झुका लिया।

प्रकृति ने जो दिया था, आदिम मानव ने अपनी क्षमता और सामर्थ्य के अनुसार उसका उपयोग किया।

पत्थरों को तराशकर उसने हथियार बनाए, मिट्टी से बरतन-भाँडे बनाना सीख लिया, लकड़ी काट-काटकर रहने के लिए मकान बनाए।

और आप?

आपने उसी प्रकृति की दी हुई दूसरी चीजों का उपयोग करते हुए गोला-बारूद बनाया, बम बनाया। अब आणविक ऊर्जा केंद्रों का निर्माण कर रहे हैं। उन्हें रॉकेट और उपग्रहों के रूप में बदलकर उनका प्रयोग करते हैं।

आपसे जो आविष्कार रह जाएँगे, अगली पीढ़ी आकर उन्हें ईजाद करेगी, बस।

जिस दिन से पृथ्वी अस्तित्व में आई, तभी से वायु है। अंतरिक्ष की विभिन्न परतों में तरंग-वैविध्य करने की क्षमता वायु में उसी समय से मौजूद रही। उसका निरीक्षण करके अपनी जरूरतों के अनुसार टेलीफोन और सेलफोन बनाने में मनुष्य को करोड़ों वर्ष लग गए।

जो चीज पहले से मौजूद है, उसी को अपनी सुविधा के अनुसार विविध प्रकार के रूपाकार देते हैं, फिर उनका उपयोग करते हैं। इसे छोड़कर आप किस नई चीज को अपने तर्ई बनाने का दम भर सकते हैं?

आप कोई चित्रकार हो सकते हैं, नामी साहित्यकार हो सकते हैं, मशहूर गायक-कलाकार हो सकते हैं या कला के किसी भी क्षेत्र के जाने-माने हस्ताक्षर हो सकते हैं। आप जो भी काम कर रहे हैं, उससे स्वयं आपको आनंद मिलना चाहिए, तभी आप अपनी क्षमता को मनोवांछित ढंग से अभिव्यक्त कर सकते हैं।

अपनी क्षमता को अभिव्यक्ति देने के दौरान क्या आप दूसरों को प्रसन्न बनाए रखने में भी काम आते हैं? बोझ बनकर दिल को दबानेवाली समस्याओं को भूलकर यदि वे लोग कम-से-कम चंद घंटे शांति और आनंद के साथ रहें, क्या आप इसमें काम आ रहे हैं?

यही पर्याप्त है। श्रेष्ठ कलाकार या सर्जक के रूप में प्रशंसित होने की तुलना में यही श्रेयस्कर है।

अगला आदमी आपकी तुलना में लोकप्रिय बन जाए तो होने दीजिए।

माना कि आपका मूल्य कम आँका जा रहा है, रहने दीजिए। क्या फर्क पड़ने वाला है?

भगवान् का दर्शन-लाभ कहाँ मिल सकता है?

रवींद्रनाथ ठाकुर सुप्रसिद्ध कवि हुए हैं। उन्होंने प्रकृति, सौंदर्य और दिव्यता पर एक से बढ़कर एक सुंदर कविताएँ रची हैं।

एक दिन किसी बुजुर्ग रिश्तेदार ने रवींद्रनाथ से पूछा, “वत्स, भाषा पर अद्भुत अधिकार रखने के कारण सुंदर-से-सुंदर शब्द तुम्हारी कविता में खिल जाते हैं। परंतु उन शब्दों की आत्मा में जो संवेदनाएँ हैं, क्या तुमने उन्हें महसूस किया है?”

रवींद्रनाथ निरुत्तर हो गए, अपना सिर झुका लिया।

“वत्स, उसके लिए जिंदगी को जीने का अभ्यास करना होगा।” मान्य बंधुवर हँसते हुए बोले और चले गए।

एक सुहावनी शाम। अच्छी-खासी बारिश के बाद बादल छँट गए थे। सूर्यास्त का आनंद लेने के लिए कविवर समुद्र-तट की ओर चल रहे थे। रास्ते में जहाँ-तहाँ मटमैला पानी जमा होकर छोटे-छोटे तलैएँ सरीखे दिखाई दे रहे थे। गंदे पानी से बचने के लिहाज से कवींद्र नीचे की ओर दृष्टि गड़ाए आगे बढ़ रहे थे।

चलते-चलते हठात् भौंचक्के रह गए। समुद्र-तट पर जाकर सूर्यास्त के जिस सुंदर दृश्य का आस्वादन करना चाहते थे, वही सूर्यास्त वहाँ किसी गँदले तलैएँ में घटित हो रहा था। कवींद्र भाव-विभोर हो गए। उनके नयन भर आए। उसी क्षण सृष्टि-रचना के निगूढ़ रहस्य से साक्षात्कार हो गया। सत्य-दर्शन की कौंध पाकर उनका चेहरा नई कांति से चमक उठा। वे अपने उसी मान्य बंधुवर के घर की ओर भागे। रवींद्रनाथ को देखते हुए बुजुर्ग समझ गए। बोले, “वत्स, तुमने सत्य के दर्शन कर लिये हैं। उसे मैं तुम्हारे चेहरे पर देख सकता हूँ।”

यों प्रत्येक छोटी बात में ईश्वरीयता छिपी हुई है। जीवन को पूरी तीव्रता के साथ जीने में चूक करने की वजह से आप उसे देख पाने में असमर्थ रह जाते हैं।

आप किसी भी धर्म के हो सकते हैं। बताइए, आपके ईश्वर का स्वरूप क्या है?

भले ही उन पर पुष्प-वर्षा करके पूजन-अर्चन करें, तुरंत प्रसन्न होकर आपको रियायतें और सुविधाएँ देने वाले नहीं हैं। यदि आप उन पर थूक दें तो फौरन सजा देने वाले भी नहीं हैं। स्तुति और निंदा की परवाह किए बिना ईश्वर शत-प्रतिशत निष्ठा के साथ अपने कार्य में लगे हुए हैं।

सच्चे सर्जक को यही तो शोभा देता है।

कला का क्षेत्र ही नहीं, आप जिस किसी भी क्षेत्र में काम कर रहे हों, अपने लिए ही नहीं बल्कि अपने आस-पास के सभी लोगों को आनंद देनेवाला माहौल पैदा कीजिए। स्नेह की मिठास मिलाते हुए पूरी लगन के साथ अपनी क्षमता को अभिव्यक्त कीजिए।

कीर्ति और लोकप्रियता आपको ढूँढ़ते हुए स्वयं आ जाएँगी।



अपने पर विश्वास कीजिए, ईश्वर पर नहीं

जी वन के प्रत्येक पहलू और सृष्टि के प्रत्येक रहस्य का सूक्ष्म निरीक्षण करके एक पूजनीय संस्कृति यहाँ निर्मित हुई है। ऐसी संस्कृति और कहीं देखने को नहीं मिलेगी।

जीवन की पूर्णता को उसकी जड़ तक पहुँचकर अनुभव करके आत्मसात् करने योग्य ऐसी महान् संस्कृति में जन्म लेने के बावजूद हम दुनिया में मसखरों की तरह दिख रहे हैं। इसका कारण क्या है?

इस दुनिया में हम लोग मसखरों की तरह इसलिए व्यवहार कर रहे हैं कि हम अपनी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए भी स्वयं पर कम और ईश्वर पर ज्यादा विश्वास किए हुए बैठे हैं।

संसार में केंचुए से लेकर हाथी तक सारे ही जानवर अपनी जरूरत की चीजों को ढूँढ़कर पाने के लिए अपनी निजी क्षमता पर निर्भर रहते हैं। वे इस काम में किसी से मदद नहीं माँगते।

इन सभी की तुलना में अधिक बुद्धिमान माना जानेवाला मनुष्य अपनी जरूरत की चीजों के लिए भगवान् का मुँहताज बनकर बैठा हुआ है। जीवित रहने के लिए और अपनी सुरक्षा करने के लिए आपको जो हाथ-पाँव दिए गए हैं, वे ही पर्याप्त हैं। अपने शरीर और मन का बढ़िया उपयोग कैसे किया जाए, इसका अभ्यास पाना मात्र काफी है।

उसे छोड़कर अपने जीवन-यापन हेतु सहायता करने के लिए ईश्वर को बुलाना ओछापन ही तो है।

हाँ, अपने दैनिक जीवन के लिए हमें ईश्वर की आवश्यकता नहीं है।

गली-कूचे और कस्बों में मंदिरों की भरमार है। यों लाखों की संख्या में मठ-मंदिर और आराधनालयों के होते हुए भी हर कहीं शोक-संतप्त चेहरे ही नजर आ रहे हैं। क्यों?

सत्य और उपदेशों को एक साथ मिलाकर देखने की गड़बड़ी से उत्पन्न समस्या है यह।

आप हर साँस में यही कहते हैं, 'ईश्वर सर्व-शक्तिमान हैं। उनकी मरजी के बिना एक तिनका भी नहीं हिल सकता।'।

लेकिन सच-सच कहिए, ईश्वर पर भरोसा रखते हुए क्या आप स्वयं को पूर्ण रूप से उनके हाथों सौंप देंगे? नहीं न! उनकी बुद्धिमत्ता पर संदेह करते हुए हर दिन उनके सामने आँखें मूँदकर खड़े होकर आप ही तो भगवान् को सिखाते रहते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं!

आप उनसे यही कहते हैं, 'बिना मेहनत किए भोजन मिलता रहे, बिना पढ़े परीक्षा में उत्तीर्ण होते रहें और मेरी हर गलती व हर अपराध की अनदेखी की जाए। हे ईश्वर! इसमें आप सहायक बने रहें।' आपने ईश्वर को बीमे की तरह रख छोड़ा है, ताकि जिंदगी के अचानक पटरी से उतर जाने पर आपका बचाव हो सके।

'मेरे लिए ये-ये चीजें ले आओ और मुझे फलौं-फलौं आफतों से बचाया करो।' यों निर्देश देते हुए आप ईश्वर को अपना सेवक और अंगरक्षक बनाना चाहते हैं। यदि जीवन के खतरों के भय ने आपके अंदर ईश्वर से संबंधित विश्वासों को बढ़ाया हो तो आपके पास न ईश्वर बचेगा और न जीवन ही।

शंकरन पिल्लै के पास एक नौकर था। एक बार पिल्लै ने उससे कहा, "बाजार में जाकर शक्कर और नमक खरीद लाओ।" नौकर ने पहले थैली भरकर शक्कर खरीदा, उसके बाद नमक खरीदने जाते हुए उसे शंकरन पिल्लै की ताकीद याद आई, 'दोनों को मिलाकर नहीं लाना।'।

उसने सोचा कि थैली के अंदर का हिस्सा बाहर और बाहर का हिस्सा अंदर करने पर वह दूसरी थैली बन जाएगी। यही सोचकर उसने जब थैली पलटी तो सारा शक्कर गली में गिरकर बेकार हो गया।

थैली में नमक भरकर नौकर घर लौटा। शंकरन पिल्लै ने पूछा, “अरे, नमक तो है, शक्कर कहाँ है?”

“थैली के दूसरी तरफ है, यह देखिए।” कहते हुए नौकर ने थैली फिर पलट दी। सारा नमक जमीन पर गिरकर बेकार हो गया।

यही बात भय और आस्था के विषय में भी खरी उतरती है। दोनों को मिलाएँगे तो वह किसी काम का नहीं रहेगा। उसे ‘भक्ति’ का नाम देकर अपने आपको ठगिए मत।

अगर आप ईश्वर को अपने से श्रेष्ठ मानते हैं तो जीवन में अपनी प्रतीक्षा के विपरीत कोई बात घट जाने पर आपको यही सोचकर खुश होना चाहिए—‘अहा, सबकुछ भगवान् की इच्छा के अनुसार चल रहा है।’ क्या आप ऐसा कर सकते हैं?

इसके विपरीत, प्रार्थना के नाम पर आप भगवान् को यही आदेश देते रहते हैं कि मेरे जीवन को इस-इस तरह से बनाओ। जिस मन में संशय हो, वहाँ भक्ति नहीं टिक सकती। वहाँ तो ईश्वर के सामने विनयपूर्वक झुकने का पाखंड घट रहा है।

अपनी पहचान और अस्मिता को गँवाकर जिस तत्त्व के प्रति आस्था लगी है, उसमें घुल-मिलकर जाना, एकाकार हो जाना—इसी का नाम भक्ति है।

आपकी गलतियों की जिम्मेदारी लेने के लिए जब आपने सह मानव तैयार नहीं होते; तब उन्हें ‘ईश्वर की इच्छा’ कहते हुए उतार कर रखने के कंधे के रूप में आपने भगवान् को रखा है।

इसका नाम भक्ति नहीं, बल्कि पाखंड है।

यदि आप ईश्वर की सहायता के बिना अपनी जिंदगी बसर करना सीख लें तो आपका जीवन उन्नत बन जाएगा। आपकी आवश्यकता के लिए भरपूर भोजन-पानी मिल गया; वांछित जीवन-साथी, बाल-बच्चे, सुख-सुविधाएँ सबकुछ मिल गया।

फिर भी आपका मन और किसी चीज की तलब कर रहा है। उसका नाम क्या है?

इस सृष्टि का मूल क्या है, इसे जानने की इच्छा आपके अंदर जागी है, इसका अर्थ यही है। यही सच्चा अध्यात्म है। तभी आप ईश्वर से साक्षात्कार करने के लिए तैयार होंगे। तब तक उनके पीछे न पड़िए, उन्हें अकेले छोड़ दीजिए।



कौन सा अच्छा है और

कौन सा बुरा?

कौ न सा अच्छा है और बुरा कौन सा?

दरअसल इसका फैसला आपका अंतर्मन ही कर सकता है।

लेकिन, अब कौन इसका निर्णय ले रहा है?

समाज, परिवार और इर्द-गिर्द के लोगों द्वारा आपसे अपेक्षाएँ रखी गई हैं। अगर आप इन अपेक्षाओं को पूरा करते हैं तो अच्छे समझे जाते हैं, वरना बुरे माने जाते हैं।

‘जुआ खेलना बुरा है’, यह बात छुटपन से ही सिखाई गई होती तो घर में जुए का नाम लेना भी गुनाह माना जाता। लेकिन जुआ खेलने के क्लब में जाने पर वह अपराध-बोध रफूचककर हो जाता है। वहाँ जुआ खेले बिना बैठे रहेंगे तो आप बुद्धू माने जाएँगे।

डाकुओं के डेरे में बचपन से ही चोरी और डाका डालने की विद्या सिखाई जाती है। उस कला में सिद्धहस्त होने के लिए कुछ खास देवताओं की उपासना करने की परंपरा उन लोगों के बीच में प्रचलित है। अगर आप उस कुनबे में पैदा हुए होते तो चौर्य-कला की बारीकियों में महारत हासिल करने पर ही आप कामयाब माने जाएँगे।

पालन-परवरिश के दौरान जो बातें बारंबार आपके मन में बिठा दी जाती हैं, उन्हीं के आधार पर आप अपने मन में अच्छे-बुरे की पहचान का मानदंड बना लेते हैं। समाज की दृष्टि में अपने को भला इनसान दिखाने के लिए आप अपनी असली प्रकृति को छिपाते हैं। इसी कारण समस्या उत्पन्न हो जाती है।

इसी तरह शंकरन पिल्लै दूसरों के मुँह से यही बात सुनते थे कि भलाई करनेवाला ही स्वर्गलोक पहुँच पाता है। इसलिए वे बुराइयों से बचते हुए सावधानीपूर्वक जीने लगे। एक दिन उनकी जीवन-लीला समाप्त हुई।

अगला दृश्य स्वर्ग की दहलीज पर मंचित हुआ। द्वारस्थ देव-गण पिल्लै को वहीं रोककर आपस में सलाह-मशविरा करने लगे। फिर उनके पास आकर बोले, “जीवन में एक बुरा काम करने पर पहली मंजिल, दो बुरे कार्यों पर दूसरी मंजिल, इस तरह स्वर्ग में अलग-अलग स्थानों का प्रावधान है। अभी तक यहाँ ऐसा कोई भी मानव नहीं पहुँचा है, जिसने एक भी पाप-कर्म नहीं किया हो। हम लोग इसी पशोपेश में हैं कि आपको कहाँ भेजा जाए।”

शंकरन पिल्लै चौंक पड़े। बड़बड़ाने लगे, ‘यह कैसा न्याय है? जीवन भर अच्छे काम ही करता रहा, इसलिए भूलोक में भी लोग मुझे दूर रखते थे। यहाँ भी मेरे साथ यही हो रहा है।’

“हाँ, मिस्टर पिल्लै! हम आपके प्राणों को तीन घंटे के लिए लौटा रहे हैं। इसी मोहलत के अंदर कोई बुरा काम करके वापस आ जाना।”

भूलोक में शंकरन पिल्लै का शरीर फिर से जी उठा। इतने कम समय में कौन सा बुरा काम किया जाए? पिल्लै सोचने लगे।

एकाएक उन्हें उस प्रौढ़ा कन्या की याद आई, जो पासवाली गली में रहती है और जो आँखों के इशारे से उन्हें कई बार निमंत्रण दे चुकी है। लेकिन पिल्लै यही सोचकर उसके निमंत्रण को अनदेखा करते रहे कि पत्नी के

रहते हुए पराई औरत को देखना भी पाप है।

अब कोई पाप-कर्म करना जरूरी था। शंकरन पिल्लै तेजी से उसी अविवाहिता के यहाँ चले गए। उसके प्रति प्रेम जाहिर करते हुए बोले, “प्रिये, तुम्हारे साथ कुछ समय आमोद से बिताने की इच्छा हुई, इसलिए चला आया हूँ।” महिला ने दोनों हाथ बढ़ाकर उनका स्वागत किया। उनकी हर इच्छा पूरी करने के लिए वह राजी थी।

जब सबकुछ समाप्त हुआ तो पिल्लै को तसल्ली हो गई, चलो, कम-से-कम एक पाप-कर्म को अंजाम देने में सफल हो गया, स्वर्ग में स्थान सुनिश्चित कर लिया। लेकिन उस महिला ने उनके दोनों हाथ पकड़ लिये। गद्गद स्वर में बोली, ‘जिस स्त्री ने अभी तक जीवन का सुख नहीं भोगा है, उसके लिए पता है, आपने कितनी बड़ी भलाई की है?’

स्वर्ग के फाटक जोर से बंद होने की आवाज यहीं पर पिल्लै के कानों में पड़ी। जो लोग अपने को पुण्यात्मा और भले मानस मानते हैं, उनकी हालत धोबी के कुत्ते जैसी हो जाती है। वे न इधर के रह पाते हैं, न उधर के।

जीवन के अगले चरण में जाना हो तो क्या करना चाहिए?

चाहे आप किसी व्यवसाय में हों या अध्यात्म के मार्ग पर हों, नए तौर पर जो भी काम करना चाहें, उसमें पूरे ध्यान और निष्ठा के साथ लग जाएँ। जिस काम को हाथ में लिया हो, उसे सफलता के साथ पूरा करने के लिए अपनी संपूर्ण क्षमता का उपयोग कीजिए। भले ही वह काम आपके लिए परिचित या अभ्यस्त हो, तब भी उसे असावधानी के साथ या फर्ज निभाने की तरह न करके ऐसे उत्साह के साथ कीजिए, मानो आप प्रत्येक क्षण में कोई नया काम कर रहे हैं। अपनी पूरी क्षमता को प्रकट करते हुए हार्दिक इच्छा और संपूर्ण लगन के साथ उसे करके देखिए।

ऐसा करने पर आप नई मंजिलों पर पहुँच जाएँगे।

दुनिया के ज्यादातर संकट इसी किस्म के लोगों के कारण उत्पन्न होते हैं, जो अपने को भलमानुस मानते हैं।

वास्तव में नेकी और बदी कार्य में नहीं, बल्कि विचार में रहती है।

यहाँ पर एक कहानी याद आ रही है, जिसे श्रीरामकृष्ण परमहंस बार-बार सुनाते थे।

ऐसे दो मित्र रहते थे, जो सप्ताह के अंत में वेश्यालय जाया करते थे। एक बार उस नगर में भगवद्गीता पर प्रवचन चल रहा था। एक मित्र ने तय किया कि अब की बार गीता-प्रवचन सुना जाए। दूसरा बाकायदा वेश्यालय चला गया। विशाल हॉल में बैठकर गीता सुन रहे व्यक्ति के मन में तना-तनी मच गई—‘मैं भी कैसा मूर्ख हूँ कि यहाँ आकर बैठा हूँ! उधर मेरा दोस्त मजे उड़ा रहा होगा।’

वेश्या के संग बैठा व्यक्ति मन-ही-मन अफसोस कर रहा था—‘अहा, जीवन में उद्धार पाने के लिए आवश्यक साधन गीता ही तो है। मेरा मन मित्र जैसा सुलझा हुआ नहीं रहा। हाय!’

दोनों में से कौन अच्छा है और कौन बुरा?

गीता के श्रवण मात्र से पुण्य मिलेगा, यों सोचकर अपने को ठगते हुए वेश्या पर ध्यान करनेवाले की अपेक्षा वेश्यालय में बैठे रहने पर भी गीता की महत्ता पर विचार रनेवाला बेहतर था न!

द्वेष और दर्द के बिना प्रेम से किया गया प्रत्येक काम अच्छा कार्य ही है।

कोई बाघ हिरन का शिकार करता है तो उसका कारण द्वेष नहीं, बल्कि भूख है। लेकिन अपने सह-मानव के प्रति द्वेषवश कटु वचन बोलकर उसके दिल को दुखाना उससे भी बड़ी क्रूरता है।

दूसरों की दृष्टि में स्वयं को अच्छा दिखाने का प्रयत्न छोड़कर सच्चा बने रहने की कोशिश कीजिए।



क्षमताओं को कैसे बढ़ाएँ?

आपने अनेक क्षमता-संपन्न लोगों पर गौर किया होगा कि किस तरह वे कामयाबी की सीढ़ियों पर धड़ाधड़ चढ़ते हुए नई बुलंदियाँ छू लेते हैं। यह भी देखा होगा कि एक मुकाम पर आकर उनका विकास एकाएक रुक जाता है। उसके बाद उनसे किसी भी नई उपलब्धि की प्रतीक्षा नहीं की जा सकती।

क्यों?

क्या उनके मन में और आगे बढ़ने की ललक नहीं रहती होगी? जरूर होगी। फिर भी, इसी डर के मारे कि जितना कुछ मिला है, कहीं हाथ से न छूट जाए, वे उसे मजबूती से पकड़े रहते हैं।

उसके बाद विकास कहाँ से होगा?

आप गमले में रोपा गया कोई पौधा खरीदते हैं, साए में रखकर जतन से उसकी परवरिश करते हैं। गमले के अंदर पौधा तेजी से एक हद तक बढ़ता है, फिर आगे परवान चढ़ने के लिए पर्याप्त स्थान न मिलने की वजह से अपनी बढ़त को सीमित कर लेता है।

यदि वही पौधा जमीन पर लगाया गया होता तो वह एक बड़े वृक्ष का रूप ले लेता। अपनी नई-नई डालियों को चारों दिशाओं में भेजकर खूब फूला-फला होता।

यही बात आपके जीवन के विषय में भी सही है।

जीवन में उन्नति पाने की इच्छा अपने अंदर लहलहा रही है। लेकिन मौजूदा गमले को तोड़कर फेंकने की हिचक के कारण विकास रुका हुआ है।

अपने चारों ओर स्वयं आपने जो जाल बुन रखे हैं, उनसे छुटकारा पाने पर ही विकास पाना संभव होगा।

कोई राजा था। उससे मिलने के लिए अकसर एक नौजवान आता। दरबार में उसे राजकीय सम्मान मिलता। विदा लेकर जाते समय राजा उस धन-संपत्ति और बहुमूल्य उपहारों से निहाल कर देता। वह युवक उन सारी दौलत को खोकर तथा गँवाकर फिर से राजा के पास आता। राजा जरा भी गुस्सा दिखाए बिना फिर से उसे मालामाल करके भेज देता।

एक बार प्रधानमंत्री ने राजा से पूछा, “श्रीमंतजी, आप जो भी धन-दौलत देते हैं, यह लड़का अपने दोस्तों के साथ बैठकर गुलछरें उड़ाता है, गैर-जिम्मेदाराना ढंग से सारा धन व्यर्थ गँवाकर फिर से आ धमकता है। आप क्यों इसे बार-बार इतनी संपत्ति दिया करते हैं?”

राजा ने कहा, “मंत्री, जब मेरा जन्म हुआ, उसी समय मेरी माँ का देहांत हो गया। इसकी माँ, जो महलों में काम करती थी, ने इसके साथ मुझे भी अपना स्तन्य पिलाकर पाला-पोसा है। इसलिए मैं इसे अपने भाई के समान मानता हूँ।”

अगली बार जब वह मूर्ख युवक आया, उसने राजा के सामने एक विचित्र माँग रखी, “तुम्हारे इर्द-गिर्द बुद्धिमान अधिकारी रहा करते हैं, इसीलिए तुम वैभव-संपन्न रहते हो। यदि तुम्हारे ये मंत्री मेरे साथ रहते तो मैं भी राज कर सकता हूँ। इसलिए इन्हें मेरे साथ भेज दो।”

राजा धर्म-संकट में पड़ गया। उससे जवाब देते नहीं बना।

मंत्री ने कहा, “श्रीमंतजी, आपके साथ दूध पीकर पले हुए इस भाई की सहायता करने के लिए मैं अपने साथ दूध पीकर पले हुए भाई को भेज सकता हूँ।”

अगले दिन दरबार में आते हुए मंत्री एक भैंसे को खींच लाए।

“क्यों हँस रहे हैं, श्रीमंतजी? इसने और मैंने एक ही भैंस-माँ का दूध पिया था। राजा के भाई की मदद के लिए मैं अपने इस भाई को भेजना चाहता हूँ।” मंत्री ने कहा।

भले ही एक माँ का दूध पीकर बड़े हुए हों, लेकिन हम अपने शरीर व मन की ऊर्जा और भावनाओं का किस तरह सही ढंग से उपयोग करते हैं, हमारा विकास उसी पर निर्भर करता है।

आमतौर पर मित्रों से मिलते समय आप किन-किन बातों पर चर्चा करते हैं? चर्चा के मुद्दे कुछ यही रहेंगे, जैसे—बजट में कराधान कैसे होना चाहिए, किन- किन दलों के साथ गठबंधन करने पर चुनाव में जीत मिल सकती है, सरकार की नीतियाँ कैसी होनी चाहिए आदि-आदि।

जब मैं पराजित होता हूँ तो यही महसूस होता है कि समंदर के निचले तल में पहुँच गया हूँ। ऐसा क्यों होता है?

समंदर की गहराई में, उसके निचले तल में पहुँचने के बाद और नीचे नहीं जा सकते हैं न। वहाँ से ऊपर आना है। हार के बाद जीत की ही तो संभावना है।

हार से पस्त होकर वहीं स्तंभित रहे बिना सोचिए कि कैसे पाँव मारते हुए ऊपर उठा जाए। महान् शक्तियों से संपन्न हथियार है आपका मन। जो काम शरीर से संभव नहीं होता, कई बार उसे मन कर दिखाता है।

साहस, घोर परिश्रम, संपूर्ण ध्यान और सभी क्षमताओं का उपयोग करते हुए उत्साहपूर्वक परिश्रम करके देखिए। सफलता आपके कदम चूमेगी।

मुशर्रफ के बारे में, बिन लादेन के बारे में और जॉर्ज बुश के बारे में ढेर सारी जानकारियाँ आपके पास होंगी। माना कि दुनिया का हाल-चाल और गतिविधियों की सारी खबरें आपकी उँगलियों की नोक पर हैं; मगर क्या आप खुद अपने बारे में जानकारी रखते हैं?

क्या अपनी क्षमता की व्याप्ति के बारे में आपको पूरा पता है?

जो लोग पहली बार चश्मा पहनते हैं, शुरू-शुरू में वह उन्हें अनावश्यक बोझ जैसा लगता है। आदत पड़ने के बाद उसके बारे में ध्यान ही नहीं रहता। भले ही आप गौर करें या नहीं चश्मा अपने काम को बखूबी करता रहेगा।

आपकी क्षमता के बारे में भी यही बात सही है। चौबीसों घंटे उसे तेज रखने के लिए पहले ध्यानपूर्वक अभ्यास करना होगा। आदत पड़ जाने पर वह आपकी सहज प्रकृति बन जाएगी। उसके बाद हर मौके पर काम आने के लिए वह तैयार रहेगी।

सड़क पर गाड़ी चलाने का अभ्यास करते हुए आपका सारा ध्यान उसी पर रहेगा। अच्छी तरह से अभ्यस्त होने के बाद उसके बारे में भय या तनाव से रहित होकर बड़े सहज ढंग से आप गाड़ी में सैर करते रहेंगे, ठीक उसी तरह।

मोटर-गाड़ी के व्यवसाय में सफलता की बुलंदियाँ छूनेवाले हेनरी फोर्ड का नाम आपने सुना होगा। जब उनकी तारीफ की गई कि आप बड़े जीनियस हैं, प्रतिभाशाली हैं, तो उन्होंने पता है, क्या कहा?

उन्होंने कहा, “जीनियस, प्रतिभा? मारो गोली प्रतिभा-वतिभा को। आपके पास जो अक्ल है, बुद्धि है, वही मेरे पास भी है। मैंने घोर परिश्रम और प्रयत्न के साथ उसका पूरा उपयोग किया है, बस।”

गोदाम में इकट्ठा किए अनाज के अंबार का समय पर सही वितरण न किया जाए तो घुन खाकर सारा अनाज बेकार हो जाएगा, आखिर कूड़े में चला जाएगा। इसी भाँति अपनी क्षमताओं को जाया न कीजिए। उनका निरंतर

उपयोग करते रहेंगे, तभी उनसे लाभ मिलेगा।

नई चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करने का अभ्यास करें, तभी आपकी क्षमताओं का पूर्ण रूप से उपयोग हो सकता है। इस तरह आप नई बुलंदियाँ छू सकेंगे।



गलतियों को स्वीकार कीजिए!

संसार में कोई भी व्यक्ति गलतियों से परे नहीं है। लेकिन भूल करने का बोध होने पर आप उसे मानने के लिए तैयार हैं या नहीं, यही बात आपको दूसरों से अलग करती है।

सवाल यह नहीं है कि किया गया काम गलत था या सही। समस्या तो वह घमंड भरा जज्बात है, जो सिर पर चढ़कर बोलता है—‘गलती मानूँ और मैं, धत्!’

छुटपन में आप कितने सरल-तरल थे! मार खाने के बाद भी बिना किसी द्वेष-भाव के मारनेवाले व्यक्ति के पास बार-बार जाते थे। कहाँ गया खुशी का वह आलम?

बड़े होते-होते आप शारीरिक व मानसिक रूप से ठोस बन गए। आपने समाज में अपने लिए एक पहचान बना ली। अब उस पहचान और प्रतिष्ठा को बनाए रखने की कोशिश में अपनी ईमानदारी का भी बलिदान करने को तैयार हो गए। इसीलिए गलती मानने की अपनी बुनियादी प्रकृति को भी गँवा बैठे हैं।

“क्षमा कर दो भाई, भूल हो गई। मैंने अनजाने में गलती कर दी। अगली बार सावधान रहूँगा।” यों विनीत भाव से कह देंगे तो क्या आपके सिर से ताज उतर जाएगा?

गलती का एहसास होने के बाद भी प्रकट रूप से स्वीकार करने के साहस के बिना उसे उचित ठहराते जाना ही सबसे बड़ी भूल है।

एक बार शंकरन पिल्लै ने किसी दूसरे के बाग में डालों से लटक रहे पके-पके फलों को देखा। जल्दी से एक बोरी ले आए, बाड़ को फाँद डाला।

बड़ी फुरती के साथ पेड़ से फल तोड़ डाले। उन्हें बोरी में भर कंधे पर डाल लिया। फिर से बाड़ को फाँदकर बाहर निकले ही थे कि बाग के मालिक ने पकड़ लिया।

“बोलो, किसकी इजाजत के साथ इन्हें तोड़ा था?”

“मैंने कहाँ तोड़ा? पुरजोर हवा चली। आँधी में ये फल नीचे झड़ गए।” शंकरन पिल्लै ने कहा।

“तो यह बोरी काहे को उठा लाए?”

“ओह, बोरी? यह भी कहीं से हवा में उड़ती हुई यहाँ गिरी थी।”

“माना कि जोर की हवा में फल झड़ गए और बोरी भी हवा में उड़कर आ गिरी, फलों को बोरी में भरनेवाला कौन था, बताओ?” बाग का मालिक दहाड़ पड़ा।

शंकरन पिल्लै घबराए नहीं, बड़े भोले बनकर बोले, “वही मेरे लिए भी आश्चर्य की बात है।” गलती करनेवालों में से अनेक लोग शंकरन पिल्लै की तरह रंगे हाथ पकड़े जाने पर भी अपनी गलती स्वीकार करने के बजाय उसे उचित ठहराने के लिए नई-नई दलीलें रखते जाते हैं।

बड़ी खतरनाक है ऐसी मानसिकता।

यह विचार मत कीजिए कि अगला व्यक्ति कौन है, आपका सहयोगी है, अधिकारी है, आपके मातहत काम करनेवाला है या बिल्कुल अपरिचित है। यों भेदभाव किए बिना ईमानदारी के साथ अपनी गलती को मान लीजिए। ऐसा करने से आपका सम्मान बढ़ेगा ही, घटेगा नहीं।

अपनी गलती का एहसास किए बिना कुछ लोग अपने कटु वचनों से अगले व्यक्ति के दिल को चोट पहुँचा देते हैं। यदि उस ओर ध्यान दिलाया जाए तो बेलाग होकर कहेंगे, “तुम्हारे दिल को चोट पहुँचाने की मेरी कोई नीयत नहीं थी।”

यहाँ पर एक पुराना चुटकुला याद आ रहा है। किसी व्यक्ति ने बस में अपने सहयात्री के पाँव को जोर से कुचल दिया। फिर यह कहते हुए पाँव हटा लिया, “ध्यान नहीं दिया, भाई।”

जो व्यक्ति कुचला गया था, उसने झुककर अपने पाँव को डाँटा, “ऐ मेरे पाँव! उस सज्जन ने तो कारण बता दिया। फिर क्यों अब भी दुखते हो?”

चाहे जान-बूझकर कुचलें या अनजाने में कुचलें, दर्द तो दर्द ही है।

माफी माँगना छोड़कर ‘क्या मैंने जान-बूझकर दबोचा था?’ यों धाँधली करना कहाँ का न्याय है?

असावधान रहना भी भूल है। इसे समझने से हिचकना ठीक है।

असावधानी से चलते हुए और सैकड़ों लोगों को इसी तरह दर्द पहुँचाने की संभावना रहती है।

दूसरों के सामने झुकना दुर्बलता है न?

नम्रता का अर्थ सिर नीचा होना नहीं है। यह तो गौरव की बात है। जब मैं कोयंबटूर के कारागार में कैदियों के लिए कक्षा चला रहा था, लोगों ने एक खूनी अपराधी को दिखाकर बताया कि जेल में वही दादा है। यह दूसरों का भोजन छीनकर खाता है, विरोध करनेवालों के हाथ-पाँव तोड़ देता है वगैरह-वगैरह। वह अनिच्छा से ही कक्षा में आया था। लेकिन एक हफ्ते के अंदर एकदम पिघलकर पानी जैसा हो गया। उसके बाद जेल में एक बार कैदियों के बीच हाथापाई भी हुई। अपनी ताकत का प्रयोग करने का अवसर आने पर भी वह शांत रहा। अपने बदन पर कुछ जख्मों के साथ मेरे सामने हाजिर हुआ।

कहने लगा, “इतने दिनों तक जिस-जिसने भी मेरा विरोध किया, उन सभी को मैंने धर दबोचा है। उन मौकों पर मन में यही डर रहता था कि कहीं वह मुझसे ताकतवर न निकल जाए। आज जब मैं विरोध दिखाए बिना खड़ा रहा, अपने को बड़ा शक्ति-संपन्न महसूस किया। ऐसा अनुभव पहले कभी नहीं हुआ था।” नम्रता कभी भी कमजोरी नहीं है। वही शक्ति है। अपनी ताकत दिखाने के विचार का नाम ही दुर्बलता है।

अनजाने में एक बार गलती कर सकते हैं। लेकिन गलती की ओर ध्यान दिए बिना लगातार भूलें करते जाना प्रगति और विकास को अवरुद्ध कर देगा।

कुछ लोग आपकी गलती को सूक्ष्मदर्शी से देख सकते हैं। उन्हें देखने दें, कोई बात नहीं।

अगर आप क्षमा माँगेंगे तो लड़ाई वहीं खत्म हो जाएगी। फिर इल्जाम लगानेवाला ही तो अपराध-बोध को ढोएगा।

अच्छी तरह समझ लीजिए, यह न तो जलील होना है, न हार जाना। यह तो इस बात की निशानी है कि आपका दिल परिपक्व हो गया है।

आप व्यापारी हो सकते हैं या खिलाड़ी, अपनी गलतियों को मानने के आधार पर ही जीवन में आपकी सफलता निर्भर करती है। जब तक गलती नहीं मानेंगे, आपको उस अपराध-बोध को सलीब की तरह ढोना पड़ेगा। गलतियों को मानना एक ऐसी शक्ति है, जो दुश्मनों को आपका जिगरी दोस्त बना दे। यह अजेय शक्ति आपको और बुलंदियों पर पहुँचा देगी।



कामयाबी लाडली बच्ची है

हाल ही में मैं एक कॉलेज में गया था। वहाँ के छात्रों ने प्रश्न किया, “कामयाबी पाने का कोई शॉर्टकट—आसान रास्ता—हो तो बताइए।”

आसान रास्ता? इसका खयाल कैसे आया? इच्छित वस्तु को फौरन और अनायास पाने के लिए ये युवक काहे यों सब्र खोकर तड़पते हैं?

दुनिया घूम आने की इच्छा से अपनी गाड़ी निकालते हैं। गाड़ी तभी तक तो चलेगी, जब तक उसके अंदर पेट्रोल हो। जब पेट्रोल खत्म हो जाए तो गाड़ी रुक जाएगी न।

आपकी इच्छाओं के विषय में भी यही बात सही है। आपके पास जितनी क्षमता है, उसी के अनुपात में आप वांछित वस्तु को पा सकते हैं।

एक नवयुवती पर जल्द-से-जल्द पैसेवाली होने की सनक सवार हो गई। किसी नौजवान को इस बात का पता चल गया तो उसने आकर पूछा, “घंटे भर में दस हजार रुपए कमाने की इच्छा है?”

युवती की आँखें चमक उठीं। तपाक से बोली, “हाँ तो।”

“अगर तुम मुझे एक दर्जन बार चूम लोगी तो मैं तुम्हें दस हजार रुपए दूँगा।”

युवती ने क्षण भर सोचा, ‘महज चुंबन ही तो देने हैं, सो भी बारह बार। इसमें क्या हर्ज होने वाला है।’ वह एकदम तैयार हो गई। युवक उसको एकांत कमरे में ले गया और किवाड़ बंद कर लिया। युवती ने उसे पहला चुंबन दिया। युवक ने कहा, “मुझे डर लग रहा है।” युवती को चिंता हो गई, लगता है, ये पीछे हट रहा है। कहीं अपनी बात से मुकर जाए तो?

“इसमें डरने की क्या बात है?” युवती ने पूछा।

आगे हरेक बार चुंबन लेने पर युवक अपने भय का जिक्र करता और युवती उसे ढाढ़स बँधाती। यही क्रम चलता रहा।

बारहवीं बार चुंबन लेने के बाद युवक बोला, “अब तो मेरा डर बहुत ज्यादा बढ़ गया है।”

युवती ने आश्चर्य सहित पूछा, “हम दोनों के बीच जो शर्त ठहरी थी, वह पूरी हो गई है। अब तुम मुझे रुपए देने वाले हो। उसके बाद मेरा और तुम्हारा कोई वास्ता नहीं रहेगा। ऐसे में डर काहे को हो रहा है?”

युवक ने कहा, “मैंने तुम्हें दस हजार रुपए देने का वादा तो किया था। उतनी रकम मैं कहाँ से ला पाऊँगा, यह खयाल आते ही मैं डर से काँप उठता हूँ।”

आसान रास्ता चाहनेवालों के साथ ऐसी दुर्घटना घट सकती है। कोई आपको बहला सकता है, ‘यों ही साइकिल पर बैठे रहो। पैडल करने की भी जरूरत नहीं। दुनिया घूम लोगे।’ ऐसे व्यक्ति से सावधान रहना चाहिए।

आप सफलता की कामना क्यों कर रहे हैं? इसीलिए न कि वह आपका उत्साह बढ़ाएगा? साथ ही, यदि वांछित वस्तु को पाने का रास्ता भी उत्साहपूर्ण बन जाए तो कामयाबी पाने से पहले ही सफलता के उत्साह का अनुभव कर सकते हैं। आसान रास्ते की इच्छा करते हुए उसे क्यों गँवाना चाहते हैं?

हमेशा खुश रहने का समय क्या है?

केले के छिलके पर फिसलकर कोई नीचे गिरता है, आप हँसते हैं। उसी जगह पर आप भी फिसल जाते हैं, इस पर अफसोस करते हैं। एक ही तरह के काम पर खुश होना और अफसोस करना किसके हाथ में है? अपने ही हाथ में न।

आमतौर से खुशी के लमहों की तुलना में दुःख-दर्द देनेवाले क्षण ही आपके मन में असर डालते हैं, स्मृति बनकर स्थायी रहते हैं। उन दुःखदायी घड़ियों की अपने मन में क्यों बार-बार जुगाली करते हैं? जब आप नौकरी में होते हैं, पाठ्य-विषय के बोझ से दबे कॉलेज के वे दिन याद आते हैं। जब कॉलेज में होते हैं, स्कूल में शिक्षक के हाथों मार खाने की घटना याद आती है। यों बीते हुए समय की याद में खोने की वजह से वर्तमान क्षणों पर गौर करने से चूक जाते हैं।

प्रत्येक क्षण को पूर्ण रूप से महसूस करना सीख लेंगे तो हमेशा खुशी के आलम में रहेंगे।

नारियल का पौधा लगाने के बाद उसके पास बैठकर 'नारियल, नारियल!' चिल्लाएँगे तो क्या नारियल गिरेगा? उसके बढ़ने के लिए जो भी खाद और पानी जरूरी हो, भरपूर दीजिए। पेड़ जब बड़ा होगा, आपके मना करने पर भी गुच्छे-के-गुच्छे नारियल फलेंगे।

शंकरन पिल्लै के पास एक ताँगा था। एक दिन वे एक बिल्ली को खींच लाए और गाड़ी में जोत दिया। 'खींच री, खींच' कहते हुए उसे हाँकने लगे। चाबुक मारते हुए चिल्लाए। अड़ोस-पड़ोस के लोगों ने कहा, "बेवकूफी की हद हो गई।"

"क्यों, बड़े-से-बड़े रथ को भी घोड़ा खींचता है न?"

"लेकिन यह तो घोड़ा नहीं है, बिल्ली है। आपके पास जो घोड़ा है, उसे क्यों नहीं जोतते?"

"बिल्ली के रहते घोड़ा किस काम का? यही सोचकर मैंने घोड़े को बेच दिया। लेकिन बिल्ली को मारने के लिए मैं उस घोड़ेवाले चाबुक का ही तो प्रयोग करता हूँ।" शंकरन पिल्लै ने दलील दी।

पूरी क्षमता का प्रदर्शन करके जो उपलब्धि प्राप्त की जा सकती है, उसे गलत रास्ते से पाने की इच्छा करना ताँगे में बिल्ली को जोतने जैसी बेवकूफी है।

जो लोग सफलता के सच्चे अर्थ को नहीं समझ पाते, वे ही आसान रास्ते से कामयाबी पाना चाहते हैं।

आप पर्वत-शिखर को लक्ष्य करके यात्रा कर रहे हैं। अपना अगला कदम चट्टान पर पड़ रहा है या गड्ढे में, इस पर ध्यान देंगे या गरदन उठाकर पहाड़ की चोटी को देखते हुए आगे बढ़ेंगे?

मुलायम घास, कल-कल करती बह रही नदी, पगडंडी के दोनों ओर खिले हुए रंग-बिरंगे फूल, भाँति-भाँति के पंछी—आपके पथ पर हर्ष-पुलकित होने के लिए इस तरह के हजारों दृश्य हैं।

दूर कहीं छिपी पहाड़ी चोटी के कगार मात्र पर नजर गड़ाए पहाड़ पर सैर करेंगे तो सौ कदम चलने से पहले ही आप थक जाएँगे। उसी तरह, अपने काम को पूरी लगन के साथ खुशी से संपन्न किए बिना केवल सफलता को लक्ष्य बनाकर काम करेंगे तो वहाँ संघर्ष ही बचेगा।

क्षमता में वृद्धि करके अपने काम में पूरी खुशी के साथ लगे रहेंगे तो कामयाबी आपकी लाडली बच्ची की तरह आपके पास लपकती हुई आएगी।



तनाव दूर कीजिए

इन दिनों अमेरिका में दो शब्दों का चलन बहुत ज्यादा है। वे हैं—स्ट्रेस (तनाव) और मैनेजमेंट (प्रबंधन)। प्रबंधन का प्रशिक्षण जहाँ भी हो रहा हो, मनोविज्ञान के विशेषज्ञ ‘तनाव को कैसे सँभाला जाए?’ इस विषय को समझाने के लिए पहुँच जाते हैं।

‘अपने व्यवसाय, परिवार, धन-संपत्ति आदि को कैसे सँभालें’, यदि कोई इसका प्रशिक्षण लेना चाहे तो वह जायज ही है।

तनाव जो है, सदा के लिए छोड़ देने की, तिलांजलि देने की बात है न। उसे अपने साथ रखते हुए उसको सँभालने (प्रबंधन करने) के तरीके क्यों सीखें?

आधुनिक जगत् में तनाव जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है। अपरिमित धन-दौलत को ही विकास मानने की गलती से उत्पन्न गड़बड़ी है तनाव। जीवन के अन्य प्रमुख तत्त्वों को हाशिए पर धकेलते हुए धन जब मनुष्य पर पूरी तरह से हावी हो जाता है तो उससे उत्पन्न विपत्ति है तनाव।

प्रबंधन का नाम लेते ही उसे अर्थव्यवस्था से जोड़ने की मतिहीनता से उत्पन्न दुःस्थिति है यह।

सर्वश्रेष्ठ प्रबंधक कौन हो सकता है?

‘वाहन कैसे चलाएँ’, इस कला से अवगत होने पर ही तो आप दूसरों को सिखा सकते हैं।

शंकरन पिल्लै ने अपने बेटे को बुलाकर कहा, “तुम अब बालिग होने वाले हो। मेरे बाद कारोबार का सारा प्रबंधन तुम्हीं को देखना होगा एक-एक करके सीख लो।”

उस दिन शाम को पिल्लै अपने बेटे को क्लब ले गए। वहाँ सभी लोग शराब पी रहे थे। शंकरन पिल्लै ने भी प्याला हाथ में ले लिया।

“तुम भी ले लो” कहकर बेटे के हाथ में एक प्याला रख दिया। कुछ लोगों से परिचित कराया।

फिर बोले, “बड़े लोगों से काम निकालने का तरीका यही है। दूसरों को पीने दो। खुद होश खोने से पहले पीना बंद कर दो। यही पहला सबक है।”

इससे पहले शराब पीने की आदत न होने के कारण बेटा जरा तनाव में था। शंकरन पिल्लै तो प्याले पर प्याला खाली करते जा रहे थे। एक चरण पर आकर बेटे ने उन्हें रोका।

“डैडी!”

“क्या है, बेटे?”

“कैसे पता चलेगा कि होश-हवास खो चुका या नहीं?”

शंकरन पिल्लै ने पासवाली मेज को दिखाया, “बेटे, वहाँ बैठे हुए चार जने अगर तुम्हें आठ जने दिखें तो फौरन पीना छोड़ दो। उसके बाद एक बूँद भी न पीना।”

बेटा हड़बड़ाकर बोला, “मगर डैडी, वहाँ दो जने ही बैठे हैं।”

सोचिए, शंकरन पिल्लै का प्रबंधन कैसा रहा होगा?

दूसरों को सँभालने की क्षमता पूर्ण रूप से पानी हो तो पहले आपको स्वयं का प्रबंधन करने की कला आनी चाहिए।

अपने शरीर, मन और भावनाओं का क्षमतापूर्वक प्रबंधन करना सीखने के बाद ही तो आप दूसरों को सँभालने निकल सकते हैं।

जब आप खाली बैठे थे तो नौकरी के लिए तरसते थे। जब नौकरी मिल गई तो अपनी सारी खुशियाँ गँवाकर उच्च रक्तचाप की बीमारी को बुलावा दे रहे हैं।

पदोन्नति मिलने तक आप उसके लिए संघर्ष करते रहे। अब पदोन्नति मिल गई तो कह रहे हैं, तनाव पल-प्रतिपल बढ़ रहा है। इससे भी ऊँचा पद पाने पर आप न जाने क्या कहेंगे!

‘पहले मैं निश्चित था, अब शांति चली गई है।’ यही कहेंगे।

जीवन को गँवाकर सुविधाएँ बढ़ा लेना मरे हुए तोते के लिए सोने का पिंजरा बनवाने के बराबर है।

पराजय से उत्पन्न दुःख का अर्थ ढूँढ़ सकते हैं। लेकिन सोचकर देखिए, सफलता का यह महल बनाने के लिए आपने कितना सारा पसीना बहाया था, कितने मोर्चों पर संघर्ष किया था? ऐसी सफलता में भी दुःख का अनुभव हो तो इसका अर्थ यही तो नहीं कि नींव में ही कहीं गलती है।

क्या करने पर मुझे आनंद मिलेगा?

पचास-साठ वर्ष पहले किसी मोटर गाड़ी को स्टार्ट करना हो तो धक्का देने के लिए दो नौकरों की जरूरत पड़ती थी।

उसके बाद ऐसी स्थिति आई कि एक लंबे से तार को आगे देकर घुमाने के लिए एक आदमी पर्याप्त था। आज तो गाड़ी के उत्पाद में ऐसी तरक्की हो आई है कि दूसरे किसी की सहायता के बिना बैटरी की शक्ति से गाड़ी चलने लगती है। लेकिन गाड़ी पर मनुष्य का जितना ध्यान रहा, उतना ध्यान स्वयं पर नहीं आया। यदि उसे आनंद पाना हो, उसके लिए आवश्यक ‘सेल्फ स्टार्ट’ उसके पास नहीं है। कोठी, बच्चे, पदोन्नति, बिजनेस—इस तरह के बाहरी धक्के उसके लिए जरूरी हो गए हैं। इनके मिल जाने पर भी अन्य किसी प्रकार से तनाव बढ़ जाता है।

जीवन का सौंदर्य इस पर निर्भर नहीं है कि आप क्या काम कर रहे हैं। आप जो काम कर रहे हैं, उसमें अपने आपको किस हद तक हार्दिक रूप से समर्पित करते हैं, इसी के आधार पर जीवन खूबसूरत बनता है। उसे पूरी लगन के साथ कीजिए। आनंद अवश्य मिलेगा।

आप जिसका निर्वाह नहीं कर सकते, उसकी इच्छा क्यों की?

चाहे आप चपरासी हों या अफसर, स्वयं अपना प्रबंधन करने की क्षमता के बिना ही यदि आप उन्नति पाने की कोशिश करेंगे तो वह एक विपदा के रूप में ही परिणत होगा।

बाहरी माहौल से प्रभावित हुए बिना पहले अपने आंतरिक जगत् का प्रबंधन करना सीख लीजिए।

अपने चारों तरफ कीचड़ होने के बावजूद उसी को अपना खाद बनाते हुए कमल अपने संपूर्ण सौंदर्य को प्रकट करता है, सुगंध फैलाता है।

आपका जीवन भी ऐसा ही बनना चाहिए। परिस्थिति चाहे कैसी भी हो, दृढ़ता के साथ काम करते हुए उसमें से अपने लिए आवश्यक ऊर्जा ग्रहण कर लेनी चाहिए।

यदि आप तनाव के बिना स्वयं अपना प्रबंधन करना सीख लें तो यहाँ अघटित को भी घटित कर सकते हैं।



IV

आसान है सपनों को साकार करना

प्रतिकूल ज्योतिष-फल को झुठलाइए

गली के छोर पर बैठे भिखारी को देखिए। हड्डियों का ढाँचा-सा हिलने-डुलने में असमर्थ होकर लेटा होगा। यदि अगला भिखारी इसकी जगह पर आकर बैठ जाए तो हो-हल्ला मचाते हुए उससे झगड़ा करेगा।

यह कैसे होता है?

जो लोग शरीर और मन से कमजोर होते हैं, उनके अंदर से भी क्रोध, घृणा और अमर्ष अपने पूरे वेग से प्रकट होते हैं।

जिस व्यक्ति को अपनी ऊर्जा का सही ढंग से उपयोग करना नहीं आता, भावावेश में आना उसके लिए भी सरल बन जाता है।

इसलिए ऐसे लोग, जो सैकड़ों मील पार के लक्ष्य को पाना चाहते हैं, उनके लिए अगले तीन कदम के आगे सोचना दूभर हो जाता है, योजना बनाकर क्षमताओं का उपयोग करना नहीं आता।

ये लोग बात-बात पर भय खाते हैं, हरेक कदम शक के साथ आगे रखते हैं।

हर बात पर तुनुक जाने और भावावेश में आने की त्वरा दृढ़ विचारों को बना लेने में नहीं होती।

इसलिए जब-जब कामयाबी का विचार मन में उठता है, उसके साथ ही हार जाने की आशंका भी सिर उठा लेती है।

आप नचिकेता के बारे में जानते होंगे। जब वह मात्र पाँच वर्ष का बालक था, मृत्यु के बारे में जानने की इच्छा उसके मन में जागी। यह जानकर कि मृत्यु का देवता

यमराज है, वह उसके द्वार पर जा बैठा। यमराज, जो बाहर गया था, कई दिनों के बाद घर लौटा। उसने देखा कि कोई बालक कई दिनों से भोजन-पानी के बिना द्वार पर बैठा है। यमराज का दिल पसीज गया। उसने कहा, “जो वरदान चाहते हो, बेहिचक माँग लो।”

नचिकेता ने कहा, “मृत्यु के बाद क्या घटित होता है, मैं उसी को जानना चाहता हूँ।”

यमराज ने उसे समझाया, “देवों के लिए भोग्य वस्तुएँ दूँगा, और जो भी तुम माँगोगे, दे दूँगा, लेकिन केवल मृत्यु के बारे में मत पूछो।”

नचिकेता टस-से-मस नहीं हुआ।

नचिकेता को टालने के लिए यमराज ने कई दिनों तक अपने घर से बाहर रहकर देख लिया। उसने सोचा, नन्हा-सा बालक है, भूख जब बरदाश्त के बाहर हो जाएगी, यहाँ से चला जाएगा। कई दिनों के बाद यमराज लौट आया। नचिकेता उसी जगह भूख-प्यास की परवाह किए बिना बैठा मिला। यमराज चकित रह गया।

उसने कहा, “यह देवगण और ईश्वरों के लिए अज्ञात रहस्य है। तुम तो पाँच वर्ष के बालक हो। मैं कैसे उसे तुम्हें बता सकता हूँ?”

लेकिन प्रश्न का उत्तर जाने बिना न लौटने के दृढ़ निश्चय के साथ नचिकेता वहीं डटा रहा।

विचारों की तीव्रता के बल पर यमलोक की दहलीज पर नचिकेता को ज्ञान प्राप्त हो गया। उसने जानने योग्य सभी बातों को वहीं समझ लिया। पाँच वर्ष के उस बालक के मन में संशय का लेश तक नहीं रहा कि कहीं यमराज अंत तक प्रश्न का उत्तर दिए बिना टरक जाएगा। उसके पास जो दृढ़ता थी, वह आप लोगों के पास नहीं है, इसीलिए आपके मन में भय और संशय साथ में आते हैं।

आप लोग विचारों से नचाए जा रहे हैं। लेकिन उन विचारों का निर्वाह करने में असमर्थ होकर तड़पते हैं। जब अपने ऊपर विश्वास नहीं आता, तभी परिणाम के बारे में मन में चिंता उठती है।

योजना बनाने के बाद मन में शंका उठती है कि वह पूरी होगी या नहीं। जब संदेह आपको खदेड़ता है तो आप जन्म-कुंडली लेकर ज्योतिषी के पास भागते हैं। ग्रह-नक्षत्र ठीक नहीं हैं, मुहूर्त सही नहीं है, यों सोचकर अपनी इच्छाओं को स्थगित करते हैं।

एक बार महाराज कृष्णदेव राय शत्रु पर हमला करने के लिए सेना के साथ आगे बढ़े। सेना एक नदी के किनारे पहुँच गई थी। उस समय राज-ज्योतिषी ने उन्हें सलाह दी, “महाराज, आज दिन ठीक नहीं है। अगले सोमवार को कूच करेंगे तो जीत आपकी ही होगी।”

लाख कोशिश करने पर भी

सिगरेट पीने की आदत छूट नहीं रही है। क्या करूँ?

आप किसी चीज को जबरन छोड़ने की कोशिश करेंगे तो वही चीज पूरे दिमाग में व्याप्त रहेगी। जरा अपने मन को आदेश दीजिए, पाँच मिनट तक बंदर का विचार मन में नहीं आना चाहिए। फिर देखिए मजा, पाँचों मिनट बंदरों का झुंड आपके मन पर हमला बोल देगा।

धुआँ उड़ाने या शराब पीने से छुटकारा पाने की कोशिश करना बेशक अच्छी बात है। उसके लिए जबरन प्रयत्न करना छोड़ दें। चाहे सिगरेट फूँकें या शराब पिएँ, उसकी लत आपके शरीर, परिवार और समाज में किन-किन बुराइयों को अंजाम देती है, इस पर पूरी जागरूकता के साथ मनन कीजिए। फिजूल की आदतें अपने आप झड़ जाएँगी।

कृष्णदेव राय असमंजस में पड़ गए। अगर सोमवार तक का समय दिया जाए तो दुश्मन सतर्क हो जाएगा। अप्रतीक्षित समय पर अचानक हमला बोल दें, तभी जीत मिल सकती है। लेकिन ज्योतिषी के परामर्श ने उन्हें सोच में डाल दिया। उन्होंने तेनालीराम से सलाह माँगी।

तेनालीराम ने ज्योतिषी को बुलाकर उनसे पूछा, “आप तो सभी का भविष्य बताते हैं। क्या यह बता सकते हैं कि आप और कितने वर्ष तक जीवित रहेंगे?”

ज्योतिषी ने कहा, “और बीस साल जिंदा रहूँगा।”

तेनालीराम ने झट अपनी तलवार खींचकर उनकी गरदन पर रखी, “अब यह बताइए, आपके भविष्य-कथन को मैं इसी क्षण झुठला सकता हूँ या नहीं?”

ज्योतिषी की आँखें बिदक उठीं। चिल्लाए, “झुठला सकते हैं, जरूर ... ”

“महाराज, देखिए न, भविष्य-कथन का दम बस इतना ही है। आपके प्रतिकूल जो भी भविष्य-कथन हो, उसे आप झुठला सकते हैं।” कहते हुए तेनालीराम मुसकराया।

कृष्णदेव राय ने नदी पार कर ली। शत्रु पर विजय पा ली।

यदि आप दृढ़ बने रहें, ग्रह आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।

फिजूल शक करना छोड़कर अपने ऊपर विश्वास करते हुए क्षमताओं का विकास कर लें। पूरी लगन के साथ काम पर उतर जाइए। सफलता आपके द्वार पर दस्तक देगी।



स्नेह सहज स्वभाव बन जाए

का मयाबी के बारे में चिंता किए बिना अपने काम को पूरी लगन के साथ इच्छापूर्वक कीजिए, ऐसा मैं बार-बार क्यों कह रहा हूँ?

सफलता की प्रतीक्षा के समय यह डर भी साए की तरह साथ लगा रहता है कि कहीं वह हाथ से न निकल जाए। सफलता की प्रतीक्षा करते समय निराशा के लिए भी तैयार रहना चाहिए। निराशा जहाँ होती है, वहाँ खीझ गतिरोध उत्पन्न करती है, प्रतीक्षा करने का सब्र नहीं रहता। इससे ध्यान बँट जाता है।

जरा सोचिए, लोग सफलता को इतना महत्त्व क्यों देते हैं? किसी काम में उतरने से पहले ही मन इस गणना में लग जाता है कि इस काम से मुझे क्या लाभ मिलेगा। या तो सफलता जैसी कोई चीज आपको आगे से रिझाकर अपनी ओर खींच ले या फिर हार जैसी कोई चीज प्रेरक शक्ति बनकर पीछे से धकेलने का काम करे।

गौर कीजिए, सफलता और असफलता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उन्हें एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। सिक्के को उछालने पर चित्त गिरेगा या पट, इसी तनाव में जिंदगी बसर करने की आदत पड़ गई है। इस हड़बड़ी के साथ जीना तो सीख गए हैं, लेकिन परिणाम जैसा भी हो, उसे जस-का-तस स्वीकार कर लेना अभी तक सीखा नहीं।

आप जिनके साथ बहुत निकट हैं, उनके साथ जिंदगी को बाँट लेने के लिए तैयार ही रहेंगे। लेकिन बदले में उनका व्यवहार कैसा होना चाहिए, इसके बारे में भी आपकी अपेक्षाएँ रहें तो वहाँ निराशा की ही ज्यादा गुंजाइश है। आपका साथी बहुत सारी बातों में आपके लिए खुली पुस्तक जैसा हो, लेकिन किसी एक बात में आपसे छिपाव-दुराव करता हो तो उस पर से आपका विश्वास डिग जाएगा, मन में संदेह का अंकुर फूटेगा। इसलिए अपने घनिष्ठ मित्रों और बंधुओं से भी अपेक्षाएँ न रखिए।

आप पूछ रहे हैं, विश्वास और अपेक्षाओं के बिना जीवन कैसे बिता सकते हैं?

उसके लिए एक ही मार्ग है। उसका नाम है—स्नेह, प्रेम। माँ अपने बच्चे के प्रति जो प्रेम दर्शाती है, उसमें पूरी गहनता रहती है, लेकिन प्रतिदान की इच्छा या अपेक्षा नहीं रहती।

द्वितीय विश्व युद्ध का समय था। जर्मनी के कारागार कैदियों से भरे हुए थे। किसी विशिष्ट कारागार में कैदियों की संख्या बहुत ज्यादा बढ़ गई थी, इसलिए अतिरिक्त कैदियों को मृत्यु दंड देकर संख्या कम करने का फैसला किया गया। सभी कैदियों को नंबर दिए गए। रोज सुबह कुछ नंबर बुलाए जाते। उन नंबरवाले कैदियों को फाँसी के तख्ते पर ले जाकर उन्हें गोली मार दी जाती।

इसी क्रम में एक दिन रिचर्ड नामक कैदी का नंबर पुकारा गया। बेचारा मरना नहीं चाहता था। मौत के डर से काँपते हुए इधर-उधर छिपने की कोशिश कर रहा था। उसके पासवाले कैदी ने इस पर गौर किया। वह एक युवा पादरी थे। पादरी ने मुसकराते हुए रिचर्ड से कहा, “बंधु, अगर तुम मरना नहीं चाहते तो आओ, हम दोनों अपने नंबरों की अदला-बदली कर लें। तुम्हारी जगह मैं चला जाऊँगा।”

पादरी के प्रस्ताव को मानने में रिचर्ड को पहले हिचक तो हुई, मन में अपराध-बोध भी

इच्छित वस्तु मिल जाने पर भी

मन में संतोष नहीं आता, क्यों?

कारण यह है कि आपने जो माँगा था और आपको जो प्राप्त हुआ, दोनों में अंतर रहता है। सपना देखना आसान है; उसके लिए संघर्ष करने की जरूरत नहीं पड़ती। न कोई दर्द है, न कोई दुःख। कोई मूल्य देने की भी आवश्यकता नहीं है।

लेकिन उस सपने को साकार करना हो तो कई चीजों को खोने के लिए तैयार रहना चाहिए। दुःख-दर्द उठाने का साहस चाहिए। उसका दाम देते समय प्रतिदान की अपेक्षा भी नहीं रखनी चाहिए।

अपेक्षा रखने की वजह से माँगी हुई वस्तु मिल जाने पर भी मन में निराशा घर कर सकती है कि हमने जैसा चाहा था, वैसा तो नहीं मिला है। इससे दर्द बढ़ता है।

जो भी काम करें, अपेक्षा रखे बिना खुशी से करके देखिए। जो भी उपलब्धि होगी, उससे आपको संतोष मिलेगा।

हुआ, फिर भी, प्राणों के प्रति मोह के कारण उसने उस प्रस्ताव को मान लिया। पादरी बेहिचक फाँसी के तख्ते की ओर चले गए और गोली खाकर मारे गए। उसी रात उस इलाके में जर्मनी लड़ाई में हार गया। कारागार के सभी कैदियों को मुक्त कर दिया गया।

उसके बाद रिचर्ड कई वर्ष तक जीवित रहा। अपना जीवन किसी की दी हुई भीख है, यह विचार जिंदगी भर उसके मन में खटक रहा था।

वह पादरी उसके बंधु या मित्र नहीं थे। उनका नाम तक रिचर्ड को मालूम नहीं था। प्रतिदान की प्रतीक्षा के बिना दूसरे के लिए अपने प्राण तक दे देना उनसे कैसे संभव हुआ? पादरी मर तो गए, लेकिन उन्होंने जीवन को पूर्ण रूप से जी लिया। रिचर्ड मन-ही-मन यही अनुभव करता रहा कि जीवित रहते हुए भी वह पूर्ण रूप से नहीं जी रहा था।

यह मिसाल रखने का यह अर्थ नहीं है कि मैं आपको इसी तरह किसी के लिए प्राणों का बलिदान करने की प्रेरणा दे रहा हूँ। उस पादरी ने त्याग या बलिदान के नाम पर यह काम नहीं किया था। वे प्रेम के अर्थ को पूर्ण रूप से समझते थे। अगले आदमी के भय और दुःख को दूर करने के लिए उस मौके पर जो करना था, उसे उन्होंने किसी प्रतीक्षा के बिना किया था।

प्रतिदान की अपेक्षा के बिना कोई काम करना है तो उस काम के प्रति रुचि होनी चाहिए।

आपने गौर किया होगा—जो लोग बड़े बुद्धिमान समझे जाते हैं, उन्हें दूसरों के साथ स्नेहपूर्वक हँसते हुए बातें करना नहीं आता। यदि उनसे स्नेह दिखाने को कहा जाए तो पलटकर पूछेंगे—किसलिए? उन्हें पता नहीं कि स्नेह के साथ बरतना ही इंसान का सहज स्वभाव है, बुनियादी बुद्धिमत्ता है।

फल या परिणाम की चिंता के बिना अपने काम को संपूर्ण स्नेह के साथ, पूरी लगन के साथ करके देखिए; सफलता के बारे में सोचे बिना पूर्ण समर्पण भाव से करके देखिए।

सफलता की प्रतीक्षा न होने से पराजय से संबंधित भय नहीं होगा। जहाँ भय नहीं है, वहाँ तनाव भी नहीं रहता। जहाँ तनाव न हो, इंसान का ध्यान नहीं बँटता। काम करते समय मन प्रसन्न रहता है। प्रसन्नता के साथ काम करते समय पूरी क्षमता प्रकट होती है। ऐसे में सफलता सुनिश्चित है।



मन की पस्ती को दूर हटाएँ

कभी-कभार आप महसूस करते होंगे कि किसी भी काम में मन नहीं लग रहा है। किसी भी व्यक्ति को देखते ही खीझ होती है। मन के अंदर सूनापन-सा छा गया है, मानो आप बाजी हार गए हों। इसका मतलब यही है कि आपने अपने अंदर पस्ती और निराशा को दाखिल होने दिया है।

मन क्यों पस्त होता है?

जिस ढंग से आप चाहते थे, उस व्यक्ति ने वैसे काम नहीं किया। आपकी योजना के अनुसार कोई काम पूरा नहीं हुआ। जिस तरह आपने इच्छा की थी, जिंदगी उस तरह बन नहीं पाई। गरज यह कि आपको जो मिला है, उसे स्वीकार करने की स्थिति में आप नहीं हैं। आप उसका विरोध कर रहे हैं।

जब आप मायूसी में बैठे होते हैं, यही प्रतीक्षा करते हैं कि अगला आदमी आपके मन को समझे, दूसरे लोग आपके साथ बैठकर रोएँ। आप दूसरों से हमदर्दी चाहते हैं। यह कैसा पागलपन है!

यह कहाँ का न्याय है कि दुनिया आपकी इच्छानुसार चले? लोग आपका मन रखने के लिए अपने साथ ठगी क्यों करें? घमंड जहाँ कहीं भी हो, उसे आखिर चोट खानी ही पड़ती है। तब मन में पस्ती और उदासी घर कर जाती है। वह आपके आत्म-विश्वास को ध्वस्त कर देगी।

जो दुश्मन हथियार लेकर बाहर से हमला करता है, सही रणनीति बनाकर उससे निपटना फिर भी आसान काम है। लेकिन मन की पस्ती जो है, अंदर बैठी हुई वह आपको चीर-कुतरकर बरबाद करनेवाले विषैले हथियार के समान है। स्वयं अपने ऊपर हमला करके खुद को नष्ट करने जैसी मूर्खता है यह।

मैं जो माँगता हूँ, वह मिलता नहीं है। क्यों?

एक बात को अच्छी तरह समझ लीजिए। सृष्टि में कोई भी शक्ति आपने विरुद्ध नहीं है। उससे आप कैसे काम लेते हैं, उसी के आधार पर वह रचनात्मक या ध्वंसकारी बनती है।

एक दिन अलसुबह सूर्योदय के दृश्य का फोटो लेना चाहते हैं। उसी दिन आसमान पर बादलों का घटाटोप हो जाता है और मूसलधार बारिश होती है। इच्छा पूरी न होने की वजह से आप पूरी दुनिया पर गुस्सा करते हुए कमरे के कोने में मन मारकर लेट जाते हैं। ऐसा करने से क्या प्रकृति आप पर तरस खाकर अपने को बदल लेगी?

उसके बजाय उत्साहपूर्वक बारिश पर गौर कीजिए। रंग-बिरंगे इंद्रधनुष को देखने का अवसर मिल सकता है। वह एक दुर्लभ छाया चित्र भी बन सकता है। वैसा न होने पर भी घर के ढेरों छोटे-मोटे कामों को पूरा करने के लिए आपको दिए गए सुअवसर के रूप में उसे ले सकते हैं।

आपके वश से परे जो शक्तियाँ हैं, उनके कारण आप अपने द्वारा सोचे गए कामों को पूरा करने में असमर्थ हो सकते हैं। लेकिन जिन कामों को आप कर सकते हैं, उन्हें भी किए बिना निराशा और पस्ती में पड़े रहना दीवानगी है।

किसी भी चीज पर बेकार दुःखी होकर बैठे रहने से कोई फायदा होने वाला नहीं है। दुःख और निराशा सबके अंदर एक जैसी नहीं होती। दियासलाई रगड़ने पर यदि वह काम न करे तो कोई इसी पर दुःखी हो जाता है। कोई दूसरा ऐसा है कि भले ही उसके घर में आग लगी हो, घर धू-धू कर जल रहा हो, तब भी वह विचलित नहीं होता।

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति पर एक दिन जनरल आइजन हाॅवर स्वर्ग पहुँचे।

उन्होंने भगवान् से यह वरदान माँगा—“सप्ताहांत में नरक घूमकर देखने की अनुमति दी जाए।” भगवान् ने पूछा, “यदि कोई नरकवासी स्वर्ग घूमकर देखने की इच्छा करे तो उसमें कोई अर्थ है; मगर तुम्हें नरक देखने की इच्छा क्यों हो रही है?”

आइजन हॉवर ने जवाब दिया, “मैं यही देखना चाहता हूँ कि वहाँ हिटलर किस तरह की यातनाएँ भोग रहा है।”

नरक में जहाँ हिटलर को यातना दी जा रही थी, आइजन हॉवर को ले जाया गया। वहाँ पर गंदगियों से भरी दो टोकरियाँ थीं। उनमें से एक में हिटलर गले तक डूबा खड़ा था, फिर भी हिटलर के चेहरे पर प्रसन्नता लहरें मार रही थी। आइजन हॉवर को यह देखकर अचरज हुआ।

उन्होंने पूछा, “असहनीय बदबू में, धिनौनी गंदगी में डूबे रहने पर भी क्या सोचकर तुम हँस रहे हो?”

“पता है, मेरे ठीक नीचे इस धिनौनी गंदगी में सिर तक फँसा हुआ आदमी कौन है? वह मुसोलिनी है। उसी के कंधों पर मैं खड़ा हूँ। उसकी दुर्दशा के बारे में सोचकर देखो।” कहते हुए हिटलर कहकहे मारने लगा। दुःख और निराशा का अनुभव व्यक्ति-व्यक्ति में अलग तरह का होता है। किसी में दुःख की मात्रा अधिक होती है तो किसी में कम। क्या वह बाहर से आता है? न, दुःख आपके मन के अंदर ही उत्पन्न होता है।

अपने मन को प्रसन्नता में रखना या मायूसी में रखना खुद आपके हाथ में है।

दुनिया को मेरी इच्छानुसार चलना चाहिए। लोगों को वैसे काम करना चाहिए, जैसे मैं चाहता हूँ—ऐसी प्रतीक्षा करना बेकार का घमंड है। उसे पैरों तले कुचलकर आप आगे नहीं बढ़ेंगे तो जीवन के पथ पर आपका रखा प्रत्येक कदम दुःखदायी होगा। प्रत्येक मोड़ पर भय लगेगा। आत्मविश्वास कम होकर पस्ती छा जाएगी। पस्ती और निराशा के दौरान दूसरों पर खीझना छोड़कर यह बात समझ लीजिए कि उसका कारण स्वयं आप हैं।

दुनिया पर गुस्सा न कीजिए। यह अनुभव कीजिए कि यह अपनी कमियों और खामियों को जानकर उन्हें दूर करने के लिए मिला हुआ अनोखा अवसर है। दर्द और वेदनाओं से पूर्ण अनुभवों को ही अपने जीवन के सबक के रूप में स्वीकार करके आपको परिपक्व बना लेने के लिए दिया गया अद्भुत वरदान है यह। समझ लीजिए कि प्रतीक्षाओं को पालने से ही निराशाएँ होती हैं। अहंकार का त्याग कर दीजिए। प्रतिकूल विचारों का भी विरोध किए बिना स्वीकार करने का अभ्यास कीजिए। ऐसी योजना बनाइए कि उन्हीं को अपने अनुकूल कैसे बना लिया जाए। अनुभवों को अपने लिए उपयुक्त रूप में बदल लीजिए।



आप किस धर्म के माननेवाले हैं?

मुझसे कई बार पूछा जाता है, “विश्व में कौन सा धर्म सबसे श्रेष्ठ है?”

सच पूछा जाए तो आज धर्म कहाँ अस्तित्व में है? मजहबों के नाम पर चलाई जानेवाली पार्टियाँ ही तो यहाँ मौजूद हैं।

प्रत्येक धर्म इसलिए स्थापित हुआ कि मनुष्य अपने आपको पहचाने, व्यक्ति अंतर्मुखी होकर आंतरिक जगत् में झाँके। लेकिन आज मजहबी पार्टियाँ आदमी को अच्छा इंसान बनाने का काम छोड़कर बाकी सबकुछ कर रही हैं। यही उनका मकसद बन गया है।

भीड़ से अकेला नहीं पड़ना चाहिए, यही सोचकर आप भी ऐसे ही किसी दल में शामिल हो जाते हैं। उस दल के अंदर जन्म लेने के कारण वह आपका मजहब हो सकता है या वह आपके द्वारा अपनी पसंद के कारण चुना हुआ मजहब हो सकता है।

जो भी हो, एक बार किसी गुट का सदस्य बन जाने के बाद आप भी इस विवाद और चुनौती के लिए तैयार हो जाते हैं—देखें, तुम्हारी पार्टी बड़ी है या मेरी पार्टी?

दरअसल धर्म जो है, लोगों को कोई भी बुराई नहीं सिखाता। सभी प्रकार के बंधनों से मुक्त होकर वास्तविक स्वतंत्रता के साथ जीवन जीने का मार्ग दिखाना ही सारे धर्मों का लक्ष्य है। लेकिन जो हो रहा है, इसके ठीक विपरीत हो रहा है। मजहब के नाम पर स्वयं साँकल लगाकर किसी खास पार्टी के साथ अपने को बाँधते हुए आप अपनी आजादी को खो रहे हैं।

शंकरन पिल्लै के मन में आध्यात्मिक मार्ग पर जाने की इच्छा जागी। इस समय मौजूद धर्म मार्गों में कौन सा मार्ग उत्कृष्ट है, इसका पता लगाकर उस धर्मगुरु के यहाँ जाकर शिष्य बनने का निर्णय लिया। अपने मित्रों से इस बारे में परामर्श किया।

एक मित्र ने उन्हें किसी धर्मगुरु के पास भेजा। वहाँ जाने पर उन्हें आदेश दिया गया कि पहले बालों को सफाचट मुँड़वाकर आओ, फिर कानों पर बड़ा सा छेद करके भारी-भरकम कड़ा सरीखा आभूषण पहनाया गया। पहनने के लिए नारंगी रंग के कपड़े दिए गए। कान छिदवाने पर काफी दर्द हुआ। कर्णाभूषण भारी होने के कारण दर्द हो रहा था। पूरे एक महीने तक वहाँ ठहरने के बावजूद शंकरन पिल्लै ने अनुभव किया कि अपने अंदर किसी तरह का परिवर्तन घटित नहीं हुआ है।

स्थान-परिवर्तन चाहते हुए पिल्लै दूसरे मित्र के पास चले गए। मित्र ने शंकरन पिल्लै को ले जाकर जंगल के अंदर अपने ही धर्मगुरु के पास छोड़ दिया। धर्मगुरु ने सख्त आदेश दिया, “यहाँ हरे रंग के कपड़े ही पहनने हैं। बालों को कतई कटवाना नहीं चाहिए। बाल जितने लंबे हों उतना ही हितकर है। और सुनो, यहाँ कोई भी आभूषण पहनना मना है।”

कान के पुराने घाव अभी भरे नहीं थे। कड़े जैसे आभूषण को कान से हटाया गया। उनके संप्रदाय के अनुसार शरीर के और किसी भाग को काटकर थोड़ी सी पेशी नोचकर निकाली गई। वहाँ भी शंकरन पिल्लै एक महीने से ज्यादा निभा नहीं पाए।

तीसरे मित्र ने सलाह दी, “पहाड़ के ऊपर एक आश्रम है, वहाँ चले जाओ। उस आश्रम में जो गुरु हैं, वही सबसे श्रेष्ठ हैं।”

नए धर्मगुरु के दर्शनों के लिए शंकरन पिल्लै पहाड़ पर चढ़े। चढ़ाई बड़ी विकट थी, घुटनों में खासा दर्द हुआ। वहाँ के चेले मुंडित मस्तक थे। केवल लंबी दाढ़ी बढ़ाकर दोनों कानों पर आभूषण पहने थे। यही नहीं, नाक भी छिदवाए हुए थे। शंकरन पिल्लै बेहोश होकर गिर पड़े।

धर्म-परिवर्तन कर लेने पर यही घटित होगा कि प्रत्येक धर्मगुरु आपके शरीर में एक-एक छेद डलवाकर निकल जाएँगे। इसे छोड़कर और कोई भलाई नहीं होने वाली है। वास्तव में धर्मों के कारण कोई समस्या नहीं है। मजहबी पार्टियाँ चलानेवालों के कारण ही सारी समस्याएँ पैदा होती हैं।

राजनीतिक दल चलानेवालों के लिए पार्टी के सदस्यों का संख्या बल महत्वपूर्ण है। धर्म के लिए इसकी क्या जरूरत है? मजहब नामक मुखौटा पहनकर अपनी अहंवादिता को साबित करने के इच्छुक लोगों के लिए संख्या बल की आवश्यकता होती है।

अंतर्मुखी होकर आत्म-निरीक्षण करने के बजाय, जिस समय व्यक्ति का ध्यान 'अब हमारी संख्या कितने तक बढ़ी है', इस बात पर केंद्रित हो जाए, उसी समय वह मजहब मर जाता है।

इतने सारे मजहबों के होने के कारण ही तो मनुष्यों के बीच संघर्ष चल रहे हैं। सभी धर्मों पर प्रतिबंध लगाया जाए तो?

धर्म जो शिक्षा देता है और धर्मगुरु जो शिक्षा देते हैं, इन दोनों में भारी अंतर होता है। लगता है, दोनों विपरीत ध्रुव के हैं। आधारभूत समस्या यही है।

यदि आप किसी सिद्धांत पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश करेंगे तो वह चोरी-छिपे काम करते हुए और ज्यादा गहन बन जाता है। फिर पहले से अधिक जोर के साथ ज्यादा हिंसात्मक रुख लेकर प्रकट होता है। विश्व का इतिहास इसका साक्षी है।

इसलिए मैं धर्म पर प्रतिबंध लगाने की बात नहीं सोचता। सच पूछा जाए, यदि प्रत्येक व्यक्ति अपना कोई धर्म पाल ले, वह भी गलत नहीं है।

यदि मानव अपनी बुद्धिमत्ता का सही उपयोग करते हुए धर्म के यथार्थ उद्देश्य को समझ लेगा तो वह अपने आपको पहचानने की कोशिश करेगा। तब अगले आदमी के साथ झगड़ा-टंटा मोल नहीं लेगा।

‘अपना ईश्वर सबसे दयालु, सबसे शक्तिमान है’, इसे दुनिया के सामने साबित करने के काम पर आप स्वयं को क्यों नियुक्त कर लेते हैं? क्या आप पूरे मन से विश्वास नहीं करते कि आपका ईश्वर सर्वशक्ति-संपन्न है?

यदि आपके बलबूते पर, आपके द्वारा अपनाए हिंसात्मक मार्ग से ही उनका यश सारे जग में फैल सकता है, तो वे आपकी अपेक्षा दुर्बल और आपकी तुलना में निचले स्तर के न हो जाते हैं।

अपनी कामना पूरी करने के लिए आप क्यों ईश्वर को अपनी पार्टी के उम्मीदवार के रूप में खड़ा करना चाहते हैं? आप ईश्वर के नाम पर जो आराधक मंडलियाँ चला रहे हैं, वे इन सारे कामों की समर्थक रहेंगी, ऐसी आशा करना क्या ओछापन नहीं है?

अध्यात्म उदात्त मार्ग है। मनुष्य का उद्धार करने के लिए उसका जन्म हुआ है। उसे इस बात की परवाह नहीं है कि उसके पीछे एक करोड़ अनुयायी हैं या एक भी बंदा नहीं है।

सच्चे अध्यात्म का ध्यान करनेवाले व्यक्ति के लिए कहीं कोई भेदभाव नहीं है।

वास्तव में, आप अपने धर्म के आधारभूत लक्ष्य को समझ लें। वह आपको स्वयं को पहचानने की सलाह देता है। अपने आपको बदलने का मार्ग ढूँढ़ें बिना दूसरों को अपनी तरफ बदलने की कोशिश करना अपने धर्म के लक्ष्य को अपमानित करने के बराबर है।

प्रत्येक व्यक्ति उन्नत बने, तभी सारा जग उन्नत बन सकता है।

इसलिए किसी भी पार्टी में फँसे बिना अपने धर्म के माध्यम से सत्य का अनुभव कीजिए। निश्चित रूप से आप उन्नत बनेंगे।



पुरुष और स्त्री

हजारों वर्ष पहले, जब वेदों का बोलबाला था, भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष के बीच भेदभाव नहीं बरता जाता था। इसके फलस्वरूप समाज के सभी कार्यकलापों में दोनों की समान भागीदारी होती थी। पुराणों के अनुसार, जनक की राजसभा में महापंडित याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी नामक विदुषी के बीच अध्यात्म विषय पर कई दिनों तक चले शास्त्रार्थ का उल्लेख है। याज्ञवल्क्य द्वारा उठाए गए दार्शनिक प्रश्नों का उत्तर देने में विदुषी मैत्रेयी समर्थ हुई। लेकिन जीवन के कुछ बारीक मसलों को लेकर मैत्रेयी द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ होकर याज्ञवल्क्य डगमगाए। अंत में उन्हें हार माननी पड़ी। स्पष्ट है कि नारियों की महिमा उस युग में इतनी उन्नत दशा में थी।

एक पुरुष की पहुँच के बाहर की बारीक संवेदनाओं का अनुभव एक स्त्री कर सकती है। पुरुष अपनी बुद्धि से संचालित है, जबकि नारी अपनी आंतरिक संवेदनाओं से संचालित होती है।

बुद्धि बाहर से संचित की जाती है। गुणता के जिस स्तर पर बुद्धि प्राप्त होती है, वह उसी गुणता के स्तर पर काम करती है। लेकिन आंतरिक संवेदना बाहरी मैल से अछूती रहने के कारण पवित्र है; यही नहीं, बुद्धि की तुलना में श्रेष्ठ भी है। इसलिए नारियाँ संवेदना के स्तर पर पुरुष की अपेक्षा उन्नत होती हैं।

फिर नारी जिस सम्मान की अधिकारिणी है, उसे वह आदर-सम्मान देने से समाज क्यों मुकरता है?

प्रत्येक जमाने में पुरुष शरीर के गठन की दृष्टि से नारी की तुलना में अधिक बलवान् होता है। किसी देश में बाहरी शक्तियों का आक्रमण होने पर विदेशी सेना वहाँ की नारियों को ही अपना पहला लक्ष्य बनाती है। ऐसे मौकों पर शारीरिक दृष्टि

से अबला नारियों की रक्षा करने का दायित्व पुरुषों पर होता था। इससे फायदा उठाकर नारी को घर की चहारदीवारी के अंदर बंद रखने की प्रथा तभी से शुरू हुई।

पुरुष को प्रमुखता देते हुए समाज के नियम बनाए गए। अधिकार का स्वाद चखने के बाद पुरुष वर्ग नारी को बंद रखने की इस प्रथा को बदलने के लिए राजी नहीं हुआ। पुरुष-प्रधान समाज ने ऐसे विधि-विधान बनाए, जिनके तहत नारी को उसके जन्म से पहले ही उसके न्यायोचित अधिकारों से वंचित रखा गया। भारत में ही नहीं, विश्व के प्रायः सभी देशों में पुरुषों को प्राथमिकता देने के जो कुतंत्र रचे गए, नारी उनके शिकार बनी। कुछ एशियाई देशों में ऐसे कानून बनाए गए थे, जिनके मुताबिक पुरुष का वध किए जाने पर अपराधी को मृत्युदंड देने का विधान था, लेकिन नारी की हत्या करने पर वह गुनाह नहीं माना जाता था।

पुरुषों ने ऐसे नियम क्यों बनाए?

इसलिए नहीं कि उसने स्त्री को अपनी तुलना में निम्न स्तर का समझ रखा था, बल्कि स्त्री उसकी तुलना में श्रेष्ठ है, इस सत्य को समझने के कारण उत्पन्न डर के कारण ही उसने ऐसे नियमों का निर्माण किया।

किसलिए पुरुष नारी को देखकर डरता है?

किसी बुद्धिमान पुरुष को और कोई नौकरी नहीं मिली, एक स्कूल में बच्चों को पढ़ाने का काम ही मिला। एक दिन उसने कक्षा में बालक-बालिकाओं से पूछा, “पता है, पृथ्वी का वजन कितना है?” गृह-कार्य के रूप में यह प्रश्न पूछा गया था। बच्चों ने माता-पिताओं को पूछकर उन्हें तंग किया। कुछ अभिभावकों को उत्तर मालूम नहीं था। शेष माता-पिताओं ने अपने-अपने अंदाज से मोटा-मोटी कोई संख्या बताई।

अगले दिन कक्षा में छात्रों ने प्रश्न के अलग-अलग उत्तर दिए।

“सारे ही उत्तर गलत हैं।” कहते हुए उस बुद्धिमान शिक्षक ने ब्लैक बोर्ड पर कई अंकोंवाली एक संख्या लिखकर बताया, “यही सही जवाब है।”

“सर, मेरा एक प्रश्न है।” एक बच्ची उठ खड़ी हुई, “आपने जो संख्या बताई है, वह गणना पृथ्वी पर रहनेवाले लोगों को मिलाकर है या उन्हें छोड़कर?”

बुद्धिमान शिक्षक निरुत्तर था, सिर झुका लिया।

चाहे कितना बड़ा अक्लमंद हो। ऐसी कुछ बातें पृथ्वी पर मौजूद हैं, जिन्हें समझना संभव नहीं है। ऐसी बातों में प्रमुख है नारी।

क्या सास-बहू के झगड़ों का समाधान है ही नहीं?

नारियाँ अपने सम्मान से अवगत नहीं हैं, इसी से यह समस्या उठती है।

समाज में आप चाहे जिस सम्मान को भोग रही हों, लेकिन यदि आप गली में झगड़े-टंटे पर उतर जाएँ तो सोचिए, आपके सम्मान की क्या दशा होगी? ऐसा करके आप स्वयं अपने को नीचा ही कर सकती हैं, आपका सम्मान बढ़ नहीं सकता।

नारी जिस तरह अपने साथ बरताव करती है, उसी के आधार पर उन्हें सम्मान मिलेगा। पहली बात तो यह कि यदि कोई स्त्री अगली स्त्री के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करना नहीं सीखती तो केवल अपने लिए सम्मान मिलने की अपेक्षा अर्थहीन है।

अगर आप अपनी बेटियों और बहुओं की इन गलतियों को छुड़ा नहीं पाए तो कल की पीढ़ी भी उन्नत नहीं हो सकती।

विश्व के कई विषयों का वैज्ञानिक विश्लेषण करके समझने में पुरुष समर्थ था। लेकिन उसके लिए पास में ही रहनेवाली नारी की बारीक संवेदनाओं को समझना संभव नहीं हुआ। जो चीज अबूझ होती है, उसके प्रति डर पैदा होना स्वाभाविक है।

इसी भय के कारण पुरुष ने नारी को अपनी नजर ऊँची करने का भी अधिकार नहीं दिया; उसे दूसरे दर्जे का बनाए रखा। इसमें पुरुष का शारीरिक बल काम आया। फिर अपने बुद्धि-बल से उसने ऐसा कुतंत्र रचा, जिसके प्रभाव में पड़कर नारी को सदा पुरुष की छत्रच्छाया में रहना पड़ा।

नारियों ने साहस के साथ उठकर इस स्थिति को रोकने का कोई प्रयत्न किया? नहीं।

सक्रिय जीवन जीना बंद करके पुरुष के साए में सुविधाजनक जीवन जीने के लिए वे भी तैयार हो गईं। किंतु यही सत्य है कि स्त्री के सामने पुरुष या पुरुष के सामने स्त्री निम्न नहीं है।

स्त्री और पुरुष को अलग करके देखने की कोई जरूरत नहीं है। दोनों के बिना परिवार, समाज, दुनिया कुछ भी पूर्ण नहीं होगा।



क्या नारी अक्ल में पिछड़ी है?

कि सी खाड़ी देश में आए एक अमेरिकी जवान ने वहाँ एक विचित्र दृश्य देखा।

उसने देखा, एक मर्द सड़क पर चल रहा था। उसके पीछे चार महिलाएँ बीस फीट का अंतर देकर एक ही कतार में आ रही थीं। अमेरिकी जवान को आश्चर्य हुआ। उसने इसका कारण पूछा।

उस पुरुष ने कहा, “ये चारों मेरी बीवियाँ हैं।”

“क्या कहा? चार-चार बीवियाँ? तुम बड़े किस्मतवाले हो।” ईर्ष्या और अचरज के साथ अमेरिकी ने आगे प्रश्न किया, “इतनी खूबसूरत बीवियों को साथ में लेकर उनके बीच में शान से चल सकते हो न? तुम उन्हें पीछे छोड़कर क्यों अकेले चल रहे हो?”

“यहाँ औरतें मर्दों के बराबर उनके साथ नहीं चल सकतीं। उन्हें पीछे ही चलना पड़ेगा।”

कुछ समय बाद अमेरिका और उस देश के बीच में लड़ाई छिड़ गई।

उस समय भी एक दिन शाम को वही आदमी सड़क पर चलता दिखाई दिया। लेकिन अब उसकी चारों बीवियाँ बीस फीट आगे चल रही थीं। अमेरिकी जवान चकित रह गया।

“अरे वाह, कब से तुमने औरतों को तरजीह देने का फैसला किया?” जवान ने पूछा।

“तरजीह-वरजीह कुछ नहीं है, भई! इन दिनों अमेरिकी बदमाशों ने जगह-जगह सुरंग बिछा रखी हैं। कहीं उन पर पाँव रख दूँ तो ... ? इसीलिए औरतों को आगे भेजता हूँ।”

नारी-स्वतंत्रता के बारे में ...

स्वतंत्रता संघर्ष करके प्राप्त करने की कोई चीज नहीं है। आंतरिक भावना में उसे महसूस करते हुए उसका अनुभव करना सीख लें तो वह पर्याप्त है। नारी को चाहिए कि वह कीमती कपड़े, आभूषण, साज-सिंंगार, सुविधाएँ आदि छोटी-छोटी चीजों को ही सुख का जरिया मानना छोड़ दे और जीवन की और अच्छी बातों की अभिलाषा करें।

पुरुष वर्ग द्वारा खेले जा रहे शतरंज में नारी को पाँसा बनाकर लुढ़कने के लिए राजी नहीं होना चाहिए। पुरुषों द्वारा रचे जा रहे षड्यंत्रों और कुतंत्रों की शिकार हुए बिना सावधानी से काम लेना चाहिए।

शारीरिक दृष्टि से नारी को किन्हीं कारणों से प्रकृति ने अबला रखा है तो उसे बदलने की कोशिश क्यों की जानी चाहिए? सच तो यही है कि पुरुष नारी की तरह काम करने में अशक्त होकर कई मायनों में पिछड़ा हुआ है। ऐसे में नारी को पुरुष की तरह बरताव करने की दिशा में क्यों कदम बढ़ाना चाहिए? क्या पुरुषों को आदर्श मानकर उनका पीछा करने का नाम आजादी है? वहाँ पर जो चीज नष्ट होती है, वह है नारी की मृदुता। किसी नारी का संपूर्ण नारी बने रहना ही तो असली स्वतंत्रता है। यदि नारी नहीं हो तो इस दुनिया का ही अस्तित्व नहीं है। केवल शरीर के साथ अपनी पहचान बनाना छोड़कर नारियों को सोचना चाहिए कि उनकी सच्ची शक्ति क्या है?

इसे आप एक चुटकुले की तरह सुनकर हँस सकते हैं। लेकिन इसमें नारी के खिलाफ जो जुल्म भरी नीयत छिपी है, उस पर भी आपका ध्यान जरूर जाएगा।

पुरुष द्वारा बनाए गए स्मृति-ग्रंथों और नियम-संहिताओं पर आँखें मूँदकर विश्वास करते हुए जो स्त्रियाँ अपने आपको डुबोने को तैयार हैं, वे पूर्ण स्वतंत्रता का स्वाद कभी नहीं चख सकतीं।

दूसरी ओर, कुछ नारियाँ समझती हैं कि मर्दों की तरह कपड़े पहनने से, हुकूमत जताने से और साहसपूर्ण कार्यों में लग जाने से आजादी मिल जाएगी। यह देखकर अचरज ही होता है।

पुरुषों के नकलची बिंबों की तरह बरताव करने से नारियों को कौन सा बड़ा गौरव मिलने वाला है? इससे यही अर्थ निकलता है कि वे स्वयं को पुरुषों से बढ़कर समझते हुए उन बुलंदियों को छूना चाहती हैं।

दरअसल पुरुष अपने जीवन को बौद्धिक धरातल पर जीने की कोशिश में लगा, लेकिन उससे काफी दूर निकल गया। चूँकि नारी अपने जीवन को संवेदना के धरातल पर जीना जानती है, नारी के अनुभव गहन होते हैं। यह पुरुष के लिए दूर की कौड़ी है। इसलिए पुरुष ने एक नारी को अपने पास रख लेना आवश्यक समझा। इस रहस्य को जाने बिना नारियाँ पुरुष की छाया में सुखपूर्वक रहना अपने लिए सौभाग्य की बात समझने लग गई।

कोई भी परिवार, जो नारी को सम्मान न दे, उन्नत नहीं होने वाला है। समाज में स्त्रियों को जिस स्तर पर रखा जाता है, उसी के अनुसार उस समाज का भी स्तर बनेगा।

मंदिरों में नारी को प्रवेश करने की अनुमति न देने के लिए पुरुष ने 'अशुद्धि' नाम की एक चाल चली। दरअसल प्रकृति द्वारा दिए गए कुछ शारीरिक बदलावों को धिनौना मान लेना ओछापन नहीं तो क्या है?

आम तौर पर जब पुरुष जीवन में मिलनेवाली किसी भी चीज का बौद्धिक स्तर पर विश्लेषण करता रहता है, तब नारी संवेदना के स्तर पर अनुभव करके उसे आत्मसात् कर लेती है। जब पुरुष जीवन की लाभ-हानि की गणना में लगा रहता है, नारी सीधे तौर पर अनुभव करके उसे जी लेती है।

पुरुष का बौद्धिक होना और स्त्री का भावुक होना—इनमें न कोई दोष है, न कोई विसंगति। इसमें डरने की कोई समस्या नहीं है। दरअसल ये दोनों अवस्थाएँ मिलकर काम करें तो अद्भुत उपलब्धियाँ मिलेंगी, पृथ्वी पर चमत्कार पैदा हो जाएगा।

तो समस्या कहाँ है? एक को दूसरे की तुलना में श्रेष्ठ या घटिया मानना ही सभी समस्याओं का मौलिक कारण है। यदि कोई नारी प्रसन्न रहे तो उसके चारों ओर के लोग भी प्रसन्न रह सकते हैं। इसी तरह यदि कोई पुरुष खुशी में न हो तो उसके परिजनों की खुशी भी नष्ट हो जाएगी।

प्रकृति ने कुछेक मौलिक कारणों से स्त्री व पुरुष के लिए अलग प्रकार की शारीरिक रचना और भिन्न-भिन्न गठन दिए हैं। शारीरिक दृष्टि से दोनों की खुशियाँ भिन्न प्रकार की हो सकती हैं।

लेकिन शांति और पूर्ण आनंद शरीर से संबंधित नहीं है। प्रकृति ने यहाँ पुरुष और स्त्री के आनंद में भेद नहीं किया है।

आनंदपूर्ण रहना मनुष्य जाति की सहज प्रकृति है। यदि इसे समझते हुए बरतें तो समाज में पुरुष और स्त्री के बीच ऊँच-नीच का कोई भेद नहीं होगा।



अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करें

आज न केवल राजनीतिज्ञ, बल्कि ज्योतिषी और धर्मगुरु भी आपको अपने नियंत्रण में रखना चाहते हैं। ज्योतिषी और धर्मगुरुओं को स्नेह-सद्भावना के बल पर लोगों का दिल जीतना नहीं आता; पाप और पुण्य, अच्छाई और बुराई की बातें करते हुए ये लोग आपके अंदर एक तरह का डर और अपराध-बोध का भाव उत्पन्न करके आपको चक्कर में डालते हैं।

इन लोगों ने डंके की चोट पर अपनी बात रखते हुए आपके मन में यह विश्वास बिठा रखा है कि आपकी हार-जीत का फैसला करनेवाला तत्त्व केवल आपका भाग्य है। आप किस्मत के हाथों नाचने के लिए मजबूर हैं।

अगर आपको वांछित वस्तु नहीं मिल रही है तो उसके लिए आप ही पूर्ण रूप से जिम्मेदार हैं। अपने जीवन के निर्माण में आपने यथोचित ध्यान नहीं दिया है। जिस पद या वस्तु को पाने की अभिलाषा आपके मन में उठी, उसे प्राप्त करने के लिए आपने स्वयं को उचित रूप से तैयार नहीं किया है। यह आपकी ही गलती है, भाग्य का खेल बिल्कुल नहीं है।

अपने कंप्यूटर के सामने बैठकर आपके जीवन के प्रत्येक चरण एवं दशा की गणना और योजना बनाते रहने के अलावा क्या ईश्वर के पास और काम नहीं है? इस तरह के किस्से-कहानियों पर विश्वास करने के लिए क्या आप अभी भी अबोध बालक हैं?

जन्म के कारण तथा पालन-परवरिश की वजह से आपने कुछ बुनियादी गुणों को चाहे-अनचाहे प्राप्त किया है। आपके पथ का निर्णय करनेवाले ये ही गुण विशेष हैं। यह बात भी एक हद तक ही सही है। वरना यदि आप ध्यानपूर्वक काम करेंगे तो अपने तथाकथित शिरोलिखित को इच्छानुसार बदल सकते हैं।

शंकरन पिल्लै कोई समस्या लेकर एक बुद्धिजीवी के पास गए। वे बुद्धिजीवी स्वयं को सर्वज्ञ मानते थे। शंकरन पिल्लै ने उनके सामने अपनी समस्या रखी—“मेरी एक सुंदर बेटी है। वह शिक्षा-कला आदि सभी में खूब पारंगत है। लेकिन उसके साथ एक दिक्कत है। सुबह उठते ही बड़ी सुस्त रहती है। जो भी खाना खाती है, उसे तुरंत उलटी कर देती है।”

बुद्धिजीवी आँखें मूँदकर थोड़ी देर विचार-मग्न रहे, फिर पूछा, “क्या आपकी बेटी दूध पीती है?”

“हाँ, अच्छी नस्ल की गाय से दुहा खालिस दूध उसे पिलाते हैं।” शंकरन पिल्लै ने उत्तर दिया।

“समस्या यहीं पर है।” बुद्धिजीवी ने कहा, फिर समझाया, “पेट के अंदर जाते ही वह दूध दही के रूप में जम जाता है। रात में जब आपकी बेटी बिस्तर पर लुढ़कती है, वह दही मथा जाकर मक्खन का रूप लेता है। बदन की गरमी के कारण वह मक्खन फिर घी बन जाता है। उसके बाद वह घी रासायनिक प्रक्रिया के कारण शक्कर बनता है। जब वह शक्कर खून में मिल जाता है, तब एक खास तरह का नशा दिमाग में छा जाता है। सुबह उस नशे से मुक्त होने से पहले आपकी बेटी उठ जाती है। इसी वजह से यह समस्या उत्पन्न हुई है।”

अबूझ परिस्थितियों के लिए भाग्य पर दोष मढ़ते हुए स्वयं बच निकलना भी बुद्धिजीवी के बताए कारण की तरह निरर्थक ही है।

कुछेक बुजुर्ग आपको समझाते हैं, “सबकुछ भाग्य द्वारा संचालित होता है।” अकर्मण्यता सिखानेवाली इस उक्ति पर विश्वास करते हुए क्या आप अपने नजरिए को संकीर्ण बना लेंगे, अपनी दृढ़ता को कुंठित कर लेंगे?

यह जरूरी नहीं है कि व्यक्ति के लिए बाह्य परिस्थितियाँ सदा अनुकूल ही रहें। यदि ऐसी स्थिति सामने आए, जिसे बदला नहीं जा सकता तो कुछ लोग उससे जूझने लग जाते हैं। इससे दिमाग बेचैन हो जाता है। उसकी

सोचने की शक्ति नष्ट हो जाती है।

प्रतिकूल परिस्थिति से जूझने के बजाय उसे उसी रूप में स्वीकार कर लें तो दिमाग पर जोर नहीं पड़ेगा। मस्तिष्क इससे बचने के उपायों पर सोचना शुरू कर देगा। लेकिन आपने तो मन में यह गलत धारणा पाल रखी है कि किसी भी परिस्थिति को चुपचाप सहन करने का नाम ही भाग्य है। मैं कभी आपको यह सलाह नहीं दूँगा कि किसी भी परिस्थिति को चुपचाप सहन करें। सहन करना इच्छापूर्वक की जानेवाली क्रिया नहीं है, बल्कि इसमें मजबूरी काम करती है।

इसलिए मैं यही कहता हूँ कि किसी भी स्थिति को शांतिपूर्वक स्वीकार करके भाग्य को अपने अनुकूल बदलने के मार्ग के बारे में सोचें और तदनुसार कार्य करें।

ऐसा सुना जाता है कि कुछ लोगों का भाग्य बदला नहीं जा सकता। यह ठीक है?

पर्वत के ऊपर वर्षा होती है। वह जल झरने के रूप में नीचे पहुँचता है। अनेक नदियों और शाखाओं में बँटकर गहराइयों में बहने के बाद अंत में समुद्र में मिल जाता है। अपने जन्म के समय से ही नदी समुद्र से संगम करने की इच्छा से यात्रा करती है—यह बात कविता रचने में सहायक हो सकती है। वास्तव में यह नदी की नियति नहीं है। नदी के मार्ग में बाँध बनाकर उसे रोकने से वह समुद्र से संगम न कर पाने के दुःख और नैराश्य में किसी प्रेमिका की तरह आत्महत्या नहीं कर लेगी। यदि समुद्र-जल नदी की तुलना में ऊँचाई में हो तो बताइए, समंदर नदी की तलाश में आएगा या नदी समुद्र की ओर बहेगी?

शंकरन पिल्लै और उनकी पत्नी किसी नदी में स्नान कर रहे थे। अचानक पत्नी के पैर फिसल गए और वह पानी में बहने लगी। शंकरन पिल्लै नदी के बहाव की उलटी दिशा में तैरकर बहने लगे।

कारण पूछने पर पिल्लै ने बताया, “क्या मैं अपने पत्नी के बारे में नहीं जानता! दुनिया के लिए कोई रीति है तो उसकी रीति ठीक उलटी ही होती है। मैं जानता हूँ, नदी का बहाव उसे उलटी दिशा में ही नहीं ले गया होगा।”

अतिरंजित कहानियाँ और कविताएँ केवल आस्वाद करने के लिए हैं। इन्हीं को रीति और नियम मानने लग जाएँ तो आप भी मूर्ख बन जाएँगे। भाग्य को लेकर बने किस्से-कहानियों को गड्ढे में फेंककर किसी भी स्थिति का सजगता के साथ निरीक्षण करके काम करने की क्षमता आ जाए तो भाग्य आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

आप तभी अपना विकास कर पाएँगे, जब आप भाग्य संबंधी गीदड़ भभकियों से बाहर आएँगे।

‘चाहे ईश्वर ही आकर बताए, तब भी अपने भाग्य का निर्माण मैं स्वयं करूँगा।’ ऐसी दृढ़ता नहीं आए तो आपका जीवन अपने ढर्रे पर ही चलता रहेगा।

यदि आपके अंदर वांछित लक्ष्य को पाने की तीव्र इच्छा हो तो अपने भाग्य को ईश्वर के हाथ से छीनकर आप स्वयं उससे काम ले सकते हैं।



अपनी पहचान का मुखौटा

बचपन में शरीर और मन में इतना लचीलापन था कि आप जैसा चाहें, उन्हें झुकाकर काम ले सकते थे। बड़ा होने के दौरान आपने उन्हें इतना सख्त बना लिया, यों कस लिया कि अब आपका शरीर और मन तनाव में हैं।

यह प्रगति का कोई लक्षण नहीं है। असल में आपने पीछे की ओर कदम रखा है। जन्म के साथ जो कौशल आपको प्राप्त हुआ था, उसे साधकर दृढ़ बनाने के बजाय आप नाहक उसे गँवा बैठे हैं। इसका क्या कारण है?

जन्म लेते समय आप नए जीव के रूप में जीवट के पुतले रहे। आपने प्रकृति को भेद-दृष्टि के बिना देखा था, सभी चीजों का मन से आस्वाद किया। उम्र बढ़ते-बढ़ते अपनी जीवट की प्रकृति को भूलकर आपने अपने लिए एक पहचान बना ली, जैसे—‘मैं डॉक्टर हूँ, मैं इंजीनियर हूँ, व्यापारी हूँ, राजनीतिज्ञ हूँ, उद्योगपति हूँ।’ वगैरह-वगैरह।

आप जहाँ भी जाएँ, इस पहचान को ढोते हुए चलते हैं। इस कारण आप अपने निजत्व को खो बैठे हैं। जो लोग काफी लोकप्रिय बन जाते हैं, अगर वे सड़क पर स्वेच्छापूर्वक हाथ आगे-पीछे हिलाते हुए चलना चाहें तो उन्हें ऐसे स्थानों की तलाश करनी पड़ती है, जहाँ उनकी पहचान दर्ज नहीं हुई हो और जहाँ लोग जानते नहीं हों।

आपसे सरोकार रखनेवाली यह पहचान कहाँ से आई? उसने आपके अतीत की घटनाओं के आधार पर रूप लिया है। आखिर यह पहचान एक लाश की तरह है। अगर आप उसे नाहक ढोते फिरें तो एक मुकाम पर आकर उससे निकलती दुर्गंध को झेलना आपके लिए असहनीय बन जाए और आपका दम घुटने लग जाए।

एक बार शंकरन पिल्लै अपने गुरु महाराज के पास चले गए।

उन्होंने गुरुजी से निवेदन किया, “महाराज, मैंने किसी व्यक्ति की भलाई की थी। लेकिन उसके अंदर कृतज्ञता नाम की चीज लेश मात्र भी नहीं है। उस आदमी को देखते ही मेरे मन से चैन उड़ जाता है। क्यों?”

गुरुजी मुसकराए। बोले, “चाहे अच्छा-बुरा कुछ भी घटित हो, उसे ढोते मत फिरो। आइंदा कोई व्यक्ति तुम्हारा कोई अहित करे या तुम किसी की भलाई करो तो तुरंत उसे उठाकर कुएँ में डाल देना चाहिए। इससे मन की शांति बरकरार रहती है।”

शंकरन पिल्लै ने सहमति में सिर हिलाया और घर की ओर चलने लगे। रास्ते में एक अंधी बुढ़िया मिली। सड़क पार करने में उसकी मदद भी करने के बाद पिल्लै ने उस बुढ़िया को उठाकर कुएँ में धकेल दिया।

मैंने जो बताया, उसे आप शंकरन पिल्लै की शैली में मत समझिए।

आपकी पहचान को किसने रूप-आकार दिया? आपके मन ने, है न? मन क्या है? वह एक कूड़ेदान है, जिसमें जीवन के बारे में दूसरों की दी हुई सूचनाओं तथा टुकड़ा-टुकड़ा करके अपने द्वारा पाए अनुभवों को बिना सोचे-समझे संचित करके फेंक रखा है। इसे छोड़कर मन की अपनी कोई अस्मिता नहीं है।

आप किसी व्यावसायिक संस्था के मालिक हो सकते हैं। आपके अधीन काम करनेवाले कर्मचारी ने एक दिन कोई मजेदार चुटकुला सुनाया। मालिक की हैसियत से आपकी पहचान यदि उस समय दिल खोलकर हँसने से आपको रोकती है तो बेशक आप एक दयनीय व्यक्ति हैं। अगर आप इस तरह अपनी पहचान के मुखौटों पर फँसे रहते हैं तो आप किसी भी समाज में फिट हुए बिना तनाव में रहने को अभिशप्त हैं। आपके अहंकार को बढ़ावा देनेवाली चीजों को जब का तब उठाकर फेंके बिना अपने पास संचित करते जाने से आप जीवन के अनेक उच्च एवं उदात्त विषयों से वंचित रह जाएँगे।

फूलों को लादकर मंडी की ओर चल रही गाड़ी को एक घोड़ा खींचकर ले जा रहा था। बगल में लकड़ियों से भरी गाड़ी में जुते घोड़े को देखकर उस घोड़े ने पूछा, “मेरे चारों ओर जो सुगंध फैल रही थी, क्या वह तुम्हारे पास है?”

दूसरे घोड़े ने अपमान से सिर झुका लिया।

मंडी में फूलों की टोकरियाँ उतारने के बाद गाड़ी वापस आ रही थी। गाड़ीवान ने अपने घर की जरूरत के लिए आवश्यक गोबर को उसमें लाद लिया। सामने से लकड़ियाँ ढोती हुई दूसरी एक गाड़ी आई। उसे देखकर गोबर वाली गाड़ी में जुते घोड़े ने अपमान से सिर झुका लिया।

हर तरह से चुस्त-दुरुस्त कैसे बनें?

आपने किसी ऐसे व्यक्ति को देखा होगा, जिसके बारे में लोग प्रशंसा करते हैं, “ओह, आप उनके बारे में पूछते हैं? वे तो एकदम चुस्त-दुरुस्त हैं—सैनिकों की तरह अनुशासित, हर काम में त्रुटि-रहित!” उनकी कार्यशैली और व्यवहार देखकर आपने भी उनके बारे में कुछ इसी तरह का मूल्यांकन किया होगा।

असल में, वे न केवल चुस्त-दुरुस्त हैं, बल्कि पत्थर सरीखे भी हैं या चट्टान के तुल्य हैं। उन्होंने अपने विचारों और भावनाओं में लेश मात्र भी बदलाव की गुंजाइश दिए बिना उन्हें कुछ ठोस बनाकर रखा है, गुलाम बनाकर रखा है या यों कहिए कि उन्होंने अपनी भावनाओं और विचारों का गला घोटकर रखा है। किसी भी तरह के नए और स्वतंत्र विचारों के लिए जगह देने में असमर्थ होकर वे खुद अपने हाथ-पैरों पर हथकड़ी-बेड़ियाँ लगाते हुए घुटन के साथ जी रहे हैं।

सहज रूप से प्राप्त होनेवाले आनंद का अनुभव करना ऐसे चुस्त-दुरुस्त लोगों के लिए बड़ा दुरुह प्रयत्न महसूस होगा।

ऐसा क्यों?

वर्गाकर बर्फ के टुकड़े को अगर आप गोलाकार बरतन में डालना चाहेंगे तो वह इधर-उधर से टूट जाएगा और उसका आकार बेढंग हो जाएगा। बर्फ का वही टुकड़ा जब पिघल जाता है, उस पानी को किसी भी बरतन में डालकर देखिए, उस बरतन की शक्ति के अनुसार वह अपने को बदल लेता है। इस कारण से पानी के मौलिक गुण में बदलाव नहीं आएगा।

एकदम दुरुस्त रहने की आवश्यकता क्या है? किसी भी परिस्थिति में प्रतिरोध के बिना अपने को संगत करते हुए मौलिक प्रवृत्ति के साथ समझौता किए बिना काम करने में ही तो वास्तविक आनंद है।

आपकी पहचान भी गाड़ी में लदे बोझ के समान ही है। गाड़ी से आ रही सुगंध को स्वयं अपने से निकलती हुई मानकर गर्व करने की भी जरूरत नहीं है, यदि बदबू आए तो उसके कारण जलील होने की भी जरूरत नहीं है।

विभिन्न प्रसंगों और परिस्थितियों के अनुसार आपको समय-समय पर अलग-अलग मुखौटे पहनकर ध्यानपूर्वक काम करना पड़ सकता है—कभी पिता, कभी माँ, कभी मजदूर तो कभी मालिक, कभी अधिकारी। इस तरह जाने कौन-कौन से मुखौटे पहनकर आपको इस संसार में कुछ कार्यों का निष्पादन करना पड़ता है। उन मुखौटों का उसी हद तक महत्त्व देने का अभ्यास कीजिए। कहीं उस मुखौटे को अपना चेहरा मान बैठे तो वहीं से खतरा शुरू हो जाएगा।

प्रकृति ने आपको जो ऊर्जा प्रदान की है, वह बाढ़ की तरह एकत्रित है। आपकी पहचान आड़े आकर आपको अपनी ऊर्जा का उपयोग करने से रोकती है। अपने मुखौटे को उतारने के बाद ही आप उस ऊर्जा का तीव्रता एवं सघनता के साथ अनुभव कर सकते हैं।

अपनी पहचान को खोने के लिए तैयार हो जाएँगे, तभी आप प्राणों की सहज प्रकृति को समझ सकेंगे, तभी आपका जीवन पूर्ण होगा।



सपना साकार कीजिए

जब आप छोटे थे, भावी जीवन में क्या-क्या बनना है, इसके बारे में आपके मन में कई सपने रहे थे; अपने जीवन का कैसे निर्माण करना है, इस बारे में अनेक लक्ष्य थे।

अठारह वर्ष की उम्र में आपने जो सपने देखे थे, वे सब विराट् थे। पच्चीस साल की उम्र में केवल जीवन-यापन के लिए आवश्यक सपने जारी रहे। तीस तक पहुँचते-पहुँचते सारे सपने सूखकर, 'जीवन में बड़ी सी कोई उपलब्धि न मिले तो भी ठीक है। अपने पास जो कुछ है, बरकरार रहे, यही बहुत है।' यों अपने आपको तसल्ली देने लगे।

कारण पूछने पर बताएँगे, "उम्र के बढ़ने के साथ-साथ जीवन को समझने की व्यवहार-बुद्धि विकसित हो गई है।" असल में सपना देखने के लिए भी मन में साहस होना चाहिए। आप वह साहस खो चुके हैं। वैसे, कोई सपना देखने पर भी उसे साकार करने के साहस के अभाव में कायर बन गए हैं।

आप किसी भी सपने को 'वह पूरा होगा या नहीं', इसी संदेह-दृष्टि के साथ देखते हैं। इसलिए उन्हें पाने के आपके प्रयत्न भी अधूरे रह जाते हैं।

चीन में एक जेन गुरु थे। उन्होंने एक दिन अपने शिष्य को बुलाकर कहा, "मैं स्नान करना चाहता हूँ, हौज में पानी भरो।"

शिष्य ने कुएँ से काठ की बाल्टियों में पानी भरा, बाल्टियों को कंधे पर ढोते हुए ले जाकर हौज में उड़ेल। बाल्टी के निचले भाग में बचे हुए पानी को नीचे डालकर अगली पारी का जल लाने के लिए कुएँ के पास गया।

गुरु ने हाथ में एक बेंत लिया और शिष्य की पीठ पर रसीद कर दिया। उसे डाँटा, "क्यों पानी को बेकार फेंक दिया? पौधों को दे सकते थे न।"

पीठ पर दर्द और आँखों में आँसू के साथ शिष्य ने सफाई दी, "जो पानी जमीन पर डाला गया था, वह प्याला भर नहीं होगा। थोड़ा सा पानी सींचने पर क्या कोई पौधा आसमान तक ऊँचा हो सकता है?"

"मूर्ख कहीं का! क्या मैंने पौधे के बढ़ने के लिए यह बात कही? अरे, मैं तुम्हारे विकास के लिए कह रहा था। बूँद भर पानी होने पर भी उसे तुच्छ नहीं मानना है। उसे बेकार न किया करो। तभी तुम्हारा भी विकास होगा।"

जेन गुरु ने जो बात कही, वह केवल अपने चेले के लिए नहीं, आपके लिए भी है। अगर आप अपना सपना साकार करना चाहते हैं तो छोटे-से-छोटे अवसर की भी उपेक्षा किए बिना उसका उपयोग करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

जिन लोगों को अपने सपने को खाद डालकर उसे साकार करना आता है, वही वास्तव में जीते हैं। बाकी सब इस दुनिया में बस, रहते हैं।

अगर एक पूरी पीढ़ी सपना देखना छोड़ दे तो भले ही उस समाज में अद्भुत चमत्कार किए जाएँ, सब व्यर्थ ही हैं। जिन लोगों को जीवन का आस्वाद करते हुए उसका अनुभव करना नहीं आता, ऐसे शुष्क जनों के हाथ में कुछ भी ले जाकर दिया जाए, सब निरर्थक है।

स्वतंत्रता-प्राप्ति से पहले हमारे देश में प्रत्येक व्यक्ति के पास सपना था। अपने सपने को साकार करने के लिए उस जमाने के लोग अपने जीवन को बाजी में लगाने के लिए भी तैयार रहते थे। उनके सपने में इतनी तीव्रता रही, तभी आजादी का सपना सच निकला। इस समय देश के विकास के सपने देखने के लिए यहाँ कोई नहीं है, यही दुःखद बात है।

अपने भिक्षा पात्र में आज कौन सी चीज पड़ेगी, इसी चिंता के साथ आप ऊपर देखते हुए क्यों उकड़ूँ बैठे हुए हैं? अपने सपने को साकार बनाने के लिए पूरी लगन के साथ काम कीजिए। आप आश्चर्यजनक बुलंदियों को छू सकते हैं।

रूस में बैले नृत्य बहुत लोकप्रिय है। लिन किनस्की नामक कलाकार ने बैले नृत्य के लिए स्वयं को समर्पित कर रखा था। जिन कार्यक्रमों में वे भाग लेते, मंच पर लट्टू की तरह घूमते, झूम-झूमकर उछलते-कूदते। गुरुत्वाकर्षण शक्ति सबके लिए समान ही होती है। किंतु जब लिन किनस्की मंच पर उछलते, उस समय वैज्ञानिक नियमों का उल्लंघन करते हुए असाधारण ऊँचाइयों तक उन्हें उछलते देखकर लोग विस्मय-विमुग्ध रह जाते। जब उनसे इस विषय में पूछा गया तो उन्होंने कहा, “जिन पलों में मैं आशंकित नहीं होता कि यह मुझसे संभव होगा या नहीं, तब मैंने अपनी क्षमता से परे एक असाधारण शक्ति के साथ नृत्यरत महसूस किया है।”

कोई पुरुष पिता के रूप में अपने बच्चे पर जो स्नेह नहीं दिखाता, उसे अपने पोतों पर क्यों बरसाता है?

इस विश्व में ऐसे अनेक बारीक विषय हैं, जिन्हें आप अपने अनुभव में महसूस कर सकते हैं, लेकिन उन्हें मस्तिष्क द्वारा समझना मुश्किल है।

नारियों के लिए यह अनुभव सहज साध्य है। जो अपने को पुरुष के रूप में पहचान लेता है, वह अपने को छिपाकर रखता है। वह सच्चे अनुभवों के लिए स्वयं को समर्पित करने के लिए तैयार नहीं रहता।

उम्र बढ़ते-बढ़ते मर्द नामक यह सख्त मुखौटा घिसकर झड़ जाता है। जीवन का अनुभव करनेवाले मृदुल मनुष्य के रूप में बदलने की परिपक्वता उसमें आ जाती है। इसीलिए पिता के रूप में रहने की उम्र में जिस पुरुष को अपने पुत्र को प्यार करना नहीं सूझता, बढ़ापा आने पर पोता-पोती और नाती-नातिन को सिर पर उठाकर झूमने की इच्छा उसमें जागती है।

लिन किनस्की का उद्गार एकदम सही है। संपूर्ण लगन के साथ प्रयत्न करते समय अपने से परे एक शक्ति पैदा होती है और सच्ची क्षमता प्रकट होती है। इसलिए सबकुछ संभव है।

अपने सपने को साकार करने के लिए क्या करना चाहिए?

पहले यह तय कीजिए कि अगले पाँच वर्षों में आप कौन-कौन सी उपलब्धियाँ चाहते हैं। उन्हें लक्षित करते हुए धैर्यपूर्वक कदम बढ़ाइए। प्रत्येक पाँच-पाँच वर्षों में आपका सपना उत्तरोत्तर विकसित होता जाए।

यदि आप चोटी पर पहुँचना चाहते हैं तो चढ़ना ही होगा। इसके अलावा कोई चारा नहीं है। पाँव दुखेंगे, थकान होगी। मन धमकी देगा, ‘यह सब होनेवाली बात नहीं है।’ फिर फुसलाएगा, ‘चलकर आराम कर लो न।’ इन सबसे थकिए नहीं। जो भी काम करें, उसे पूरी इच्छा के साथ करेंगे तो कोई भी दर्द या दुःख नहीं देगा। चोटी पर पहुँचते ही थकान मिटकर सुख का अनुभव होगा।



क्या जीवन कोई लेन-देन का मामला है?

“ईशा योग केंद्र, ग्रामीण कायाकल्प अभियान में बड़ी सरगर्मी के साथ लगा हुआ है। क्या आपके मन में राजनीति में प्रवेश करने का कोई निहित स्वार्थ है?” किसी नौजवान ने मुझसे पूछा।

मुझे उनका सवाल बड़ा विचित्र लगा, वेदनादायक भी।

मैंने उस युवक से कहा, “घर जाकर अपनी माताजी से पूछो, तुम्हें जन्म देते ही उन्होंने दूध पिलाया था, उसके पीछे उनका कौन सा निहित स्वार्थ था? वही उद्देश्य मेरा भी है।”

इसमें उस युवक का कोई दोष नहीं है। यह समाज ऐसे लोगों से भर गया है, जो फलेच्छा के बिना, निहित स्वार्थ के बिना कोई काम करने को राजी नहीं हैं। किसी भी बात को शक की नजर से देखने का आदी हो गया है यह समाज।

अगर आप जीवन को पल-प्रति-पल पूर्णता में अनुभव करते हुए जीना चाहते हैं तो अक्षय स्नेह बरसाकर देखिए। इसके विपरीत, यदि आप जीवन को मात्र लेन-देन के मामले के रूप में देखने लगे तो आपकी मानसिक शांति नष्ट हो जाएगी।

अगर सभी मामलों में अपने फायदे को ही ढूँढ़ते रहेंगे तो इसका सीधा-सा मतलब यही है कि आपने अपने मन में शैतान को दाखिल होने की अनुमति दे दी।

गिरजाघर की प्रत्येक प्रार्थना-सभा में स्नेह की महिमा का बखान करनेवाले कोई पादरी सड़क पर जा रहे हैं। रास्ते में उन्होंने देखा कि बीच सड़क पर कोई व्यक्ति खून से लथपथ होकर औंधा पड़ा हुआ है। पादरी ने सकपकाकर उसे सीधा करके देखा तो एकदम चौंक उठे।

वहाँ जो व्यक्ति अपनी जान के लिए संघर्ष कर रहा था, वह और कोई नहीं, क्रूर शैतान था। पादरी साहब झट पीछे हट गए।

शैतान उनसे गिड़गिड़ाने लगा, “मुझे किसी तरह बचाइए।”

“क्या कह रहे हो? मैं तुम्हें बचाऊँ? तुम्हें इस दुनिया से खदेड़कर भगाने के लिए तो विश्व भर के हम सारे पादरी लगातार संघर्ष कर रहे हैं।”

“आपके ईसा मसीह ने यही तो सिखाया है—दुश्मन से भी प्रेम करो। क्या आप उस शिक्षा को भूल गए?”

“शैतान भले ही धर्मशास्त्र से उद्धरण दे, उसे सुनकर धोखा खानेवाला और कोई होगा, मैं नहीं।” यों कहकर पादरी वहाँ से तेजी से जाने लगे।

“मैं अपने लिए यह मदद नहीं माँग रहा हूँ। आपका लिहाज करते हुए कह रहा हूँ। अगर आप मेरी रक्षा नहीं करते तो इसका घाटा आपको ही है। अगर यहाँ शैतान नामक कोई नहीं रहे तो कौन आएगा आपके पास ईश्वर की खोज करते हुए?”

पादरी के मन में द्वंद्व मचने लगा।

“जरा सोचिए, अगर लोग गिरजाघर आना छोड़ दें तो आपकी जीविका का क्या होगा?”

उसके बाद पादरी क्षण भर भी नहीं हिचके। शैतान को कंधे पर डालकर अस्पताल की ओर चलने लगे।

आजकल राजनीति भ्रष्टाचार का पर्याय बन गई है, कैसे?

पहले एक बात सच-सच बोलिए। जब सड़क पर यातायात की पुलिस दिखाई नहीं देती, ऐसे समय में सिग्नल का उल्लंघन आप करते हैं या नहीं? सड़क पर थूकते हैं या नहीं? दूसरों की नजर बचाकर पड़ोसी के अहाते में आप कूड़ा-करकट नहीं फेंकते? फटे हुए नोट को होशियारी के साथ तह करके देते नहीं?

अगर आप सच्चे अर्थ में चाहते हैं कि समाज भ्रष्टाचार-विहीन रहे तो इसके लिए आवश्यक परिवर्तन को खुद अपने से शुरू कीजिए। फिर अपने चारों ओर रहनेवाले लोगों को स्वच्छ बनाइए। वे लोग अपने आसपास के लोगों में बदलाव लाएँ।

यह रातोंरात होने वाला नहीं है। अगर आप पूरी लगन के साथ इसी क्षण से दृढ़तापूर्वक काम करने लगेंगे तो भ्रष्टाचार-विहीन समाज धीरे-धीरे रूप लेगा।

लेन-देन की दलील से पादरी को भी पटाने के व्यापार में शैतान होशियार था।

यदि आप जीवन को केवल लेन-देन के रूप में ही देखेंगे तो आप अपने मन को शैतान के हाथों सौंप देंगे। यही इसका मतलब है। उसके बाद तो अंदर और बाहर केवल संघर्ष-ही-संघर्ष रहेगा।

आपका सम्मान इसमें नहीं कि आप कितने सफल व्यापारी हैं, बल्कि इसमें है कि आप किस हद तक मानवतापूर्ण व्यवहार करते हैं।

शंकरन पिल्लै के खलिहान में आग लग जाने के कारण वहाँ इकट्ठा कर रखे गए ढेरों अनाज जलकर राख हो गया। शंकरन पिल्लै गम मिटाने के लिए शराबखाने में चले गए। उनकी पत्नी गुस्से में भरकर बीमा कंपनी चली गई और वह मैनेजर के कमरे में आँधी की तरह घुस गई। वह चिल्लाने लगी, “हमने अपने गोदाम का पाँच लाख रुपए का बीमा कर रखा है। अभी, इसी क्षण वह रकम गिनकर रखिए।”

“मैडम, यह बात अहम नहीं है कि आपने गोदाम का कितने रुपए में बीमा करवा रखा है। हम लोग पहले इसकी जाँच करेंगे कि क्या वह इतने मूल्य का है, उसके बाद ही देय रकम तय करेंगे।” मैनेजर ने समझाया।

शंकरन पिल्लै की पत्नी ने बैठकर विचार किया। उसने कहा, “यदि यही आपका नियम है तो मेरे पति पर किए गए बीमे को अभी रद्द कर दीजिए।”

भूलें नहीं। आपका असली मूल्य इस बात पर आधारित नहीं है कि कितने सफल व्यक्ति के रूप में आपका चित्रण किया गया है, बल्कि वह इस पर निर्भर करता है कि आप आंतरिक रूप से कैसे व्यक्ति हैं। अपने फायदे के लिए यदि आप दूसरे का शोषण करने की सोचेंगे तो उसके लिए जरूरी रणनीतियाँ बनाते-बनाते खुद अपने को जला लेंगे।

इसे छोड़कर चाहे आप जिस किसी भी व्यवसाय में लगे हुए हों, उसे दूसरों की परवाह करनेवाले साधन के रूप में उपयोग करके देखें। उसे अपने स्नेह की अभिव्यक्ति के रूप में पेश करके देखिए, सफलता के साथ शांति और आनंद आपके द्वार पर दस्तक देगा।



मैं कौन हूँ? आप कौन हैं?

जब आप पैदा हुए, आपके शरीर का वजन कितना था? अब कितना है? बीच में उसके पलकर विकसित होने के लिए आपने क्या किया? भोजन देते रहे, है न?

आपका भोजन कहाँ से प्राप्त हुआ? इसी माटी से, हाँ। आपने जो भोजन किया, उसका एक-एक दाना, एक-एक सब्जी और फल इसी माटी और पानी से तैयार हुए थे।

अगर आप मांसाहारी हैं तो आपके खाए हुए बकरे और मुरगे भी तो इसी मिट्टी की चीजों को खाकर ही पले थे और फिर आपकी भूख मिटाई थी। यों बुनियादी तौर पर आपका शरीर इसी माटी से बना है। ज्यों-ज्यों आपके शरीर में माटी एकत्र होती गई, उसी को आपने 'मैं' के रूप में स्वीकार किया।

एक लोटे में जल रखा है। यदि आपसे पूछा जाए, क्या वह जल और आप एक हैं, तो जवाब देंगे—नहीं। उस जल को उठाकर पी लीजिए। जब वह आपके शरीर में मिल जाता है, उसे आप क्या कहेंगे? वह जल 'आप' बन गया, है न। यानी जो चीज आपकी भावना की सीमा में आती है, उसी को 'स्वयं' के रूप में महसूस करेंगे। जब तक वह बाहर रही, आपने सोचा कि वह अलग था और आप अलग थे।

क्या अब आप महसूस करते हैं कि बाहर के जल, मिट्टी, हवा और गरमी से ही आपका निर्माण हुआ है? जब वे चीजें आपका हिस्सा बन जाती हैं, उन्हें अलग-अलग करके देखना संभव नहीं होता। मोटे तौर पर उन सबकी पहचान 'मैं' के रूप में कर लेते हैं।

आपके पुरखे कहाँ चले गए? चाहे उन्हें दफनाया गया हो या जलाया गया हो, इसी माटी में वे समा गए हैं। यह बात न भूलें कि उन्हीं के ऊपर कदम रखते हुए आप रोज चलते रहते हैं।

बताइए, आप भी कहाँ जाने वाले हैं? इसी माटी के अंदर जो आपका मूल तत्त्व है। जरा-सी मिट्टी आपकी शक्ल बनाकर साँस लेती रहती है और थोड़ी सी मिट्टी आपके बगीचे में ऊँचे पेड़ के रूप में खड़ी हुई है। कुछ और माटी कुरसी बन गई है, जिस पर आप बैठे हुए हैं।

यही माटी जीवन-चक्र में आम और नीम होकर, घास और फूल होकर, केंचुआ और मनुष्य होकर यों अनेकानेक विभिन्न अवतार लिये हुए है और आगे भी लेने वाली है। चाहे घड़े में भरकर रखें या लोटे में, उसे आप जल ही तो कहेंगे। यही न्याय आपके मामले में भी सही है।

भले ही इकट्ठा किए गए बरतन अलग-अलग हों, सभी में भरा हुआ मूल तत्त्व यही

क्या आप ईश्वर द्वारा चुने गए हैं?

आप में और मुझ में क्या फर्क है?

जो लोग यह दावा करते हैं कि वे ईश्वर द्वारा चुने गए हैं, वे अहंकार नामक पर्वत की ऊँची चोटी पर बैठे होते हैं।

दरअसल वे ही ईश्वर से बहुत अधिक फासले पर रहते हैं। यदि आपके मन में यह धारणा बिठाई गई है कि ज्ञान कुछ लोगों को ही प्राप्त हो सकता है तो इसके समान बड़ा झूठ और कोई नहीं है। मानव के रूप में जनमे प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञान-लाभ करने का तथा इस परम सत्य का अनुभव करने का अवसर दिया गया है।

यदि मेरे लिए संभव है तो वह आपके लिए भी संभव है। कैसे?

उसी के लिए 'योग' का विधान है। 'योग' से मतलब सिर के बल खड़ा होना नहीं है, बल्कि किसी और के साथ एकाकार हो मिल जाना है।

योग वह विज्ञान है, जो आपको समझा देता है कि आपको ब्रह्मांड से अलग करके रखे हुए फाटक की चाबी कहाँ है।

आप जिस समय मेरी तरह अपने अनुभव में महसूस करेंगे कि आपके अंदर रहनेवाला और बाहर रहनेवाला तत्त्व एक ही है, उसी समय से आप उस अभूतपूर्व व महान् आनंद का अनुभव करने लगेंगे।

उसके बाद मुझ में और आप में फर्क कहाँ है?

माटी है न! यही जल है न? यही वायु और गरमी है न। इसलिए, हर एक चीज में आप मौजूद हैं, है न।

संक्षेप में कहें तो जैसे आप इस ब्रह्मांड का एक हिस्सा हैं, यह ब्रह्मांड भी आपका एक हिस्सा है। क्या आप इस तथ्य को समझ पा रहे हैं? यदि इस बात को अपने दिमाग का उपयोग करते हुए समझ लेंगे तो आप विस्मय-विमुग्ध होंगे, बस। इसके विपरीत, यदि यह बात आपकी अंतर्भावना में खिल जाए तो आपके अंदर भारी परिवर्तन फूट पड़ेगा।

हाँ, यही वास्तविक अध्यात्म है।

मंदिरों में जाकर नारियल फोड़ने, मोमबत्ती जलाकर रखने या घुटनों के बल बैठकर सिर नवाने का नाम अध्यात्म नहीं है। यदि आप इसे समझ लें तो ईश्वर की प्रतीक्षा किए बिना स्वयं अपने स्वर्ग को तय करना आपके लिए सुलभ होगा।

एक योगी मृत्यु-शय्या पर लेटे थे। उन्होंने अपने शिष्यों को बताया कि मैंने स्वर्ग जाने का निर्णय लिया है। एक शिष्य ने पूछा, “गुरु महाराज, आपको स्वर्ग मिलना चाहिए या नरक, पता नहीं भगवान् ने क्या सोच रखा है। आपको कैसे पता कि आप स्वर्ग ही जाएँगे?”

“माना कि मैं नहीं जानता, ईश्वर के मन में क्या है; लेकिन मैं यह तो जानता हूँ न कि मेरे मन में क्या है? दूसरे लोग जिस हिस्से को नरक कहते हैं, यदि मुझे वहाँ ले चलें तो उसे भी स्वर्ग मानकर खुश होना मुझे आता है।” गुरु ने उत्तर दिया।

बात सही है। अपनी भावना और अनुभव में आप किसी भी स्थान को स्वर्ग या नरक बना सकते हैं। वह बाह्य परिस्थितियों का परिणाम नहीं है। तभी आप महसूस करते हैं कि आप और अन्य एक हैं और अभिन्न हैं तो फिर आप किसे देखकर ईर्ष्या करेंगे, किससे झगड़ा मोल लेंगे, किससे होड़ लगाएँगे, किससे दुश्मनी पालेंगे?

जीवन में जब यह अनुभव आ जाता है, उसके बाद बाह्य परिस्थितियाँ जैसे भी बनी हों, अपने मन की भावना से आप सदा स्वर्ग का अनुभव करेंगे।



यौवन : जीवन का अमूल्य अवसर

मानव-जीवन में यौवन प्रकृति का दिया अमूल्य अवसर है। कुछ लोग इसका सदुपयोग करते हुए श्रेष्ठ पुरुष बन जाते हैं। कुछ लोग इसका मूल्य न जानने से गलत तरीके से जीकर इसे व्यर्थ गँवा देते हैं। कुछ लोगों की भावनाएँ इस कदर जम जाती हैं और ठोस बन जाती हैं कि इनमें बदलाव लाना असंभव है।

आज नई पीढ़ी के लोग हैं, जो अभी युवा बनने की तैयारी में हैं। जवानी की दहलीज पर कदम रखनेवाले ये लोग तरल चाशनी के समान मृदुल हैं। कच्ची मिट्टी की तरह इन्हें मनचाहा रूप दिया जा सकता है। इसलिए राजनीतिज्ञ, धर्मगुरु और आतंकवादी लोग इन्हें अपनी आवश्यकता के अनुसार रूप देना चाहते हैं। इसलिए ये लोग इन नौजवानों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए जाने क्या-क्या तरकीब लड़ाते हैं।

ये नौजवान दुनिया के लिए वरदान के रूप में बदलेंगे या अभिशाप बनकर रह जाएँगे, इसका निर्णय करना स्वयं उनके हाथों में है।

माटी में बोए गए दो बीज उसी मिट्टी को खाते हुए, उसी पानी को पीते हुए बढ़कर वृक्ष बनते हैं। एक आम का पेड़ बना है तो दूसरा नीम का। दोनों के दिए फलों के स्वाद में कितना भारी अंतर है!

हम सभी एक ही जीव-मूल से जनमे हैं, एक ही मिट्टी को खाते हैं, एक ही पानी पीते हैं और एक ही हवा में साँस लेते हैं। लेकिन जीवन के पथ पर जिन सारी चीजों को बटोरकर हम अपने आंतरिक ढाँचे की रचना करते हैं, उसी के आधार पर हमारा वास्तविक मूल्य प्रकट होता है।

नगर के मध्य में दो जने आमने-सामने से आ रहे थे। एक व्यक्ति अपनी दाईं टाँग को खींच-खींचकर चल रहा था। दूसरा व्यक्ति भी उसी तरह दाईं टाँग को खींचता

हुआ कदम रख रहा था। दोनों पास-पास आ गए। पहले व्यक्ति ने अपनी दाईं टाँग को गर्व के साथ दिखाया —“भारतीय सेना; 1971 में हुई सरहद की लड़ाई में सुरंग फट गई थी।” दूसरा व्यक्ति भी पीछे नहीं था। उसने अपनी दाईं टाँग पर थपकी दी। बोला, “गली-गली में घूमकर भीख माँगता हूँ। अभी जरा पीछे भैंस के गोबर में दाईं टाँग रख दी।”

दूर से देखनेवाले को यही नजर आएगा कि आमने-सामने से आनेवाले दोनों जने अपनी किसी एक टाँग को खींच-खींचकर चलते हैं। लेकिन कारण जानने के बाद क्या दोनों के प्रति समान रूप से आदर का भाव उत्पन्न होगा?

लापरवाही की वजह से आदमी जीवन-पथ पर अंट-शंट चीजें बटोर लेता है और ऐसे बुरे गुणों को अपना लेता है, जो उसे शोभा नहीं देता। अनिच्छा से ही सही, गलत-सलत रास्तों पर चलता है।

यात्रा की शुरुआत में ही अगर नौजवान चेत जाएँ तो फिर वे कैसी चीजें इकट्ठा करेंगे—तुच्छ वस्तुओं को या अद्भुत चीजों को?

लड़ाई के समय तोप और युद्ध सामग्री का उत्पादन करनेवाले मालामाल बन जाते हैं। अकाल के समय अनाज को दबाकर रखनेवाले अमीर बन जाते हैं। जब कंप्यूटर लोकप्रिय बन जाता है, उसका ज्ञान पानेवाले लाखों में कमाते हैं।

समुद्र की लहर एक कागज को ऊपर उठाती है, फिर नीचे गिराती है; किसी लट्ठ को ऊपर उठाती है, फिर उसे भी नीचे गिराती है। उसके बाद कूड़े को ऊपर ले जाती है, उसे भी दूर पटक देती है। लहर के साथ संयोग पानेवाली हर चीज लहर की गति के अनुरूप कभी ऊपर उठती है, कभी नीचे गिरकर लुढ़कती है।

उसी तरह समाज में जैसी लहर चल रही होती है, उसी के अनुरूप शिक्षा प्राप्त करके तैयार रहनेवाले लोगों को वह लहर ऊपर ले जाती है। इसके फलस्वरूप भोजन-पानी का मार्ग आसानी से खुल सकता है। मगर क्या इसी का नाम वास्तविक सफलता है? कागज या कूड़े का ऊपर उठना देखकर क्या हम उसे कामयाबी के रूप में मनाएँगे? उसके गिरने को पस्ती मानकर गम खाएँगे? लेकिन कुछ ऐसा ही है इस समय के नौजवानों की सफलता-असफलताओं का रंग-ढंग।

पढ़ाई में पीछे हैं? क्या व्यापार की बारीकियाँ समझ में नहीं आ रही? क्या लगता है कि कोई चीज अपने बूते से बाहर हो रही है? नौजवानो, अब ऐसी बातों के लिए ईश्वर को सहायता के लिए न बुलाइए। हम लोगों की मूर्खताओं की मरम्मत करने के लिए वे फुरसत में बैठे हुए नहीं हैं।

उम्र बढ़े बिना सदा युवा रहना चाहता हूँ। क्या यह संभव है?

आपने यह शरीर कहाँ पाया? रोज-रोज आपकी ली हुई साँस, पिया हुआ पानी, खाया हुआ भोजन—इनसे संगृहीत रूप ही है शरीर। अनावश्यक मानकर आप एक दिन के संग्रह को भी शरीर से अलग करके बाहर फेंक नहीं सकते। इसलिए एक दिन बीतने पर एक दिन की उम्र बढ़ती ही जाएगी। आप शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं। लेकिन उसकी वय के एक दिन को भी झटककर फेंक नहीं सकते।

आपने मन कहाँ से पाया है? जन्म के समय से लेकर आपके परिवेश द्वारा फेंके गए विचार, आपकी पाई हुई शिक्षा, अनुभव और समाज द्वारा थोपी गई धारणाएँ—इन सब संग्रहों का कूड़ेदान ही आपका मन है।

यह कतई जरूरी नहीं है कि आप इन सारी चीजों को अपने पास रखे रहें। यह बिल्कुल आपके हाथ में है कि किन-किन चीजों को छोड़ा जाए। यदि आप चाहें तो संग्रह की गई सारी चीजों को क्षण भर में झटककर अलग हो सकते हैं।

अनावश्यक चीजों को हटाकर मन को नित-नवीन रूप में जन्म देने की स्वतंत्रता, उम्र बढ़े बिना उसे चिर युवा बनाए रखने का अवसर आपको दिया गया है।

विधिवत् किए जानेवाले योग द्वारा यह संभव है। चूकिए मत।”

आपको जो चीज चाहिए, पहले उस पर अपनी इच्छा बढ़ा लीजिए। चाव के साथ खाएँगे, तभी भोजन का स्वाद समझ में आएगा। इच्छा के साथ देखेंगे, तभी सुंदरता दिखाई देगी। इच्छा प्रसन्नता ला देती है। काम कोई भी हो, उसे इच्छापूर्वक करें, तभी आपकी पूरी क्षमता प्रकट होगी।

यदि आप इच्छाओं का सावधानीपूर्वक उपयोग करना सीख लेंगे तो उन्हें पूरा करवाने के लिए ईश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है।

सावधानीपूर्वक इच्छा का प्रयोग करने का मतलब क्या है?



अपनी इच्छा के स्वामी स्वयं बनें

भले ही आपको विशाल साम्राज्य का आधिपत्य मिले, तब भी संपूर्ण संतोष के बिना मन में एक अतृप्ति रहेगी।

क्या आपने इसे महसूस किया है? चाहे कुछ भी मिले, और थोड़ा ... और कुछ—इस तरह की हवस आग की तरह अंदर धधकती रहेगी। आपने इस पर गौर किया है?

ऐसा क्यों होता है?

माप में आनेवाली कोई भी वस्तु आपको दी जाए, संतोष मिलने वाला नहीं। असल में आपकी तड़प मिलनेवाली सभी वस्तुओं पर कब्जा करने की नहीं है। तो फिर?

अनंत विश्व के अंगभूत आप अपनी अस्मिता को नाहक एक छोटे दायरे में सीमित करने लगे थे, इसी का परिणाम है यह।

विकसित होते-होते, असीम के साथ मिल जाने की तड़प के कारण ही अन्य कोई भी वस्तु दी जाए, आपकी इच्छा संपूर्ण संतोष पाए बिना कुछ कमी महसूस करती है। इस बुनियादी बात को ध्यानपूर्वक समझ लें तो दुःख की कोई औकात ही नहीं है।

यह विश्व और आप एक ही हैं, इस तथ्य का यथार्थ अनुभव होते ही इच्छा फौरन अपनी तड़प छोड़ देगी। उसके बाद इच्छा जो है, बाहर से आकर जोर डालनेवाली चीज न होकर आंतरिक कामना बनकर रहेगी। तब इच्छा आपको संचालित नहीं करेगी, आप इच्छा का संचालन करेंगे। कैसे?

क्या आप क्रिकेट खेलना चाहते हैं? तब उसके लिए आवश्यक इच्छा का पूरा उपयोग करें। व्यापार में सफल होना चाहते हैं? उसके लिए आवश्यक इच्छा का संपूर्ण विनियोग करें। आप जो भी काम करें, उसके साथ बिताए क्षणों में संपूर्ण इच्छा के साथ कार्यरत हो जाएँ, मानो आपका जीवन वही है। संबंधित खेल पूरा होते ही उस इच्छा को समेटकर रख दीजिए।

ईशा योग केंद्र में जो ध्यानलिंग है,

क्या वह एक और हिंदू मंदिर है?

नहीं। पहली बात यह है, इसे मंदिर के रूप में देखने की जरूरत ही नहीं है। विज्ञान ने इस बात को स्वीकार किया है कि महती शक्ति को संचित कर रखने के लिए लिंग का आकार ही सबसे अधिक उपयुक्त है। यहाँ पर लिंग एक आवश्यक आकृति के रूप में प्रयुक्त है। इसे छोड़कर ध्यानलिंग किसी भी धर्म से संबद्ध नहीं है। उसके लिए पूजा, उपासना या रस्म-रिवाजों की कोई आवश्यकता नहीं है।

ध्यानलिंग महज कोई पत्थर का शिल्प नहीं है। वह एक जीवंत गुरु के रूप में कार्य करता है। चाहे आपको ध्यान के बारे में कोई पूर्व अनुभव न हो तो भी कुछ मिनट तक उसके सामीप्य में बैठे रहना मात्र पर्याप्त है। अपने अंदर पूर्ण आनंद का अनुभव करने के अवसर के रूप में एक उत्कृष्ट बीज अनजाने में ही आपके हृदय में बोया जाएगा। ध्यानलिंग के ऊर्जा-स्पर्दन को वाकई में अनुभव किया जा सकता है। भले ही आप किसी भी देश के निवासी हों, किसी भी धर्म के माननेवाले हों, चाहे स्त्री हों या पुरुष, ध्यानलिंग आपको एक अद्भुत अनुभव प्रदान करेगा।

गाड़ी को घोड़े के पीछे बाँध देंगे तो घोड़ा अनायास गाड़ी को खींचता जाएगा। इसके विपरीत, गाड़ी को घोड़े के आगे बाँधकर खींचने का आदेश देंगे तो घोड़े की क्षमता भी व्यर्थ निकलेगी, गाड़ी भी उलट जाएगी।

प्रसन्नता और इच्छा भी छोड़े और गाड़ी के समान ही है। इच्छा से प्रसन्नता मिलेगी, ऐसा न सोचकर अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति के रूप में इच्छा का उपयोग करके देखिए।

शंकरन पिल्लै कठिन हृदय-शूल से पीड़ित हुए।

डॉक्टर ने कह दिया, “सुबह तक जिंदा रहें तो बड़ी बात है।”

शंकरन पिल्लै की पत्नी थोड़ी देर तक बैठकर रोती रही। उसे याद आया कि पति को गाजर का हलवा बहुत पसंद है। अगले दिन इन सब कामों के लिए समय कहाँ मिलेगा? उनके फोटो के सामने भोग लगाने के लिए रात में ही हलवा बनाकर फ्रिज में रख दिया। फिर रोते-रोते थककर सो गई।

शंकरन पिल्लै की नींद रात में खुल गई। उन्होंने फ्रिज खोला। गाजर के हलवे पर नजर पड़ी तो मुँह से लार टपकने लगी। बड़ी इच्छा के साथ हलवे को चम्मच में भर लिया। तभी उनकी कलाई में मार पड़ी। मुड़कर देखा तो श्रीमतीजी गुस्से में भरकर खड़ी मिलीं।

“आपका भोग लगाने के लिए जो चीज रखी है, उसे अभी लेकर खाएँ तो इसका क्या मतलब है?” श्रीमती ने उन्हें डाँटा।

वांछित को पाने के लिए काम करते हुए आनंद का अनुभव किए बिना आनंद का अनुभव अंत में मिलेगा, यह सोचकर बैठे रहना जिंदा रहते हुए किसी चीज को खाने दिए बिना श्राद्ध के लिए रखने के समान है।

परिणाम के लिए इच्छा करना छोड़कर काम करने के लिए इच्छा कीजिए। आनंद की अभिव्यक्ति के रूप में इच्छा को पालकर गौर कीजिए, दुःख की कहीं गुंजाइश ही नहीं रहेगी।



वांछित मनोरथ पाइए

“बुद्ध ने कहा—इच्छा न करो। लेकिन आप तो कहते हैं—सारा कुछ पाने की इच्छा करो। यह विरोधाभास क्यों है?” अकसर लोग मुझसे पूछते हैं।

जो अपने जीवन-काल के अंदर समस्त मानव-जाति को ज्ञान प्रदान करने की इच्छा करते थे, क्या उन्होंने लोगों को इच्छा का त्याग करने को कहा होगा? कभी नहीं।

बड़ी-से-बड़ी इच्छाएँ पालिए। उन्हें पाने के लिए सौ फीसदी लगन के साथ कार्य कीजिए। ध्यानपूर्वक इच्छा का निर्वाह करेंगे तो वांछित मनोरथ पा सकते हैं।

इच्छा कभी दुःख नहीं है। उसके बारे में जो अज्ञान है, वही दुःख है। इस समझ के बिना यदि इच्छा को किसी सौदे या मिट्टी के साथ, किसी व्यक्ति के साथ, अध्यात्म या अधिकार के साथ संलग्न करेंगे तो संतोष नहीं मिलेगा। अतृप्ति ही हाथ आएगी।

इस अज्ञान से छुटकारा कैसे पाएँ?

नियमित योग-अभ्यास से संकुचित सीमाओं को तोड़ा जा सकता है, परम आनंद को चखा जा सकता है। यदि अपनी संपूर्ण ऊर्जा को जाग्रत कर दें तो फिर चाहे व्यापार हो या परिवार, अध्यात्म हो या कुछ भी हो, अंदर चोट खाए बिना पूर्ण रूप से उसमें खेल सकते हैं।

अपनी आंतरिक चेतना में यह अनुभव पाने तक आप केवल बाहर से एकत्रित क्षमताओं को लेकर ही खेल पाएँगे।

वांछित में से उतनी ही इच्छाएँ पूरी होंगी, जो आपकी क्षमता के अनुरूप प्राप्त हो सकती हैं। लेकिन यदि आप पूरी लगन के साथ काम करने लग जाएँगे तो वही आपको आनंद प्रदान करेगा। भले ही असफलता मिले, दुःख का अनुभव नहीं

क्या आप गारंटी दे सकते हैं कि

योग से लाभ-ही-लाभ मिलेगा?

पूर्ण रूप से। योग से मतलब सिर के बल खड़े होना या विभिन्न कोणों में अपने शरीर को टेढ़ा करना नहीं है। उसका नाम योगासन है। आसन योग का एक छोटा हिस्सा है, बस।

योग से तात्पर्य है—सब तरह के भेदभाव छोड़कर किसी के साथ एकाकार हो जाना।

चालीस हजार वर्ष पहले से योगाभ्यास का प्रशिक्षण दिलाए जाने के साक्ष्य हमारे पास हैं। अपनी अमोघ सफलता के आधार पर ही तो योग हजारों वर्षों से अपने लिए एक अलग स्थान बनाए हुए है।

पिछली सौ पीढ़ियों में सभ्यताओं, संस्कृतियों और भाषाओं में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन हुए हैं। लेकिन योग आज तक अपने को अक्षुण्ण बनाए हुए है। उसके मूल्य में लेशमात्र का भी हास नहीं हुआ है। विधिवत् किया जानेवाला योग विज्ञान ही है।

बिजली का बल्ब कैसे काम करता है, स्कूल में जाकर इसका ज्ञान पाए बिना भी यदि कोई व्यक्ति बटन दबाए तो भी बत्ती जल उठेगी।

योग के विषय में भी यही बात सही है। शिक्षा या अशिक्षा से उसका कोई वास्ता नहीं। योग किसी विशिष्ट धर्म या संस्कृति का गुलाम नहीं। वह किसी भी संप्रदाय से सरोकार नहीं रखता। योग में किसी भी देवता या ईश्वर के प्रति भक्ति या आस्था रखना आवश्यक नहीं है।

ईशा योग केंद्र में इसी तरह योग की शिक्षा दी जाती है। किसी के साथ अपने को संबद्ध न करने के कारण से ही योग विशेष महत्ता रखता है।

होगा। हजारों उपलब्धियाँ जो मिली हैं, उन्हें भूलकर किसी अप्राप्त वस्तु के लिए आत्महत्या करने का मूर्खतापूर्ण विचार आपके पास तक न फटकेगा।

भले ही सबको एक समान धन-दौलत, पद, अधिकार या सुविधाएँ मयस्सर न हों, लेकिन सबकी अंतश्चेतना में एक समान आनंद-प्राप्ति मिल सके तो उसे कौन रोक सकता है?

जिन लोगों को इच्छाओं का आधार समझ में नहीं आता, वे लोग ही ‘मुझे यह कारोबार

आप स्त्री हैं या पुरुष, काले हैं या गोरे, भारतीय हैं या विदेशी—योग इन बातों की कोई परवाह नहीं करता। आप चाहे जिस माहौल में हों, विधिवत् अभ्यास किया जानेवाला योग अपना काम सही ढंग से करता है।

विश्व के इतिहास में योग कभी हारा नहीं है। यह अनगिनत लोगों के काम आया है। मेरे भी काम आया है। आपकी भलाई करने से भी नहीं चूकेगा। योग यदि साथ में हो तो आप जो भी चाहें, इच्छानुसार बना सकते हैं।

अब भी हिचक किसलिए?

आइए, योग के अद्भुत द्वार पूर्ण रूप से खुले हैं आपके स्वागत में।

चाहिए’, ‘वह मकान चाहिए’, ‘यही लड़की मिले’—इस तरह की सीमित दायरे में समानेवाली छोटी-छोटी इच्छाएँ पालते हैं।

इस तरह किसी निश्चित वस्तु को चाहना छोड़कर सारा कुछ पाना चाहें तो संपूर्ण ध्यान के साथ उसकी तैयारी करनी होगी। यों यदि आप संपूर्ण जागरूकता के साथ जीने लग जाएँगे तो आप किसी भी वस्तु के साथ अपनत्व जोड़ना छोड़कर यही महसूस करेंगे कि मैं ही सबकुछ हूँ।



सद्गुरु

संस्थापक, ईशा फाउंडेशन

सद्गुरु—हमारे समय के एक दिव्यदर्शी, योगी, युगद्रष्टा, मानवतावादी और एक अलग किस्म के आध्यात्मिक गुरु हैं। अगाधता और प्रयोगवादिता के असाधारण संगम सद्गुरु के जीवन और कार्य ने यह सिद्ध कर दिया है कि योग किसी दूर-सुदूर अतीत की कोई गूढ़ विद्या नहीं है, बल्कि एक समकालीन विज्ञान है, जो हमारे समय में बेहद प्रासंगिक है। सद्गुरु के अन्वेषणात्मक, उत्प्रेरक, अंतर्दृष्टि-युक्त, विनोदपूर्ण, तर्कसंगत, उल्लास से ओत-प्रोत और बहुत गहरे में रूपांतरित करनेवाले कार्यक्रमों और व्याख्यानों ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति के श्रेष्ठ वक्ता और विचारक के रूप में प्रतिष्ठा दिलाई है।

एक वक्ता के रूप में भी अपनी प्रतिबद्धताओं को लेकर सद्गुरु विश्व में चारों तरफ भ्रमण करते हैं। संयुक्त राष्ट्र मिलेनियम शांति सम्मेलन, ऑस्ट्रेलियन लीडरशिप रिट्रीट और वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम जैसे प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय मंचों द्वारा उन्हें विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता है। जनवरी 2007 में सद्गुरु विश्व आर्थिक फोरम में चार पैनेल्स में शामिल थे तथा कूटनीति और आर्थिक विकास, शिक्षा और पर्यावरण जैसे विषयों पर अपने विचार प्रकट किए। वर्ष 2005-08 में भारतीय आर्थिक सम्मेलन और जनवरी 2006-09 में डावोस में सद्गुरु ने विश्व आर्थिक फोरम को संबोधित किया। इसके अतिरिक्त सद्गुरु धार्मिक व आध्यात्मिक नेताओं के विश्व परिषद् तथा नई मानवता गठबंधन के सदस्य भी हैं।

ईशा योग केंद्र

ईशा फाउंडेशन के संरक्षण तले संस्थापित ईशा योग केंद्र वेलिंगिरि पर्वत की तराई में स्थित है। विशाल वन्य जीवनवाले एक आरक्षित वन प्रदेश से घिरा 150 एकड़ की हरी-भरी भूमि में फैला यह योग केंद्र नीलगिरि जीव-मंडल का एक हिस्सा है।

आंतरिक विकास के लिए बनाया गया यह शक्तिशाली स्थान विश्व के हरेक कोने से लोगों को आकर्षित करता है तथा योग के चार मुख्य मार्ग—ज्ञान, कर्म, क्रिया एवं भक्ति प्रदान करने में अपने आप में एक अनूठा स्थान है और साथ ही गुरु-शिष्य परंपरा को पुनर्जीवित करता है।

ईशा योग केंद्र लोगों को स्वस्थ जीवन-शैली में बदलाव लाने, अपने संबंधों को सुधारने, उच्च स्तर पर आत्म-संतुष्टि को तलाशने और अपनी पूर्ण क्षमता को समझने के लिए एक अनुकूल वातावरण प्रदान करता है।

ईशा योग केंद्र तक कैसे पहुँचें

ईशा योग केंद्र कोयंबटूर के पश्चिमी भाग से 30 कि.मी. दूर वेलिंगिरि पहाड़ों की तलहटी में स्थित है, जो नीलगिरि जीव-मंडल का हिस्सा है। कोयंबटूर से ईशा योग केंद्र के लिए नियमित बस और टैक्सी सेवा भी उपलब्ध हैं।

दर्शनार्थियों को ईशा योग केंद्र पहुँचने के पहले ही आवास की उपलब्धता और आरक्षण के लिए केंद्र से संपर्क कर लेना चाहिए, क्योंकि आम तौर पर वे पूरी तरह आरक्षित होते हैं।

ध्यानलिंग यौगिक मंदिर

ध्यानलिंग ऊर्जा का एक बहुत सशक्त और अनूठा आकार है। यह योग विज्ञान का सार है। पिछले 2,000 वर्षों में अपने ढंग का यह पहला मंदिर है, जिसकी प्राण-प्रतिष्ठा पूरी हुई है। सद्गुरु ने तीन वर्षों तक चलनेवाली एक तीव्र प्रक्रिया के बाद ध्यानलिंग की प्रतिष्ठा की।

ध्यान के उद्देश्य से बनाया गया यह पवित्र स्थान किसी खास मत या संप्रदाय से संबंध नहीं रखता, न ही यहाँ पर किसी विधि-विधान, प्रार्थना या पूजा की जरूरत होती है।

इस मंदिर का निर्माण केवल पारंपरिक सामग्री से हुआ है अपने आप में यह वास्तुशिल्प का एक अद्भुत कार्य है। इसकी विशेषता है अनोखा ईंट का गुंबद, जो संसार में अपने प्रकार का सबसे बड़ा गुंबद है। वे लोग, जो कभी ध्यान के अनुभव से नहीं गुजरे हैं, वे भी ध्यानलिंग की स्पंदित ऊर्जा में ध्यान की गहरी अवस्था का अनुभव करते हैं। इस तेजोमय आकृति से निकलनेवाली चैतन्य ऊर्जा जीवन की मूल प्रकृति को उजागर करती है।

हर हफ्ते हजारों जिज्ञासु आंतरिक शांति और आनंद की खोज में इस अनोखे ध्यान केंद्र पर एकत्र होते हैं।

ध्यानलिंग यौगिक मंदिर प्रतिदिन सुबह 6 बजे से रात 8 बजे तक खुला रहता है।

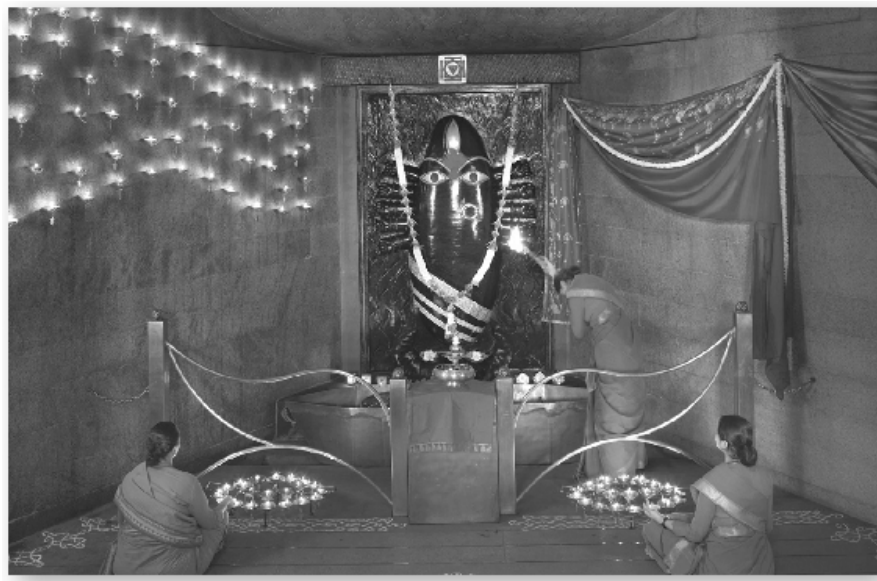
आदि योगी—योग के मूल दाता

पंद्रह हजार साल से भी पहले, जब किसी भी धर्म का अस्तित्व नहीं था, आदि योगी शिव ने—जो कि पहले योगी थे—अपने सात शिष्यों को योग विज्ञान में दीक्षित किया। इन सात शिष्यों को ‘सप्तर्षि’ के नाम से जाना जाता है। उन्होंने ऐसे 112 मार्ग बताए, जिनके माध्यम से इनसान अपनी सीमाओं से परे जाकर परम मुक्ति और कल्याण प्राप्त कर सकता है। आदि योगी ने व्यक्तिगत रूपांतरण के साधन दिए, क्योंकि व्यक्त का रूपांतरण ही दुनिया के रूपांतरण का एकमात्र उपाय है। उनका मूल संदेश है, ‘अंदर की ओर मुड़ना ही मनुष्यों के कल्याण और मुक्ति का एकमात्र साधन है।’

ईशा योग केंद्र में महाशिवरात्रि के शुभ अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने सद्गुरु की मौजूदगी में आदि योगी शिव के भव्य चेहरे का अनावरण किया। यह भव्य चेहरा 112 फीट ऊँचा है और उन 112 तरीकों का प्रतीक है, जिनके माध्यम से मानव मुक्ति पा सकता है। आदि योगी के पास ही योगेश्वर लिंग की स्थापना की गई है। इस लिंग की प्राण-प्रतिष्ठा सद्गुरु ने की है। इसमें मानव शरीर के पाँच मुख्य चक्रों की

अभिव्यक्ति है। योगेश्वर लिंग की उपस्थिति में आप आदि योगी को एक जीवंत अस्तित्व के रूप में अनुभव कर सकते हैं।

एक खुशहाल और शांतिमय विश्व बनाने के लिए लोगों का यह समझना जरूरी है कि सच्ची खुशहाली सिर्फ अपने अंदर ही पाई जा सकती है। उन्हें अपने अंदर झाँकने के लिए प्रेरित करना होगा और उन्हें आवश्यक साधनों से सशक्त करना होगा। आदि योगी ने रूपांतरण के जो साधन हजारों साल पहले मानवता को भेंट किए थे, वे आज न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि आवश्यक भी हैं। आदि योगी का 112 फीट ऊँचा चेहरा सभी के लिए एक शक्तिशाली अनुस्मारक और प्रेरणा है।



लिंग भैरवी

भरपुर खुशी और समृद्धि स्वरूपिणी लिंग भैरवी देवी यहाँ विराजमान हैं। लिंग भैरवी का एक बिल्कुल ही अलग, अनोखा रूप है। यह एक ज्वालामयी, शक्तिशाली और जीवंत देवी हैं। प्रचंड ऊर्जावाली यह देवी चैतन्य को पूर्ण स्त्री स्वरूप में प्रकट करती हैं—सूक्ष्म और मौलिक, शक्तिशाली और जीवंत, उल्लासपूर्ण और साथ-ही-साथ करुणामयी।

यह देवी बहुत ही सहज, मानवीय और कृपालु हैं तथा अपने मातृ-स्नेह में विराजमान हैं। जनवरी 2010 में सद्गुरु ने प्राण-प्रतिष्ठा द्वारा देवी की स्थापना की।

लिंग भैरवी देवी शारीरिक और मानसिक कुशलता बढ़ाती हैं तथा सांसारिक सुख-शांति देती हैं। भक्त अपनी-अपनी जरूरतों के अनुसार विभिन्न तरह के चढ़ावे चढ़ा सकते हैं, जैसे कि अभय-सूत्र, घी के दीये, मांगल्य बल-सूत्र, सर्प सेवा, दीया सेवा, केश अर्पणम् और अन्नदानम्। देवी की कृपा और मौजूदगी में कई तरह के विशेष मांगलिक संस्कार किए जाते हैं; जैसे—नामकरण संस्कार, सगाई, विवाह, षष्टि-पूर्ति यानी कि पति के साठवें जन्मदिन पर विवाह का जश्न मनाना इत्यादि।

हर पूर्णिमा के दिन, शाम में, देवी मंदिर में विशेष अभिशेकम् किया जाता है। बड़ी धूमधाम से देवी की शोभा यात्रा निकलती है, जिसमें ध्यानलिंग मंदिर के सामने आरती आयोजित की जाती है और उत्सव मनाया जाता है। देवी मंदिर में हर दिन तीन बार अभिशेकम् होता है, जिसमें विभिन्न तरह के ग्यारह चढ़ावे देवी को अर्पित किए जाते हैं। भक्त इसमें भाग लेकर इन रस्मों से लाभ उठा सकते हैं।

जहाँ ध्यानलिंग जीवन के उच्चतर आध्यात्मिक आयामों की ओर ले जाता है, वहीं लिंग भैरवी सांसारिक सुख-शांति और स्वास्थ्य जैसे भौतिक आयामों को बढ़ाती हैं।

ईशा योग

यौगिक विद्या के आभ्यन्तर से चुनकर आम इन्सान के लिए तैयार किए गए ये ईशा योग कार्यक्रम लोगों को अपने अंदरूनी विकास की ओर ठोस कदम उठाने में सक्षम बनाते हैं। सद्गुरु द्वारा डिजाइन किए गए ये कार्यक्रम एक सिद्ध योगी के मार्गदर्शन में आत्म-खोज के अनूठे अवसर प्रदान करते हैं।

ईशा में योग को उसकी पूर्ण गहराई एवं विस्तार में सिखाया जाता है और अनुभव के स्तर पर संचारित किया जाता है। ये कार्यक्रम स्वयं को एक उत्साहपूर्ण एवं परिपूर्ण जीवन-शैली में स्थापित करने की विधियाँ प्रदान करते हैं। यह भी बताया जाता है कि आध्यात्मिक जीवन का अर्थ सांसारिक, सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों से भागना नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत विकास और आत्मबोध के लिए उनको एक माध्यम बनाना है।

ईशा योग कार्यक्रम में सरल आसन, ध्यान और व्यक्ति की ऊर्जाओं को रूपांतरित करने के शक्तिशाली तरीके सिखाए जाते हैं। इसे करने के लिए किसी खास तरह की शारीरिक फुरती या योग के किसी पूर्व ज्ञान अथवा अनुभव की जरूरत नहीं है।

पंचभूत आराधना

भौतिक काया सहित सारी सृष्टि के आधार पाँच तत्त्व हैं। मानव प्रणाली के भीतर पाँच तत्त्वों को शुद्ध करके देह और मन के अंदर कुशलता पैदा की जा सकती है। यह प्रक्रिया देह को मनुष्य के लिए एक बाधा बनने के बजाय उसके परम कल्याण की ओर एक सोपान बनने में तैयार करती है। योग में एक संपूर्ण प्रणाली है, जिसे 'भूत शुद्धि' कहते हैं, जिसका अर्थ है—तत्त्वों का शुद्धीकरण करना। 'पंचभूत आराधना' के साथ सद्गुरु ने श्रद्धालुओं के लिए गहरे यौगिक विज्ञान से लाभ पाने के लिए एक अनोखा अवसर प्रकट किया है, अन्यथा इसके लिए गहन साधना करनी पड़ती है। इस साधना के इष्टदेव हैं भूतेश्वर, जो शिव का एक अन्य पहलू हैं। पंचभूत आराधना ध्यानलिंग की कृपा के खास आयाम को जिज्ञासुओं के लिए सहज उपलब्ध कराता है। हर चंद्र मास के चौदहवें दिन शिवरात्रि आती है तथा ध्यानलिंग मंदिर में शाम 5:40 बजे और 6:10 बजे के बीच पंचभूत आराधना का अनुभव करने का अवसर मिलता है।

लाभ : पंचभूत आराधना देह और मन को स्थायी करके विशेष रूप से उन लोगों के लिए लाभदायक है, जो शारीरिक रोगों, दुर्बल शरीर, मनोवैज्ञानिक अस्थिरता, निद्रा और निरंतर भय की भावना से दुःखी हैं। यह आराधना मनुष्य की कामना-पूर्ति में भी सहायक है।

प्रारंभिक कार्यक्रम

ईशा योग कार्यक्रम : परम कुशलता

यह तीन से सात दिनों का एक गहन कार्यक्रम है, जो योग के आंतरिक विज्ञान के प्रयोग द्वारा स्वयं को रूपांतरित करने के साधन प्रदान करता है। शरीर की प्रणालियों को शुद्ध करने; स्वास्थ्य, सफलता और संतुलन लाने के लिए तथा आंतरिक कुशलता के लिए ध्यान व शांभवि महामुद्रा में दीक्षित किया जाता है। शांभवि महामुद्रा एक बहुत सशक्त तथा अति प्राचीन प्रणाली है।

हठ योग

इसमें आसन और सक्रिय योग मुद्राएँ सिखाई जाती हैं। इससे साधकों को ध्यान की उच्च अवस्थाओं को अनुभव करने के लिए तैयार किया जाता है।

बच्चों के लिए योग

(7-14 साल के बच्चों के लिए) यह पाँच से आठ दिनों का एक कार्यक्रम है, जिसे बच्चों की एकाग्रता और स्मरण-शक्ति के विकास के लिए बनाया गया है। यह उनकी ऊर्जा को सही दिशा प्रदान करता है तथा उन्हें एक उत्साह भरे, प्रेममय एवं आनंदपूर्ण प्राणी में रूपांतरित करता है।

ईशा योग : उच्च कार्यक्रम

शून्य ध्यान

जो लोग गहरे ध्यान में पाँव करना चाहते हैं, उनके लिए शून्य ध्यान एक विरुद्ध और विकसित ध्यान की प्रक्रिया है, जिसे जिज्ञासुओं को अर्पित किया जाता है। सद्गुरु द्वारा तैयार की गई इस प्रक्रिया द्वारा सत्य को केवल सीखा ही नहीं, बल्कि अनुभव किया जाता है।

भाव-स्पंदन : परमानंद में चैतन्य के साथ

यह चार दिन और तीन रात का आवासिक कार्यक्रम है। सद्गुरु द्वारा डिजाइन यह ध्यान कार्यक्रम लोगों को एक ऐसा अवसर प्रदान करता है, जहाँ वे शरीर और मन की सीमाओं से परे चेतना के उच्च स्तरों को अनुभव करते हैं। भाव-स्पंदन कार्यक्रम असीम प्रेम तथा आनंद अनुभव करने का एक अवसर प्रदान करता है।

सम्यमा : आत्म-ज्ञानियों की दुनिया में कदम

सम्यमा आठ दिन का एक अति गहन आवासीय कार्यक्रम है, जो सद्गुरु द्वारा ईशा योग केंद्र में संचालित किया जाता है। सम्यमा ध्यान ऐसे अनुभव प्रदान करता है, जिससे कर्म-बंधन से छुटकारा मिलता है।

ईशा आउटरीच : ग्रामीण कायाकल्प कार्यक्रम

सद्गुरु की दूरदर्शिता का एक अभियान यह ग्रामीण नवजीवन कार्यक्रम एक दीर्घकालीन योजना है। मानवीय उत्साह को जाग्रत और पुनः स्थापित करने तथा पिछड़े ग्रामीण जन-समुदाय में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व आध्यात्मिक रूप से नवजीवन का संचार करने की दिशा में यह एक अनूठा तथा स्पष्ट रूप से परिभाषित मानव-हितकारी प्रयास है। ग्रामीण नवजीवन कार्यक्रम के अंतर्गत समुदाय-आधारित स्थायी विकास के मॉडल को कार्यान्वित किया जाता है तथा इसके साथ-साथ देशी संस्कृति और ज्ञान को पुनः स्थापित किया जा रहा है। गाँवों में निःशुल्क प्राथमिक और निरोधक स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान की जाती है।

प्रोजेक्ट ग्रीन हैंड्स

ईशा फाउंडेशन का यह एक पर्यावरण संबंधी उपक्रम है। यह पर्यावरण-क्षरण को रोकने तथा पर्यावरण को स्वच्छ बनाने की दिशा में कार्य करता है, ताकि इस ग्रह पर एक स्थायी जीवन बना रहे। इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य तमिलनाडु के विभिन्न हिस्सों में 11 करोड़ 40 लाख पेड़ लगाना है—राज्य के वर्तमान वृक्ष-आवरण क्षेत्रफल को अतिरिक्त 10 प्रतिशत बढ़ाना है। इसे वर्ष 2008 में इंदिरा गांधी पर्यावरण पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

ईशा विद्या

ईशा विद्या का उद्देश्य ग्रामीण बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराना है। शिक्षा जीवन-सशक्तीकरण के एक अवसर के रूप में प्रदान की जाती है। आनेवाले कुछ वर्षों में ईशा विद्या द्वारा तमिलनाडु के प्रत्येक ताल्लुक में एक-एक स्कूल खोला जाएगा। इस तरह से कुल 206 ताल्लुक में 206 स्कूल खोले जाएँगे। यह ग्रामीण भारत के शैक्षिक परिदृश्य में एक बड़ा परिवर्तन लाएगा।

ईशा होम स्कूल

वेलिंगिरि पर्वत की तराई के शांतिपूर्ण परिवेश में स्थित ईशा होम स्कूल हरेक बच्चे को आंतरिक रूप से पुष्पित होने के लिए एक प्रेरणाप्रद वातावरण प्रदान करता है। यह होम स्कूल शैक्षिक गुणवत्ता के उच्च मापदंडों को बनाए रखते हुए हरेक विद्यार्थी को अपनी पूर्ण क्षमता से विकसित होने में उसकी सहायता करता है तथा उसकी सहज और छिपी हुई प्रतिभा को उजागर करता है।

ईशा क्राफ्ट और ईशा रेमेंट

ईशा क्राफ्ट और ईशा रेमेंट अपने उत्पाद—उपहार सामग्री, जूट के सामान, पेंटिंग, धातु-शिल्प, पत्थर-शिल्पकृति, हस्तशिल्प तथा इसके साथ-साथ डिजाइनर वस्त्र, जिसमें नियमित व अनियमित पहनावे और योग-पोशाक भी शामिल हैं—के माध्यम से लोगों के जीवन में ईशा-शैली और कारीगरी लाता है। इन उद्यमों से अर्जित किए गए सभी मुनाफे भारत के ग्रामीण जन-समुदाय की सेवा और विकास के लिए ईशा फाउंडेशन द्वारा शुरू किए गए सामाजिक आउटरीच कार्यक्रमों में खर्च किए जाते हैं।

□□□